www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 17 ■ 1-15 जुलाई, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

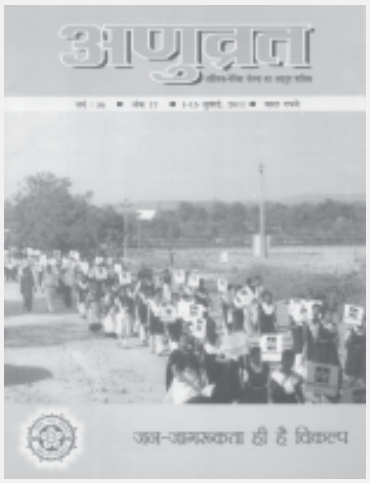

- विज्ञान और दर्शन की पूरकता का विकास — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 3
- छोटे से भी सावधान रहो — *आचार्य महाश्रमण* — 5
- संवैधानिक मर्यादाएं — *रामस्वरूप रावतसरे* — 7
- क्या सृष्टि का विनाश निकट है? — *प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा* — 8
- राष्ट्र की पहचान भ्रष्टाचार करो? — *सुरेश आनन्द* — 11
- जन-जागरूकता ही है विकल्प — *अरविंद केजरीवाल* — 12
- और कोई रास्ता नहीं बचा था — *डॉ. मनमोहन सिंह* — 14
- सवाल है काले धन को खत्म करने का — *गिरिराज किशोर* — 15
- सबके लिए सबक — *अणुव्रत डेस्क* — 16
- पानी की बूंद मांगेगी पैसा — नरेन्द्र देवांगन — 17
- हमारी विधायिका और कार्यपालिका — *आशीष वशिष्ठ* — 18
- मिलावट विरोधी अभियान — *मुनि राकेशकुमार* — 20
- नैतिक अवमूल्यन की ओर भारत — *सुषमा जैन* — 22
- कर्मयोगी डालचंद चिंडालिया — *प्रो. डॉ. छगनलाल शास्त्री* — 24
- अनिवार्य हो धूम्रपान शब्द का त्याग — *सीताराम गुप्ता* — 27
- मीडिया में भी भ्रष्टाचार — *कुसुम जैन* — 28
- जनजागरण एवं पर्यावरण संरक्षण — *पूनम कुमारी* — 30
- वायु विकार और प्रेक्षा चिकित्सा :1: — *मुनि किशनलाल* — 32

■ स्तंभ

- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 10
- कविता — 25
- झांकी है हिन्दुस्तान की — 31
- अणुव्रत आंदोलन — 34-39
- कृति — 40

www.terapanthinfo.com

संपादकीय

फिर राजनीति की शिकार हुई जनता

4 जून, 2011 की अर्द्धरात्रि को दिल्ली स्थित रामलीला मैदान में नींद में सोये सत्याग्रहियों के साथ स्वतंत्र भारत की पुलिस ने बर्बर कार्यवाही करते हुए जिस प्रकार से लाठियाँ बरसाई और आँसू गैस के गोले दागे उससे न सिर्फ जनतंत्र शर्मसार हुआ वरन् संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों का भी हनन हुआ। बाबा रामदेव एवं उनके समर्थकों पर पुलिस कार्यवाही की जरूरत क्यों पड़ी जबकि सत्याग्रह पूरी तरह से अहिंसात्मक था? इस प्रश्न का उत्तर आज भी नहीं मिल पा रहा है।

शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज बुलंद करने और भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्यवाही करने की दि शा में कानून बनाने के लिए बाबा रामदेव के नेतृत्व में हजारों व्यक्तियों ने रामलीला मैदान में अपना डेरा जमाया था। सत्याग्रह प्रारंभ होने के पूर्व ही सरकार और बाबा के बीच लम्बी बातचीत में सरकार ने अधिकतम मांगें स्वीकार कर ली थीं। फिर क्या कारण बने कि रामदेव सत्याग्रह पर बैठे और सरकार ने रात में गुपचुप दमनात्मक कार्यवाही की। इस नाटकीय घटनाक्रम में कौन जीता और कौन हारा यह प्रश्न तो अनुत्तरित है लेकिन जनता फिर से राजनीति का शिकार हो गई, यह सच्चाई है। जनतंत्र के लिए आवश्यक है कि 'जन' जागरूक हो, सशक्त हो, लेकिन सरकार 'जन' को मजबूत होते नहीं देखना चाहती थी तभी तो शांतिपूर्ण आंदोलन को कुचलने का असंवैधानिक कृत्य हुआ। यहीं पर सरकार चूक कर गई।

सरकार के साथ-साथ बाबा भी चूक गये। सत्याग्रह प्रारंभ होने से पहले ही सहमति बन गई तो फिर सत्याग्रह पर क्यों बैठे, बढ़-चढ़ कर मुखर क्यों हुए, पुलिस कार्यवाही हुई तो सत्याग्रह स्थल से चुपचाप निकलने की कोशिश क्यों की? इन प्रश्नों के घेरे में बाबा का सत्याग्रह कैद है!

केन्द्र सरकार ने बाबा रामदेव की करीब-करीब सभी मांगे कुछ संशोधनों के साथ मान ली थी। लेकिन पूरा करने की समय सीमा नहीं बताई। सरकार समय सीमा निर्धारित कर देती तो आंदोलन वापिस हो जाता। समय सीमा निर्धारित करने के बजाय सरकार ने यकायक पुलिस कार्यवाही कर आंदोलन को अंग्रेजी शासन की तर्ज पर कुचलने की कार्यवाही क्यों की? यह भी अहम् प्रश्न है जिसका उत्तर आना अवशेष है।

भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन व्यक्ति हित में नहीं वरन् राष्ट्रहित में है। इसलिए जनता और शासन के बीच संवाद बना रहना चाहिये। यदि संवादहीनता का दौर जारी रहा तो निरंकुशता पनपेगी और लोकतंत्र के अर्थ ही तार-तार हो जायेंगे। अन्ना हजारे और बाबा रामदेव ने भ्रष्टाचार के विरोध में जन भावनाओं को आधार दिया है। अतः जनता भी जागे और सरकार भी चेते। सरकार और जनता साथ-साथ चले, दोनों की पारदर्शिता रहे, दोनों एक दूसरे को विश्वास में लें। स्वस्थ जनतंत्र की ये आधारशिलाएँ जब टूटती है तब दूरियाँ बढ़ती हैं और सरकार आक्रामक होती है। आक्रामक शासक के समक्ष जनता मौन हो जाती है। लेकिन जनता का मौन राजा के लिए चेतावनी होता है। **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा- ''निराशा ने जब भी घेरा तो बार बार इतिहास साक्षी हुआ कि प्यार और सत्य की सदा विजय हुई। इस धरती पर बहुत से हत्यारे और सितमगर हुए और कभी-कभार ऐसा लगा कि विजय उन्हें ही मिलेगी पर आखिर यही हुआ कि वे मिट गये।''**

सत्याग्रह का मूल है 'सत्य'। असत्य सत्याग्रह का भाग नहीं होता। सत्य को सामने रखकर चलेंगे तभी लक्ष्य प्राप्त होंगे। अभी तो बाबा और सरकार दोनों ही हारे है। हम समाज एवं राष्ट्रीय हित में ईमानदारी और दृढ़ता के साथ पुनः उठें भ्रष्टाचार के विरोध में।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

विज्ञान और दर्शन की पूरकता का विकास

आचार्य महाप्रज्ञ

भारतीय मनीषियों ने पदार्थवादी दृष्टिकोण को ससीम रखने के लिए आध्यात्मिक चेतना का विकास किया। जैन दर्शन में तत्त्वविद्या और अध्यात्म--दोनों परस्पर संश्लिष्ट हैं। तत्त्वविद्या से विश्व स्थिति का यथार्थ बोध होता है। उस बोध की निष्पत्ति भौतिक विकास और आध्यात्मिक विकास--दोनों दिशाओं में हो सकती है। अनेकान्त दृष्टि के अनुसार भौतिक विकास को सर्वथा नकारा नहीं गया। उसे जीवनयात्रा के पूरक तत्त्व के रूप में स्वीकृति दी गई। फलस्वरूप आध्यात्मिक विकास जीवन का लक्ष्य बन गया। सभी आत्मवादी दर्शनों ने अध्यात्म को प्रतिष्ठित किया, यह भारतीय चिंतन की एक अमूल्य धरोहर बन गया।

दर्शन को केवल तत्त्वविद्या तक सीमित करना उचित नहीं है। विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि दर्शन के वटवृक्ष की मात्र शाखाएं हैं। उनकी अपनी कोई जड़ नहीं है। दार्शनिक दृष्टि समाजविज्ञान और अर्थशास्त्र के लिए जितनी जरूरी है, उतनी ही विज्ञान के लिए जरूरी है। दर्शन और विज्ञान को सर्वथा पृथक करना दर्शन और विज्ञान दोनों के विकास में एक अवरोध है।

जैन दर्शन ने सृष्टि और सृष्टि-संचालन के लिए किसी ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार नहीं किया है। इसलिए उसने सार्वभौम और सामयिक नियमों की खोज की है। उसी के आधार पर विश्व-व्यवस्था की व्याख्या की है।

चेतन और अचेतन में सर्वथा भिन्नता का सिद्धांत अनेकान्त के अनुसार समीचीन नहीं है। भौतिक विज्ञान ने विश्व व्यवस्था के अनेक नियमों की खोज की है और प्राचीनकाल में दर्शनों ने भी की। नियमों की खोज सत्य की खोज है इसलिए हम दर्शन और विज्ञान के बीच कोई लक्ष्मण रेखा नहीं खींच सकते। दार्शनिक जगत ने चेतन और विज्ञान अचेतन--दोनों के नियमों की खोज की। विज्ञान जगत की खोज का अब तक मुख्य विषय है--अचेतन द्रव्य (पुद्गल द्रव्य) के नियमों की खोज।

योग और अध्यात्म दर्शन की सीमा से परे नहीं है। ये दोनों भारतीय दर्शन के मौलिक आधार रहे हैं। नियमों की खोज के लिए स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना नितान्त आवश्यक है। योगी और अध्यात्म-साधक ध्यान और समाधि के द्वारा अतीन्द्रिय चेतना का विकास कर लेते थे। उस अतीन्द्रिय चेतना के आधार पर सूक्ष्म सत्यों की खोज की जाती थी। वैज्ञानिक सूक्ष्म नियमों की खोज सूक्ष्म यंत्रों के माध्यम से करते हैं। आखिर प्रस्थान दोनों का सूक्ष्म की ओर है। दार्शनिक जगत् के पास परीक्षण के लिए कोई प्रयोगशाला नहीं है। वैज्ञानिक को उसकी सुविधा प्राप्त है। किन्तु इस प्रसंग में हमें स्वीकार करना चाहिए--योग और अध्यात्म के साधकों ने इन्द्रियपटुता और अतीन्द्रिय चेतना का इतना विकास किया था कि उन्हें यांत्रिक प्रयोगशाला की अपेक्षा ही नहीं रही।

'णाणस्स सारमायारो'-ज्ञान का सार है--आचरण। निर्युक्तिकार का यह अभिमत दर्शन और आचार की एकता का सेतु है। 'मूल्यपरक विज्ञान' इसमें संगति खोजना बहुत कठिन है। दर्शन के आधार पर आचार-संहिता का निर्माण हुआ है, किन्तु विज्ञान के आधार पर कोई संहिता नहीं बनी। वैज्ञानिक नियमों की खोज तक सीमित हो गए हैं। उसका सार आचार है, यह सचाई उन्हें अभी मान्य नहीं है। यदि यह सच्चाई मान्य होती तो संहारक अस्त्रों का निर्माण कभी नहीं होता, प्रकृति का असीम दोहन भी नहीं होता, गरीबी को बढ़ाने वाली सुविधावादी सामग्री का केवल व्यावसायिक हित के लिए निर्माण भी नहीं किया जाता।

योग अथवा अध्यात्म का प्रमुख आधार है--अहिंसा। वह आधार भी है और आचरण भी। पर्यावरण की समस्या इसलिए है कि समाज अहिंसा की व्यापकता का अनुभव नहीं कर रहा है। किसी प्राणी को मत मारो, यह अहिंसा की सीमा नहीं है। शस्त्र का निर्माण मत करो, यह भी उसकी सीमा नहीं हैं। अहिंसा का व्यपक स्वरूप है--संयम की चेतना का निर्माण। हम पर्यावरण को विशुद्ध करने और निःशस्त्रीकरण का प्रयत्न करते हैं, किन्तु चेतना के रूपान्तरण का प्रयत्न नहीं करते। क्या चेतन का रूपान्तरण किये बिना प्रकृति का अति दोहन, पर्यावरण का प्रदूषण और शस्त्रों का निर्माण रोका जा सकता है?

उपभोग की चेतना का रूपान्तरण किये बिना प्रकृति के अतिदोहन को रोका नहीं जा सकता।

सुविधावादी और विकास के असंतुलित दृष्टिकोण को बदले बिना, जीवन-निर्वाह के लिए अपोषक उपभोग सामग्री के उत्पादन की सीमा करने वाली चेतना का विकास किये बिना पर्यावरण के प्रदूषण पर रोक लगाना संभव नहीं है।

जैन दर्शन के अनुसार भावधारा शस्त्र-निर्माण का मूल आधार है। भाव का केन्द्र है मस्तिष्क। शस्त्र पहले मस्तिष्क

www.terapanthinfo.com

में पैदा होता है, फिर वह कारखाने में। निःशस्त्रीकरण के लिए सबसे पहले जरूरी है भावतंत्र का परिष्कार और मस्तिष्कीय प्रशिक्षण। इसके बिना निःशस्त्रीकरण की चर्चा बहुत सार्थक नहीं होगी।

वैज्ञानिक चिंतन और आविष्कार के बाद विकास की अवधारणा इतनी जटिल हो गई है कि पीछे लौटना भी संभव नहीं और पीछे लौटे बिना सभ्यता पर छाये हुए संकट के बादलों का बिखरना भी संभव नहीं है। तकनीकी विकास पर भी विवेकपूर्वक अंकुश लगाना जरूरी है। क्या वह तकनीकी विकास उपादेय है जो मानव की अस्मिता पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है? हमें मुड़कर देखना होगा कि सीमातीत तकनीकी विकास के बाद मनुष्य ने क्या खोया और क्या पाया? मानसिक शांति, तनावमुक्ति, मनःस्थिति, स्वास्थ्य पर उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है? इसे उपेक्षित कर तकनीकी विकास को एकाधिकार प्रभुत्व नहीं दिया जा सकता।

विश्व शांति, एक मानव परिवार, निःशस्त्रीकरण-इन शब्दों का बार-बार पुनरुच्चारण होता रहता है। यदि शब्दोच्चार मात्र से विश्व शांति स्थापित होती तो कभी की हो जाती। इन शब्दों की पुनरावृत्ति कोई बुरी बात नहीं है, बहुत अच्छी है, किन्तु इसके साथ विश्वशांति के बाधक तत्त्वों पर गंभीर चिंतन जरूरी है। उसके बाधक तत्त्वों की एक संक्षिप्त तालिका यह हो सकती है--

- साम्राज्यवादी मनोवृत्ति
- बाजार पर प्रभुत्व
- जाति का अहंकार
- साम्प्रदायिक कट्टरता
- उपभोग सामग्री की विषमतापूर्ण अवस्था और व्यवस्था

इससे भी अधिक मूल कारण है व्यक्ति का अपने संवेगों पर नियंत्रण न होना। संवेग संतुलन के व्यापक प्रचार और प्रयोग पर गहन विचार किये बिना वैज्ञानिक युग में उपजी हुई समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता।

परिष्कार के लिए शिक्षा की प्रणाली पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं, पूरे विश्व में। इस विषय में प्राकृत साहित्य का एक सुन्दर निर्देश है--शिक्षा दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होनी चाहिए--

1. आजीविका की समस्या को सुलझाने के लिए।
2. सद्गति के लिए।

सद्गति का अर्थ है जीवन मूल्यों अथवा चारित्रिक मूल्यों का विकास

इसके अभाव में समाज में सद्गति की अनुभूति नहीं होती, स्वस्थ समाज की रचना नहीं होती।

जैन चिंतन में शिक्षा के दो प्रकार बतलाए गए हैं--

1. ग्रहण शिक्षा
2. आसेवन शिक्षा

गुरु अथवा शिक्षक की वाणी अथवा पुस्तक से प्राप्त होने वाला ज्ञान ग्रहण शिक्षा है। आसेवन शिक्षा प्रायोगिक शिक्षा है। विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में प्रायोगिक शिक्षा चालू है। किन्तु मानवीय चेतना को बदलने वाली प्रायोगिक शिक्षा विज्ञान के क्षेत्र में चालू नहीं है। चारित्रिक मूल्यों के विकास के लिए जरूरी है मूल्य-चेतना को नियंत्रित करने वाली प्रायोगिक शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अणुव्रत-प्रवर्त्तक आचार्य तुलसी के नेतृत्व में जीवन विज्ञान की प्रणाली विकसित की गई। चेतना का रूपान्तरण करने के लिए आसन, प्राणायाम, ध्यान, भावना और अनुप्रेक्षा-इनका प्रायोगिक अभ्यास नितान्त अपेक्षित है। यह विज्ञान के छात्र के लिए भी उतना ही आवश्यक है, जितना कला-संकाय के छात्र के लिए।

पदार्थभिमुखता भौतिकवाद का एक प्रमुख लक्षण है। वर्तमान युग में उसका स्थान तकनीकी अभिमुखता ने ले लिया है। यदि उसकी सीमाएं निर्धारित न की जाए तो सांस्कृतिक मूल्यों को बचाना संभव नहीं। उन मूल्यों की सुरक्षा के लिए दर्शन की सीमाओं का विस्तार करना होगा। आज का दर्शनिक चिंतन युग की समस्याओं को सुलझाने का कोई नया चिंतन प्रस्तुत नहीं कर रहा है, इसलिए विज्ञान का एकाधिकार प्रभुत्व स्थापित हो रहा है।

प्रत्येक द्रव्य के अनंत पर्याय हैं। हम उनमें से कुछ पर्यायों को जानते हैं। इसलिए द्रव्य ज्ञेय कम और अज्ञेय अधिक है। अज्ञात पर्यायों को ज्ञान बनाने के लिए निरंतर खोज की जरूरत है। दर्शन में एक प्रकार का ठहराव आ गया है। वह अपने पूर्वज दार्शनिकों द्वारा खोजे गए सत्यांशों (नए दृष्टि) को परिपूर्ण सत्य मानकर संतोष की सांस ले रहा है। जीव विज्ञान, कर्मवाद, भाग्यवाद, पुरुषार्थवाद आदि की मान्यताओं पर विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में विचार करना बहुत आवश्यक है। विज्ञान जगत में जो सूक्ष्म नियमों की खोज हुई है, उनका दार्शनिक दृष्टि से अंकन करना बहुत जरूरी है।

गरीबी, शोषण, अपराध, बीमारी, हत्या, आत्महत्या, भ्रूणहत्या, आतंकवादी मनोवृत्ति-क्या ये दर्शन के चिंतन-बिन्दु नहीं हैं? हम विज्ञान की उस गति का समर्थन नहीं कर सकते, जिसके द्वारा खोजे हुए नियम विश्व के सामने 'एक संकट पैदा किये हुए हैं। हम दर्शन के द्वारा खोजे गए उन नियमों को विस्तार देने का प्रयत्न करें, जो विश्व को मैत्री के सूत्र में बांध सकें।

विज्ञान की सीमा वस्तु (ऑब्जेक्ट) है। दर्शन चेतना (सब्जेक्ट) प्रधान है। विज्ञान को चेतना में घटित घटना मान्य नहीं है और दर्शन का पदार्थ में घटित होने वाली घटनाओं से संबंध नहीं है। इसलिए इन दोनों की पारस्परिक पूरकता का विकास होना चाहिए। इससे वैश्विक समस्याओं के समाधान में बहुत बड़ा योग मिल सकता है।

www.terapanthinfo.com

कषाय को भी छोटा या कम नहीं समझना चाहिए। कषाय का सूक्ष्मांश भी राग-द्वेष की परम्परा को चलाने वाला होता है। बात-बात में किसी के साथ अप्रिय व्यवहार हो सकता है। कभी-कभी एक बार का अप्रिय व्यवहार भी दिल को ठेस पहुंचा सकता है और वर्षों के बने हुए सम्बन्धों को क्षण-भर में समाप्त कर देता है।

छोटे से भी सावधान रहो

आचार्य महाश्रमण

जीवन में शक्ति का मूल्य होता है। आकार छोटा है या बड़ा, यह गौण बात है। सार कितना है, यह मूल बात है। आदमी शरीर से हृष्ट-पुष्ट होता है, मोटा दिखाई देता है, परन्तु शक्ति ज्यादा नहीं है। न ज्यादा तेज चल सकता है, न तेज दौड़ सकता है और न अतिश्रम कर सकता है, ऐसे बड़े अथवा मोटे आदमी का ज्यादा मूल्य नही होता। दुबला-पतला दिखाई देने वाला व्यक्ति भी अच्छा श्रम कर सकता है, फुर्ती के साथ काम कर सकता है, शक्ति का अच्छा उपयोग कर सकता है। ऐसे छोटे या दुबले आदमी का भी मूल्य होता है। आकार का महत्त्व कहीं-कहीं हो सकता है। ज्यादा महत्त्व प्रकार का हो सकता है, सार का होता है। किसी को छोटा मान कर यदि उपेक्षा की जाए तो कभी-कभी भयंकर स्थिति उत्पन्न हो सकती है। प्राकृत साहित्य में कहा गया--

ऋण, व्रण, अग्नि और कषाय--इन चारों को थोड़ा समझकर उपेक्षित नही करना चाहिए। ये थोड़े भी बहुत होते हैं। पहली बात है--'अणथोव'--अर्थात् ऋण को कभी थोड़ा नहीं मानना चाहिए।आज थोड़ा है, किन्तु ब्याज बढ़ते-बढ़ते भारी भरकम बन सकता है व्यक्ति को जल्दी से जल्दी ऋणमुक्त बनने का प्रयास करना चाहिए। ऋण पैसों का भी हो सकता है और कर्मो का भी हो सकता है। कर्मों का कर्जा तो पैसों के कर्जे से भी भारी होता है। अगर जीवन में कोई पाप हो गया, दोष लग गया तो उसका जल्दी-से-जल्दी शोधन हो जाए, प्रायश्चित्त किया जाए। प्रायश्चित्त का प्रथम सोपन है--आलोचना। आलोचना के लिए आवश्यक ऋजुता। यदि ऋजुता नहीं है तो आलोचना सम्यूक प्रकार से नहीं हो सकती। गुरुदेव तुलसी बहुधा फरमाया करते थे कि किसी से गलती हो गई हो तो होशियारी से नहीं, भोले बालक की तरह गुरु के सामने आलोचना करनी चाहिए। होशियारी का क्षेत्र अपना-अपना अलग हो सकता है। आदमी में यह विवेक होना चाहिए कि कहां होशियारी काम में लेना चाहिए और कहां ऋजुता का प्रयोग करना चाहिए। जहाँ आलोचना का प्रसंग हो, वहाँ ऋजुतापूर्ण होशियारी हो सकती है। मात्र चतुराई नुकसानदेह भी हो सकती है। व्यक्ति सरलता के साथ आलोचना करे और जो प्रायश्चित्त गुरु से प्राप्त हो, उसे सहर्ष स्वीकार करें। इसके साथ एक और **संकल्प जाग जाए कि में दोषों की पुनरावृत्ति नहीं करूंगा। अतीत में मैंने जिस दोष का सेवन किया, उसे दोबारा आचरित नहीं करूंगा। पुनः गलती न करने का संकल्प जाग जाए तो प्रायश्चित्त अधिक सार्थक सिद्ध हो सकता है।** अतः आदमी ऋण को थोड़ा न माने। वह थोड़ा भी बहुत होता है। ऋण चाहे धन का, आदमी ऋणमुक्त रहने का, ऋण से उऋण बनाने का प्रयास करें। दूसरी बात है--'वणथोव'--अर्थात् व्यक्ति व्रण को छोटा न माने। छोटा-सा व्रण भी भयंकर रूप लेकर घातक सिद्ध हो सकता है। व्रण दो प्रकार के हो सकते हैं--अन्तःव्रण और बाह्यव्रण। अन्तःव्रण में अहंकार का व्रण हो सकता है, माया का भी व्रण हो सकता है, क्रोध का भी व्रण हो सकता है। इन व्रणों का शोधन होना चाहिए। यदि आदमी के भीतर अहंकार का भाव अधिक है तो मृदुता और नम्रता के द्वारा उसे कम किया जा सकता है। यदि क्रोध और लोभ का भाव अधिक है तो क्षमा और संतोष के द्वारा उसे कम किया जा सकता है। यदि व्यक्ति के पास बहुत-कुछ है, ज्ञान है, कला-नैपण्य है, अन्य अनेक विशेषताएं हैं, किन्तु साथ में अहंकार आदि भी ज्यादा हैं तो जीवन में एक धब्बा सा लग जाता है, बहुत बड़ी खामी आ जाती है। इन छोट-छोट व्रणों को दूर कर व्यक्ति बड़ा बन सकता है। आदमी में व्रणों को दूर करने का दृढ़ संकल्प हो तो नम्रता, ऋजुता, सन्तोष और क्षमा के

www.terapanthinfo.com

द्वारा अन्तःव्रणों का शोधन किया जा सकता है और उपचार आदि के द्वारा बाह्यव्रण को भी दूर किया जा सकता है।

तीसरी बात बताई गई है--'अग्गिथोव' अर्थात् अग्नि को थोड़ा अथवा छोटा नहीं समझना चाहिए। एक चिंगारी भी भयंकर आग का रूप धारण कर सकती है। वह हवा के साथ मिल कर समूचे जंगल को जला सकती है।

गाँव के किनारे एक बाबा अपनी झोंपड़ी में बीड़ी पी रहा था। कुछ ही देर में झोंपड़ी जल कर राख हो गई। आस-पास के जंगल को जलाती हुई अग्नि ने भयंकर रूप धारण कर लिया। गाँव के लोगों को जब पता चला तो वे शीघ्र वहाँ आए और आग बुझाने का प्रयास करने लगे। उन्होंने देखा, एक बाबा इधर से उधर बार-बार घूम रहा है। लोगों ने पूछा--बाबा! आपने यहाँ कुछ गिराया था क्या? बाबा ने कहा--मैंने तो बीड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा गिराया था। एक छोटे से टुकड़े ने कितनी विशाल तृण-राशि को भस्म कर डाला।

इन तीनों की भाँति कषाय को भी छोटा या कम नहीं समझना चाहिए। कषाय का सूक्ष्मांश भी राग-द्वेष की परम्परा को चलाने वाला होता है। बात-बात में किसी के साथ अप्रिय व्यवहार हो सकता है। कभी-कभी एक बार का अप्रिय व्यवहार भी दिल को ठेस पहुंचा सकता है और वर्षों के बने हुए सम्बन्धों को क्षण-भर में समाप्त कर देता है।

महाभारत का युद्ध इस बात का साक्षी है। पांड़वों ने बहुत सुन्दर राजप्रसाद का निर्माण करवाया और अपने भाई कौरवों को आमंत्रित किया। प्रासाद का फर्श दृष्टिभ्रम पैदा करने वाला था। कौरवों ने जैसे ही प्रासाद में प्रवेश किया तो उन्हें लगा कि यहाँ तो पानी है। उन्होंने अपने कपड़े ऊपर कर लिये ताकी पानी में भीग न जाएँ। किन्तु वह तो दृष्टिभ्रम था। वहाँ पानी था ही नहीं। कुछ और आगे बढ़ने पर चौक पानी से भरा हुआ था, किन्तु वहाँ पानी नजर ही नही आ रहा था। इस बार कौरवों के कपड़े भीग गए। प्रासाद में ऊपर अवस्थित द्रौपदी ने जब ये दोनों दृश्य देखे तो उसे हँसी आ गई और कहा--अन्धे के पुत्र अन्धे ही होते हैं। द्रौपदी की इस व्यंग्यात्मक वाणी ने दुर्योधन के मर्म पर घाव किया जो उसको आजन्म अपमान एवं प्रतिशोध की अग्नि में जलाता रहा।

क्रोध, लोभ, अहंकार आदि कषाय आत्मगुणों को नष्ट करने वाले होते हैं। यह कषाय ही भवभ्रमण का मूल कारण बनता है। दशवैकालिक सूत्र में बताया गया--

अनिगृहीत क्रोध और मान प्रवर्धमान माया और लोभ--ये चारों संक्लिष्ट कषाय पुनर्जन्मरूपी वृक्ष की जड़ों का सिंचन करते हैं। यह कषाय ही आत्मा को संसारोन्मुख बनाता है। आदमी यह प्रयास करे कि अनुदित कषाय का निरोध और उदय प्राप्त कषाय का विफलिकरण हो सके।

स्वामी रामतीर्थ, जो गणित के बहुत बड़े प्रोफेसर थे, अमेरिका से लौट रहे थे। बीच में हाँगकांग में अपने मित्र के घर ठहरे। उस समय वहाँ अधिकतर मकान लकड़ी के बने हुए थे। रात्रि में अचानक पडोस में भयंकर आग लग गई। अनेक लोग आग बुझाने के लिए वहाँ पहुँच गये। घर से बाहर सामान निकाला गया। कुछ देर बाद किसी ने पूछा--मकान मालिक कहाँ है? जवाब मिला--उसे तो बाहर निकालना ही भूल गए। स्वामी रामतीर्थ अपनी डायरी में लिखते हैं--सामान बचा लिया गया, मालिक जल कर राख हो गया।

जिस प्रकार मालिक की सुरक्षा के बिना सामान का बचना ज्यादा महत्त्व नहीं रखता, उसी प्रकार आत्मगुणों की सुरक्षा के बिना मात्र शरीर का पोषण अधिक महत्त्व नहीं रखता है। शरीर धारण का लक्ष्य तो 'अत्तहियट्ठयाए' होना चाहिए, कषायों से आत्मा को बचाने का होना चाहिए। किन्तु जब तक सही दृष्टि प्राप्त नहीं होगी, अध्यात्म की दृष्टि नहीं मिलेगी, तब तक आत्मा न तो पापों से बच सकेगी और न ही ऊर्ध्वगामी बन सकेगी।

आदमी ऋण से उऋण बनने का, व्रण से स्वस्थ रहने का, अग्नि से सुरक्षित रहने का और कषाय से अप्रभावित रहने का संकल्प और प्रयास करे। सही दिशा में किया गया प्रयास अवश्य ही वीतरागता का पथ प्रशस्त कर सकेगा।

जिस प्रकार मालिक की सुरक्षा के बिना सामान का बचना ज्यादा महत्त्व नहीं रखता, उसी प्रकार आत्मगुणों की सुरक्षा के बिना मात्र शरीर का पोषण अधिक महत्त्व नहीं रखता है। शरीर धारण का लक्ष्य तो 'अत्तहियट्ठयाए' होना चाहिए, कषायों से आत्मा को बचाने का होना चाहिए। किन्तु जब तक सही दृष्टि प्राप्त नहीं होगी, अध्यात्म की दृष्टि नहीं मिलेगी, तब तक आत्मा न तो पापों से बच सकेगी और न ही ऊर्ध्वगामी बन सकेगी।

आदमी ऋण से उऋण बनने का, व्रण से स्वस्थ रहने का, अग्नि से सुरक्षित रहने का और कषाय से अप्रभावित रहने का संकल्प और प्रयास करे। सही दिशा में किया गया प्रयास अवश्य ही वीतरागता का पथ प्रशस्त कर सकेगा।

www.terapanthinfo.com

संवैधानिक मर्यादाएं

रामस्वरूप रावतसरे

क्या संविधान की सारी मार्यादाऐं गरीब जनता एवं नोकरशाही के लिये ही लागू होती हैं? क्या आर्थिक दृष्टि से ताकतवर हो जाने के बाद या सत्ता में आ जाने के बाद व्यक्ति संवैधानिक एवं कानूनी मर्यादाओं से ऊपर उठ जाता है! जैसा कि हमारे यहां हो रहा है। इस पर विचार सत्ता में बैठा व्यक्ति कभी नहीं करेगा? इस पर विचार जनता को ही करना होगा।

संविधान राष्ट्र का वह धर्म ग्रन्थ माना जाता है जिसके आधार पर सत्ता और जनता अपने-अपने दायरे के अनुसार कार्य कर सुरक्षात्मक जीवन को जी सके। आजादी के बाद संविधान निर्माताओं ने जिन बातों को देश एवं जनता के हित में उचित सोचा था उसे बड़ी मेहनत से उसमें सम्मिलित किया था इस आशा से कि भारतीय नागरिक संविधान के संरक्षण एवं इसके दायरे में रह कर विश्व में श्रेष्ठ जीवन यापन कर सकेगा। हम अपना जीवन इसी संविधान के साये में बिता रहे हैं। लेकिन इस देश के रथ को हांकने वाले किस संविधान के आधार पर देश को हांक रहे हैं यह मालूम नही चल रहा है क्योंकि देश चलाने वाले लोगों ने साठ साला जीवन में जिस पैदावार को पनपाया है, जिसे संरक्षण देकर आगे बढ़ाया वह देश को आगे बढ़ाने के बजाय दीमक की तरह खाये जा रही है। आर्थिक क्षमता कुछ हाथों में ही सिमट कर रह गई है। हर तरफ बाहूबलियों का ही ताण्डव नृत्य होता दिखाई देता है।

आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद पूरे देश को ही लीलने को बे-रोक-टोक आगे बढ़ रहा है। राजनेता इन देश विरोधी तकतों को रोकने के बजाय इनका समर्थन करते से लग रहे है। राजनीति पथ भ्रष्ट होकर श्रेष्ठता के मार्ग को छोड कर निकृष्टता के मार्ग की ओर बडी गति से बढ रही है। अब राजनीति सिद्वान्तों की नहीं रह कर समझोतों की रह गई है जिसमें जनता की आवश्यकता या देश की प्राथमिकता को ध्यान में रख कर समझोते नहीं किये जाते। सत्ता में बने रहने के लिये समझोते, साथ देने वालों की इच्छा एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर किये जाते हैं।

यदि हम राष्ट्र के साठ साला जीवन पर एक नजर डाले तो मालूम चलेगा कि देश कहा खडा है, देश के साठ साला जीवन में कौन पले और आगे बढ़े हैं जिन्होंने इस देश का सबसे ज्यादा खाया है उचित-अनुचित तरीके से बटोरा है, वे देश के लिये क्या कर रहे हैं? वह किसका संरक्षण दाता बन गया है? उसको कौन संचालित कर रहा है, देश की सम्पदा पर कौन कुण्डली मारे बैठा गुलछर्रे उड़ा रहा है। उसे यदि चिन्ता है तो अपनी व अपने सत्ता में बने रहने की।

सवा सौ करोड़ जनता के साथ क्या हो रहा है? इस ओर सत्ता में बैठे लोग तब तक ध्यान नही देते जब तक उन्हे यह नहीं लगें कि जनता के मध्य में नही जाने से उनका कुछ बुरा हो सकता है। इसके उदाहरण सामने हैं। भोपाल गैस काण्ड के आरोपी एंडरसन को हमारे इन सत्ता सीन लोगों ने ही देश से बाहर जाने दिया और 25 वर्षों तक अपने इस कृत्य को सामने नहीं आने दिया। जहरीली गैस से जो मरे सो मरे उसके बाद भी आज तक लोग मर रहे हैं। लेकिन संविधान की शपथ लेकर देश को संचालित करने वाले ये लोग मरने वालों के कफन पकड़ कर घड़ियाली आंसू बहाते, निरीह जनता के घावों को वक्त बे वक्त कुरेदते रहे ताकि इन्हें वोट आसानी से मिलते रहें। इनका राजनीति रूपी व्यापार चलता रहे। लेकिन बुरा हो उनका जिन्होंने 25 वर्ष पहले की बात को उजागर कर दिया। बात उजागर होने पर जनता की विचारात्मक एवं भावात्मक स्थिति क्या है? इसका आगे क्या प्रभाव पड़ेगा? यह तो समय ही बतायेगा।

देश के स्वाभिमान से जुड़े इस मसले में अब तक जो कुछ नहीं हो सका उसे कैसे पूरा किया जाय इस पर ध्यान नहीं देकर इस बात पर ध्यान दिया गया कि जिन प्रभावशाली लोगों का जो नाम आया है उससे जनता का ध्यान कैसे हटाया जाय। इस पर मंथन हुआ और उसे पूरा करने में सत्ता में बैठे लोग सफल भी हुए। ऐसा ही प्रकरण नक्सलियों के ताण्डव का है जिसमें जनता मर रही है, जवानों की पत्नियां विधवा हो रही हैं लेकिन सत्ता में बैठे नेता अपनी वाचालता को उजागर करने के अलावा कुछ नहीं कर रहे हैं। क्या संविधान की सारी मार्यादाऐं गरीब जनता एवं नोकरशाही के लिये ही लागू होती हैं? क्या आर्थिक दृष्टि से ताकतवर हो जाने के बाद या सत्ता में आ जाने के बाद व्यक्ति संवैधानिक एवं कानूनी मर्यादाओं से ऊपर उठ जाता है! जैसा कि हमारे यहां हो रहा है। इस पर विचार सत्ता में बैठा व्यक्ति कभी नहीं करेगा? इस पर विचार जनता को ही करना होगा।

चोपड़ा बाजार, शाहपुरा
जयपुर (राजस्थान)

www.terapanthinfo.com

क्या सृष्टि का विनाश निकट है ?

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

एक तरफ तो यूरोप के वैज्ञानिक फ्रांस और स्विट्जरलैंड की सीमा पर 27 किलोमीटर लम्बी सुरंग बनाकर और उसमें विशाल यंत्र लगाकर सृष्टि के प्रारंभ को जानने का प्रयत्न कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ कुछ वैज्ञानिक सृष्टि में निकट भविष्य में ऐसी भयानक प्रलय की आशंका व्यक्त कर रहे हैं, जो सम्पूर्ण विश्व को ले बैठेगी। हॉलीवुड की एक ताजातरीन फिल्म 2012 में भी इसी प्रकार की आशंका व्यक्त की गयी है, जब आसमान से आग के गोले बरस रहे हों और बदहवास लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर से उधर भाग रहे हों। यद्यपि फिल्म में प्रकृति के साथ विनाशकारी संघर्ष में मनुष्य की ही विजय बतलाई गई है, किन्तु वास्तविक जीवन में ऐसी संभावना बहुत कम है। बचेंगे भी तो केवल कुछ सौभाग्यशाली, जो संभवतः सृष्टि का नये रूप में सृजन कर सकें। विश्व को चेचक से मुक्ति दिलाने में अहम् भूमिका निभाने वाले आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रेंक फ्रेनर ने तो हाल में यहां तक भविष्यवाणी की है कि अगले सौ वर्षों में धरती से इन्सान पूरी तरह विलुप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा है कि जिस प्रकार विश्व में जनसंख्या का विस्फोट हो रहा है, वह हमें धीरे-धीरे उसी दिशा की ओर अग्रसर कर रहा है। मनुष्य के इन कारनामों की वजह से ही मौसम का हाल बिगड़ता जा रहा है। रेगिस्तान में बाढ़ आ रही है और मैदानी इलाके कभी भीषण गर्मी से तप रहे हैं और कभी अप्रत्याशित सर्दी से ठिठुर रहे हैं। इसी आधार पर दुनिया के जानेमाने भौतिकशास्त्री प्रो. स्टीफन हाकिंग का कहना है कि यदि मनुष्य ने अगली दो सदियों में धरती छोड़कर अन्तरिक्ष में बस्तियां नहीं बसाईं तो मानव सभ्यता का विनाश हो सकता है।

वैज्ञानिक इस तथ्य की तरफ भी हमारा ध्यान आकर्षित कर रहे हैं कि सूरज पर भयानक तूफान की आहट पृथ्वी पर अभी से महसूस की जाने लगी है। नासा के अनुसार हर 22 वर्ष बाद सूरज की चुम्बकीय ऊर्जा का चक्र शीर्ष पर होता है और हर 11 वर्ष के बाद सूर्य से निकलने वाली लपटों की संख्या सर्वाधिक होती है। वर्ष 2013 में सूर्य की ये दोनों विनाशकारी अवधि एक साथ मिलने वाली हैं। इससे वहां भयानक तूफान उठेगा, जिससे निकलने वाली सौर लपटें सैकड़ों हाइड्रोजन बमों की शक्ति के समान होंगी। इन सौर लपटों का निश्चित प्रभाव धरती तक भी पहुंचेगा। पिछली बार 12 जुलाई 2000 को जब सौर लपटें उठीं थीं, तब अन्तरिक्ष में चक्कर लगाने वाले कृत्रिम उपग्रहों में अचानक गड़बड़ी हो गयी थी और उनका काफी नुकसान भी हुआ था। इसका धरती के मौसम और वातावरण पर भी काफी प्रभाव पड़ा था। इस बार सूर्य के धरातल पर जो तूफान उठेगा, वह कई गुणा अधिक होगा। नासा तथा यूरोपियन एजेन्सियों द्वारा स्थापित यंत्रों से मिले आंकड़ों के आधार पर वैज्ञानिक इन्हें एक्स वर्ग की लपटें बतला रहे हैं। इसमें वे सभी लपटें शामिल हैं, जिन्हें हम गामा किरणें या पराबैंगनी किरणें आदि नामों से पुकारते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इन किरणों की लपटों में सम्पूर्ण धरती या उसका बहुत बड़ा भाग आ सकता है। इनसे धरती का इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम बर्बाद हो सकता है। तब मोबाइल फोन काम करना बन्द कर देंगे और रेडियो तथा टी.वी. भी बन्द हो जायेंगे। इससे कृत्रिम उपग्रह भी ठप्प हो जाएंगे। इन लपटों से हमारी ओजोन परत को भी काफी नुकसान हो सकता है, जिससे धरती के प्राणियों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ सकता है। अभी तक इन एक्स किरणों का प्रसार क्षेत्र ढाई लाख किलोमीटर माना जाता रहा है, लेकिन अब यह क्षेत्र इससे काफी अधिक बढ़ सकता है।

धरती के विनाश के संदर्भ में प्रसिद्ध भविष्य वक्ता नास्त्रेदमस तथा माया कैलेंडर (मैक्सिको) की भी चर्चा की जाती है। नास्त्रेदमस के अनुसार 2011-2012 में भयानक क्रान्ति होगी, लेकिन इसके साथ आशा की किरणें भी होंगी। नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों की व्याख्या करने वाले विशेषज्ञों का कहना है कि इससे समाज का आधारभूत ढांचा टूट जाएगा और एटमी हथियारों के बढ़ते भंडारों के कारण मानव सभ्यता नष्ट हो जायेगी। नास्त्रेदमस के साथ माया सभ्यता

www.terapanthinfo.com

(मैक्सिको) भी स्पष्ट रूप में यह घोषणा करती है कि 2012 में विश्व में बड़ी क्रान्ति होगी, जिसमें सबकुछ नष्ट हो जाएगा, माया कैलेंडर के अनुसार इस समय हम लोग मानव-सभ्यता के अंतिम दौर से गुजर रहे हैं। यह पुरानी सभ्यता के अंत और नयी सभ्यता के प्रारंभ होने का दौर है। एक लेखक दानिय्येल की पुस्तक के अनुसार 2011 से पृथ्वी के तमाम लोगों के लिए 5 महीनों की विपत्ति की अवधि शुरू होगी। इटली के महान् चित्रकार, दार्शनिक और वैज्ञानिक लियानार्डो द विंची की भविष्यवाणी के अनुसार वर्ष 4006 में पूरी दुनिया खत्म हो जाएगी।

इस्लाम धर्म के अनुसार सृष्टि में कयामत के दिन तब आयेंगे, जब व्यभिचार और शराबखोरी बढ़ जाएगी, ऊंची-ऊंची इमारतों का निर्माण होगा, एक ऐसी बीमारी फैलेगी, जिसका कोई इलाज नहीं होगा, आसमान और सितारे बिखर जाएंगे और जब कब्रें खोल दी जाएंगी। हर व्यक्ति जान लेगा कि उसने क्या अच्छा किया और क्या बुरा। व्यक्ति के कार्यों के आधार पर उसे जन्नत या दोजख नसीब होगा। ऐसा कब होगा, इसके बारे में इस्लाम खामोश है। कुछ लोग इसे माया कैलेंडर के आधार पर 21 दिसंबर 2012 से जोड़ रहे हैं, जब शुक्रवार भी है और इस्लामी वर्ष की तारीख 10 मुहर्रम भी है, जिन्हें इस्लाम में काफी पवित्र माना जाता है। लेकिन इस्लामी विद्वान इस विचार से सहमत नहीं हैं। ईसाई धर्म में भी इस प्रकार के कयामत के दिन की चर्चा है। परन्तु वह कब होगा, इसके बारे में कोई स्पष्ट चर्चा नहीं है। यहां भी कुछ लोग इसे माया कैलेंडर के साथ जोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। बाइबिल के अध्याय 5 और 11 में मानव जाति के इतिहास का कैलेंडर बतलाया गया है, जिसके अनुसार हम इस समय धरती के आखिरी दिनों में जी रहे हैं। एक उल्कापिंड से धरती के टकराने और जीवन का विनाश होने की चर्चा भी की गयी है। एक संकेत के अनुसार 21 मई 2011 को घोर संकट वाले इंसाफ का दिन शुरू होगा, जो कई महिनों तक चलेगा और अन्त में अग्नि से 21 अक्टूबर 2011 को सृष्टि का सम्पूर्ण विनाश हो जाएगा। चीनी धार्मिक किताब 'चाइनीज बुक ऑफ चेंजेज' में भी कुछ ऐसी ही बातें बतलाई गई हैं।

धरती से उल्कापिंड के टकराने के संदर्भ में वैज्ञानिकों ने भी अपनी शोध के आधार पर यह दावा किया है कि सितंबर 2182 में पृथ्वी से विशालकाय क्षुद्र ग्रह टकरा सकते हैं, जिससे पृथ्वी पर बड़े पैमाने पर विनाश होगा। उनका विचार है कि वर्ष 2200 से पहले ये क्षुद्र ग्रह दो बार पृथ्वी से टकरा सकते हैं। इन क्षुद्र ग्रहों का नामकरण वैज्ञानिकों ने खोज के वर्ष 1999 के आधार पर, 1999 आर.क्यू. 36 किया है। वैज्ञानिकों का विचार है कि धरती से डायनासोर के अंत का कारण भी ये क्षुद्र ग्रह ही थे। नासा ने अन्य अनेक क्षुद्र ग्रहों की भी इन दिनों खोज की है। इनमें से एफोसिस नाम का क्षुद्र ग्रह तो 2036 में ही पृथ्वी से टकरा सकता है।

डराने वाली और निराशा भरी इन भविष्यवाणियों के बीच हमारे अपने देश के ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक और शिक्षाविद् प्रो. यशपाल ने सृष्टि के समाप्त होने की सभी आशंकाओं को नकारते हुए कहा है कि सृष्टि के समाप्त होने का कारण कोई धार्मिक या ज्योतिषीय आधार नहीं हो सकता। उनका कहना है कि आज के विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है। अगर कोई धूमकेतु या क्षुद्र ग्रह पृथ्वी की तरफ आता है तो आज का विज्ञान उनका रुख बदलने की क्षमता रखता है। जहां तक भूकंप, तूफान या सुनामी जैसी समुद्री लहरों का सम्बन्ध है, वे तो आते रहे हैं और आते रहेंगे। उनका कारण हमारी धरती की संरचना है, कोई भविष्यवाणी नहीं। निश्चित ही इनसे जन और धन की हानि होती रही है और होती रहेगी, लेकिन इनसे सम्पूर्ण सृष्टि के विनाश की आशंका व्यक्त करना, लोगों को अनावश्यक डराने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मौसम और वातावरण में जो बड़े परिवर्तन हमें दृष्टिगत हो रहे हैं, उनका कारण स्वयं इन्सान है। हमारी जनसंख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। जंगल कटते जा रहे हैं और डामर रोड से सजे शहरों का विकास हो रहा है। गांव और जंगलों के क्षेत्र में शहर अपने पैर पसार रहे हैं। भूगर्भ की सम्पदा समाप्त होती जा रही है और हम विकास के नाम पर हानिकारक तकनीक को बढ़ावा देते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य को अगर प्राकृतिक प्रकोपों से बचना और मौसम को समयानुकूल नियंत्रित रखना है तो उसे अपने दीर्घकालीन हितों के प्रति स्वयं सजग रहना होगा। उसे स्वयं अपने आपको मर्यादा में रखना होगा और स्वयं के साथ ही प्रकृति की सुरक्षा की भी व्यवस्था करनी होगी।

सन् 1980 में प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुइस अल्वारेज ने विश्व के अतीत के बारे में खोज करके यह बतलाया था कि 650 लाख वर्ष पूर्व एक उल्कापात से पृथ्वी के अधिकतर प्राणियों का विनाश हो गया था। इसके बाद लम्बे समय तक यह बहस चलती रही कि उस विनाश के बाद पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत कब और कैसे हुई। कुछ वैज्ञानिकों ने दावा किया कि केवल 100 वर्ष बाद ही छोटे-छोटे कीटाणुओं

अणुव्रत अधिवेशन

31 जुलाई एवं 1, 2 अगस्त 2011
को
केलवा (राजसमंदल-राजस्थान)

www.terapanthinfo.com

के रूप में जीवन पुनः पल्लवित होने लगा। परन्तु अधिकतर वैज्ञानिकों का विचार था कि जीवन की पुनः शुरुआत होने में लाखों वर्ष लगे होंगे। इस खोज और बहस ने विश्व के वैज्ञानिकों को काफी अधिक चौंका दिया था, लेकिन सृष्टि के जीवन के बारे में भारत की जो काल-गणना प्राचीन काल से चली आ रही है, उसमें ऐसी कोई बात चौंकाने वाली नहीं है। यह कालगणना उन भविष्य वक्ताओं को भी सिरे से नकारती है, जो निकट भविष्य में सृष्टि के विनाश की बात करते हैं।

भारतीय कालगणना के अनुसार सृष्टि का सम्पूर्ण जीवन 4320000000 वर्षों का होता है, जिसमें से वर्ष 2010 तक 19608,53,110 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं तथा 2,35,91,46890 वर्ष शेष हैं। इसके बाद ही महाप्रलय होकर सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश होगा। सृष्टि-विनाश के उपरांत इतने ही समय अर्थात् 4320000000 वर्षों का शून्य समय होगा, जिसे हमारे यहां ब्रह्मरात्रि के नाम से जाना गया है। इसके उपरांत ही सृष्टि का पुनः विकास होगा। महा प्रलय से पूर्व समय-समय पर प्रलय या खंड-प्रलय भी हो सकती हैं अर्थात् भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं से धरती का आंशिक विनाश हो सकता है, सम्पूर्ण विनाश नहीं। यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान विज्ञान भी घूम फिर कर हमारी इसी विचारधारा पर आकर पहुंचा है कि सृष्टि का प्रारंभ आज से लगभग दो अरब वर्ष पूर्व हुआ। भविष्य के बारे में वह केवल अनिश्चय के अंधियारे में खोया हुआ है। ऐसी स्थिति में भारतीय विचारधारा तर्क संगत और विज्ञान सम्मत प्रमाणित होती है। फलस्वरूप सृष्टि के निकट भविष्य में सम्पूर्ण विनाश की कल्पना का डर निराधार और पूर्णतः अवैज्ञानिक है।

भारतीय काल गणना पद्धति के अनुसार सृष्टि का यह सम्पूर्ण समय भी 15 मन्वन्तरों में बांटा गया है। मन्वन्तरों में से 14 मन्वन्तरों में 71 महायुग तथा 15वें मन्वन्तर में छः महायुग होते हैं। एक महायुग में चार युग होते हैं-- सतयुग (कृत युग), त्रेता युग, द्वापर युग तथा कलियुग। सतयुग में 1,72,8000 वर्ष, त्रेता युग में 12,96000 वर्ष, द्वापर युग में 8,64000 वर्ष तथा कलियुग में 4,32000 वर्ष होते हैं। इस प्रकार एक महायुग 4320000 वर्ष का होता है। अब तक इस सृष्टि का सातवां मन्वन्तर और 28वें महायुग का कलियुग चल रहा है। इसके बाद अगला महायुग प्रारम्भ होगा। अभी तो कलियुग में ही 4,26,889 वर्ष शेष हैं। उसके बाद सामान्य प्रलय संभव है, जिसमें सृष्टि का आंशिक विनाश हो सकता है। बीच-बीच में उल्कापात, भूकंप तथा सुनामी जैसी घटनाओं से खंड प्रलय संभव है। फिलहाल सृष्टि के सम्पूर्ण विनाश के लिए तो हमें 2,35,9146,890 वर्षों तक निश्चिंत ही रहना चाहिए। अवश्य ही प्रलय या खंड प्रलय की विभीषिकाओं से बचने के लिए हमें अपनी जनसंख्या को नियंत्रित रखना होगा और प्राकृतिक सम्पदा की सुरक्षा करनी होगी, ताकि प्रकृति उन विभीषिकाओं से हमारी रक्षा कर सके।

10/611, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

राष्ट्र चिन्तन

- संविधान में सिर्फ संसद और राज्य विधानसभाओं को कानून बनाने का अधिकार दिया गया है। अगर पांच-छह हजार लोग बाहर से यह निर्देश देने लगें कि संसद को क्या करना चाहिए, तो इससे लोकतंत्र कमजोर होगा।
  केन्द्र ने कहा है कि लोकपाल बिल संसद के मानसून सत्र में पेश किया जाएगा। बिल पास होने के लिए समयसीमा तय करना मुमकिन नहीं है।
  -- प्रणव मुखर्जी, *केन्द्रीय वित्त मंत्री*

- आदरणीय सोनियाजी मैं आपसे यह सुनिश्चित करने की गुजारिश करता हूं कि आपकी पार्टी (कांग्रेस) के जिम्मेदार नेता मेरे चरित्र पर कीचड़ उछालने और जन लोकपाल बिल पर लोगों को गुमराह करने से बचें।
  -- अन्ना हजारे, *सामाजिक कार्यकर्ता*

- मेरे नजरिये में पीएम, न्यायपालिका, एनजीओ और औद्योगिक घरानों को भी लोकपाल के दायरे में लाया जाना चाहिए। एमपी का मुख्यमंत्री रहते मैं सीएम को लोकायुक्त के दायरे में लाया था। अन्ना कैम्प को ध्यान रखना चाहिए कि सरकार पर दबाव डालना ठीक नहीं है।
  -- दिग्विजय सिंह, *कांग्रेस महासचिव*

- लोकपाल सिविल सोसायटी को हमारी सलाह है कि वह कांग्रेस द्वारा लगाए गए आरोपों का स्पष्टीकरण न दें। कांग्रेस उन्हें फंसाने के लिए जाल बिछा रही है। सिविल सोसायटी पर जनता को पूरा भरोसा है। आप अपना अभियान जारी रखें। भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी कांग्रेस को सिविल सोसायटी से इस तरह के सवाल करने का कोई हक नहीं है। कांग्रेस के नेता साधु-संतों को ठग कहते हैं, जबकि वे कुख्यात आतंकवादी ओसामा बिन लादेन को ओसामाजी कहकर बुलाते हैं। ऐसे नेताओं के बयान पर अन्ना हज़ारे और बाबा रामदेव को कोई संज्ञान भी नहीं लेना चाहिए।
  -- राजीव प्रताप रूडी, *भाजपा प्रवक्ता*

www.terapanthinfo.com

राष्ट्र की पहचान भ्रष्टाचार करो ?

सुरेश आनन्द

भ्रष्टाचारियों को पहलवान बने रहने दो और तुम तोते की तरह पिंजरे में बंद रहो। सिर्फ भ्रष्टाचारियों को राम! राम! बोलते रहो। सच्ची आजादी का अर्थ भी तो यही है? प्रिय भारतवासियों! तभी तो राष्ट्र की पहचान सिर्फ यही है कि भ्रष्टाचार करोगे तो सरकार हो, पुलिस हो या यमदूत हो सभी तुम्हारे भ्रष्टाचार का भी पासपोर्ट बनवा देंगे? न तुम अनशन करोगे, ना ही पुलिस तुम्हें डराएगी?

परम प्रिय भारतवासियों! आजादी के चौंसठ वर्षों में भी नहीं समझ पाए कि आजादी के मायने क्या होते हैं? सरकार के मायने क्या होते हैं।

हमें तो शर्म महसूस होती है जब भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं? कितनी बार कहा है भाई! भ्रष्टाचार करो और इसे ही शिष्टाचार मानो।

प्यारे भारतवासियों! भ्रष्टाचार में बहुत गुण हैं। तमाम राजनीतिज्ञ इसी के सहारे चुनाव लड़ते हैं तभी तो चुनाव ही आजादी का मुख्य आधार है। जो चुनाव लड़ेगा वही तो आजादी का अर्थ समझ पाएगा? जो आजादी का अर्थ समझेगा वही तो परिवार की चार पीढ़ियों को पार लगायेगा। कुर्सी सिर्फ उनकी ही होगी। फिर भी आप कुर्सी सम्हालने का नुस्खा नहीं समझ पाए ?

प्रिय भाईयों! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि जितना भी धन लूटो, वह सभी स्वीस बैंक में रख आओ! इससे होगा यह कि तुम भी सुरक्षित रहोगे और तुम्हारा धन भी सुरक्षित रहेगा। कृपया अपनी सुरक्षा करने के लिए हर पल भ्रष्टाचार करो? भ्रष्टाचार करने में बड़ा बल है? भ्रष्टाचारी ही बलशाली रहता है। भ्रष्टाचारी ही सत्ता के करीब होता है? भ्रष्टाचारी ही स्वीस बैंक तक जा सकता है? बात यहीं तक नहीं है। भ्रष्टाचारी को सलाह सरकार भी देती है। भ्रष्टाचारी की सहायता पुलिस भी करती है। भ्रष्टाचारी का कोई नहीं बिगाड़ सकता है। वह सात जन्म भी तर जाता है।

भ्रष्टाचारी, कोई मूर्ख नहीं हैं जो साधु संतों से भयभीत हो जायें? अन्ना हजारे या स्वामी रामदेव जैसों से भयभीत हो जायें? आखिर भ्रष्टाचारी घी पीते हैं, शक्कर खाते हैं, पहलवानी करते हैं, कुर्सीवादी हैं। चाहे तो आधी रात को उपवास करने वाले को नींद से जगा दें। पुलिस से भगदड़ मचवा दें। औरतों-बूढ़ों को जिंदगी पाने का मजा चखा दें? अंग्रेजों जैसे बनकर आजादी का मजा चखा दें?

पता नहीं देश के लोग साधुओं, संतों, साध्वी जैसे फकीरों से क्यों मिलते हैं जो रामलीला मैदान पर पसर कर सो गए। पता नहीं भूखे भी क्यों रहें? वह तो सरकार को ही दया आयी जो अश्रुगैस के गोले फोड़कर खदेड़ दिए गए। हाथ पैर तोड़ दिए और सभी को आजादी का सही अर्थ बता दिया? तभी तो भ्रष्टाचारी ही सही मायने में आजाद है यह सभी को अब मालूम हुआ है?

अब भूखे लोग उपवास तोड़ कर कम से कम घर जाकर रोटी तो खा सकते हैं? परम प्रिय भारतवासियों जिंदगी में कभी भी अन शन मत करो। कभी भी स्वीस बैंक का धन मत छुओ। कभी भी भ्रष्टाचारियों से मिलना जुलना बंद मत करो। अगर उनके साथ रहोगे तो वे कुत्ते के समान तुम्हें भी थोड़े बहुत टुकड़े देंगे।

परमप्रिय भारतवासियों! तुमने अनशन करने का मजा लूट लिया ना? साधु संतों का साथ देने का मजा चख लिया ना? अब तो बाज आओ और आजादी का मजा समझ लो?

प्यारे देशवासियों! अगर तुम्हें लाठी गोली नहीं खाना है तो आजाद देश के तमाम भ्रष्टाचारियों के साथ रहो। भ्रष्टाचारियों की सहायता करते रहो? वह तो खाएंगे ही सही पर तुम्हें भी दो टुकड़े जरूर डाल देंगे। शर्त एक ही है कि मुखर मत बनो? झोपड़ी में दुबके रहो। मौन रहो। भ्रष्टाचारियों को पहलवान बने रहने दो और तुम तोते की तरह पिंजरे में बंद रहो। सिर्फ भ्रष्टाचारियों को राम! राम! बोलते रहो। सच्ची आजादी का अर्थ भी तो यही है? प्रिय भारतवासियों! तभी तो राष्ट्र की पहचान सिर्फ यही है कि भ्रष्टाचार करोगे तो सरकार हो, पुलिस हो या यमदूत हो सभी तुम्हारे भ्रष्टाचार का भी पासपोर्ट बनवा देंगे? न तुम अनशन करोगे, ना ही पुलिस तुम्हें डराएगी?

आनंद परिधि
एल 62 पं. प्रेमनाथ डोगरा नगर
रतलाम 457001 (म.प्र.)

www.terapanthinfo.com

जन-जागरूकता ही है विकल्प

अरविंद केजरीवाल

भ्रष्टाचार का मुद्दा सिर्फ सामाजिक मसला नहीं है, बल्कि अंतिम तौर पर यह राजनीतिक मुद्दा भी है। आम आदमी को यह नहीं समझना चाहिए कि भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन नेताओं के खिलाफ आंदोलन है। हमें समझना होगा कि आखिरकार भ्रष्टाचार से निपटने के लिए जिस कानून के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं, वह नेताओं को ही बनाना है। इसलिए इसे सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन समझना चाहिए।

दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में सरकार ने जिस तरह से रात के अंधेरे में सोते हुए आंदोलनकारियों का दमन किया, उसके बहुत से निहितार्थ हैं। सबसे पहला तो यह कि यह जनतंत्र पर हमला है और सरकार अंग्रेजों की तरह काम कर रही है। दूसरा, सरकार षड्यंत्रों से घिरी है। क्योंकि पूरा घटनाक्रम यह बताता है कि सरकार ने पहले से ही ऐसी कार्रवाई करने का मन बना लिया था। इसके अलावा अन्ना हजारे के आंदोलन के बाद भी अगर आप देखें, तो भूषण परिवार को किस तरह निशाना बनाने की कोशिश की गई और अब इस आंदोलन के बाद भी तरह-तरह के आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है। रामलीला मैदान की रावणलीला ने यह साबित कर दिया है, इस समय देश में षड्यंत्रों की सरकार काम कर रही है। सरकार जन-लोकपाल को भी सिर्फ नॉर्थ ब्लॉक की बैठकों तक सीमित कर देने का षड्यंत्र रच रही है। यही वजह है कि इन बैठकों पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करने की बजाय लोकपाल के लिए सघन जागरूकता अभियान के साथ फिर से सड़कों पर उतरने की अन्ना हजारे ने घोषणा की है।

इन निहितार्थों के बीच एक सबक भी है, जो हम आंदोलनकारियों के लिए भविष्य की भूमिका तय करने का संदेश देता है। सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ बाबा रामदेव की अगुवाई में चल रहे शांतिपूर्ण आंदोलन को कुचलने के लिए जो उग्र रवैया अख्तियार किया, उसे देखकर गांधीवादी मूल्य यही सबक सिखाते हैं कि हमें जनता के बीच पहले से भी ज्यादा सघन जागरूकता अभियान चलाना होगा। जिससे जनता इस बात को समझ सके कि भ्रष्टाचार रहित व्यवस्था उसकी अपनी जरूरत है। इसके लिए देश भर में स्वतःस्फूर्त आंदोलन खड़ा करना ही एकमात्र उपाय है।

जनतंत्र को समय-समय पर मजबूती देने वाले रामलीला मैदान पर जिस तरह से लोकतांत्रिक मूल्यों का गला घोंटा गया, उससे दुनिया के सामने हमारे देश का सिर शर्म से झुक गया। यह बात हमारी समझ से परे है कि आखिरकार सरकार ने किस मजबूरी में हजारों निर्दोष लोगों को अपनी कायराना हरकत का शिकार बनाया। यहां तक कि सरकार ने शांतिपूर्ण तरीके से अपना विरोध दर्ज करने का अधिकार देने वाले संविधान के अनुच्छेद-19 की भी धज्जियां उड़ा दीं। मासूम बच्चों और महिलाओं को नहीं बख्शा गया। ऐसा लगता है कि सरकार ने यह समझ लिया है कि भ्रष्टाचार उसका जन्मसिद्ध अधिकार है और इस अधिकार को चुनौती देने वाले को कुचल दिया जाएगा। पूरे घटनाक्रम को देखने के बाद सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि यह कार्रवाई पिछले कुछ समय में उभरे जन आंदोलनों से सरकार में उपजे भय का प्रकटीकरण है। मूल मसला भ्रष्टाचार है और इससे निपटने के लिए लोकपाल की बात की जा रही है। अब सरकार को लगता है कि आंदोलनकारियों की मंशा के अनुरूप लोकपाल कानून के बनने से इस पर अंकुश लग सकेगा। ऐसे में सरकार के मंत्री स्विस बैंकों में जमा नेताओं की काली कमाई को देश में वापस लाने की मांग को कैसे स्वीकार करेंगे?

भ्रष्टाचार के मसले पर अन्ना हजारे के आंदोलन से लेकर रामलीला मैदान के सत्याग्रह तक के कालखंड का विश्लेषण साबित करता है कि सरकार इस मामले पर सिर्फ और सिर्फ सौदेबाजी के मूड में ही दिखती रही। सरकार के नुमाइंदे समाज में बुरी तरह से फैल चुके भ्रष्टाचार की हकीकत को स्वीकार तो करते हैं, लेकिन उसके कार्यकलापों से कहीं भी यह नहीं दिखता कि वह इसे जड़ से मिटाने की मंशा रखती है। मौजूदा हालात में भ्रष्टाचार से निपटने में लोकपाल सबसे सशक्त हथियार साबित हो सकता है, यह बात भी सरकार ने अन्ना के आंदोलन के बाद मजबूरी में ही स्वीकार की। इस व्यवस्था को मूर्त रूप देने के लिए सरकार के साथ पिछले डेढ़ महीने से चल रही हमारी बैठकों के दौरान हमने लगातार इस बात को महसूस किया है कि सरकार इसे सिर्फ कानूनी अमलीजामा पहनाकर अपने दायित्व की इतिश्री कर देना चाहती है। इन बैठकों में बहस और तर्क का कोई स्थान नहीं है, सरकार के नुमाइंदे हुक्मरान

www.terapanthinfo.com

की तरह व्यवहार करते हैं। मसलन, न्यायपालिका को लोकपाल के दायरे से बाहर रखने का कारण पूछने पर सरकारी पक्ष ने बताया कि दो पूर्व न्यायाधीशों ने चिट्ठी लिखकर ऐसा करने से मना किया है। यह तो कोई तर्क नहीं हुआ। इतना ही नहीं, इस पर सरकार बहस करने को तैयार नहीं है। जबकि हैरत की बात है कि सरकारी पक्ष द्वारा पहले पेश किए गए लोकपाल बिल में न्यायपालिका को लोकपाल के दायरे में रखने की बात शामिल थी। महज दो पूर्व जजों की चिट्ठी और लेख पढ़कर सरकार ने यह फैसला कर लिया। बंद कमरों में होने वाली इन बैठकों में हम घुटन महसूस कर रहे हैं। हमें लगता है कि सरकार ने आंदोलन से डरकर संयुक्त कमेटी का गठन तो कर लिया, लेकिन अब उसके रवैये से साफ है कि लोकपाल कानून का स्वरूप सरकार ने तय कर रखा है और बैठकों के नाम पर वह सिर्फ समय बिता रही है।

सरकार पारदर्शिता की बात को स्वीकार कर बैठकों की कार्यवाही का सीधा-प्रसारण करने की हमारी मांग को मानने के लिए तैयार नहीं है और साथ ही कानून को सख्त स्वरूप देने पर भी जिस तरह से आनाकानी कर रही है, उससे हम सब वाकिफ हैं। यही वजह है कि हमने 6 जून 2011 की बैठक का बहिष्कार कर सरकार को अपनी चिंताओं से अवगत करा दिया है। इस पर सरकार का जो भी रुख होगा, उसे तो हम देखेंगे ही, लेकिन इसके साथ ही अब हमने यह तय कर लिया है कि जन लोकपाल के स्वरूप को अभी हम जिस तरह से जनता के साथ मिलकर तय कर रहे हैं, इसके दायरे को और अधिक व्यापक करना होगा। हालांकि अन्नाजी इस काम को अब भी अंजाम देने में जुटे हुए हैं, लेकिन हम सब अब सरकार के साथ होने वाली बैठकों पर ध्यान देने की बजाय जागरूकता अभियान पर पूरा ध्यान केंद्रित करेंगे। इसके साथ ही एक बात और साफ करना जरूरी होगा कि भ्रष्टाचार का मुद्दा सिर्फ सामाजिक मसला नहीं है, बल्कि अंतिम तौर पर यह राजनीतिक मुद्दा भी है। आम आदमी को यह नहीं समझना चाहिए कि भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन नेताओं के खिलाफ आंदोलन है। हमें समझना होगा कि आखिरकार भ्रष्टाचार से निपटने के लिए जिस कानून के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं, वह नेताओं को ही बनाना है। इसलिए इसे सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन समझना चाहिए।

प्रस्तुति : निर्मल यादव

हिन्दुस्तान दैनिक, 7 जून 2011 से साभार

अणुव्रत अनुशास्ता युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

पर

शत-शत अभिवन्दन

श्रद्धावनतः

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा

तेरापंथ युवक परिषद्

तेरापंथ महिला मंडल

मदुराई (तमिलनाडु)

www.terapanthinfo.com

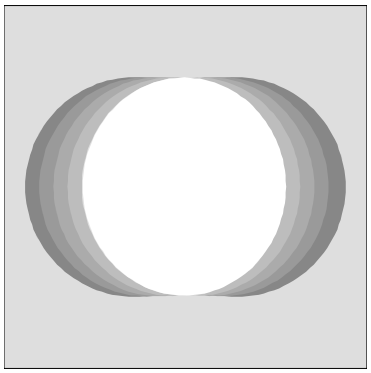

और कोई रास्ता नहीं बचा था

डॉ. मनमोहन सिंह

राजधानी दिल्ली के रामलीला मैदान में रामदेव व उनके समर्थकों को अनशन से रोकने के लिए की गई कार्रवाई दुर्भाग्यपूर्ण थी। मगर सरकार वह कदम उठाने के लिए मजबूर हो गयी थी। 'इस अभियान को अंजाम देना दुर्भाग्यपूर्ण था लेकिन ईमानदारी की बात है कि कोई विकल्प नहीं था।'

सामाजिक कार्यकर्ताओं और विभिन्न दलों द्वारा उठाए जा रहे भ्रष्टाचार के मुद्दों के बारे में मैं यही कहूंगा कि भ्रष्टाचार से निपटने के लिए सरकार अपने स्तर पर कड़े कदम उठा रही है। सरकार भ्रष्टाचार के मसले को लेकर चिंतित है और इसमें किसी को शक नहीं होना चाहिए कि सरकार काफी गंभीर है। लेकिन समस्या से रातोरात नहीं निपटा जा सकता। सरकार गंभीर है और भ्रष्टाचार एवं काले धन को लेकर हम चिंतित हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है लेकिन हमारे पास कोई जादुई छड़ी नहीं है।

मुझे लोकपाल के दायरे में लाये जाने की मांग पर फिलहाल मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। यह मुद्दा संयुक्त मसौदा समिति के समक्ष विचाराधीन है जिसमें मंत्री और समाज के सदस्य शामिल हैं। ऐसी खबरों को सनसनीखेज बनाने की प्रवृत्ति तथा पेड न्यूज से मीडिया को बचना चाहिए। कभी-कभी खबरों को सनसनीखेज बनाने के लालच में पत्रकार भाई-बहनों को ध्यान नहीं रहता कि असलियत को तोड़-मरोड़ कर पेश करने से समाज को नुकसान भी पहुंच सकता है।

आधी रात को क्यों हटाए गए लोग

रामलीला मैदान में बाबा रामदेव और उनके समर्थकों पर शनिवार आधी रात को हुई पुलिस कार्रवाई पर स्वतः संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और महिला आयोग ने केन्द्र और दिल्ली सरकार को नोटिस जारी कर दो हफ्ते के भीतर जवाब मांगा है।

जस्टिस बी.एस. चौहान और स्वतंत्र कुमार की अवकाश पीठ ने केन्द्रीय गृह सचिव जी.के. पिल्लई, दिल्ली के मुख्य सचिव पी.के. त्रिपाठी और दिल्ली पुलिस आयुक्त बी.के. गुप्ता को नोटिस जारी किया है।

अदालत ने पूछा है कि ऐसी क्या परिस्थितियां थीं जिसके कारण लोगों को आधी रात को बल प्रयोग से हटाना पड़ा। मामले की अगली सुनवाई जुलाई के दूसरे सप्ताह में होगी। इस बीच मानवाधिकार आयोग और महिला आयोग ने भी पुलिस दमन पर दो हफ्ते के भीतर जवाब मांगा है। गौरतलब है कि पुलिस की कार्रवाई में 60 से अधिक लोग घायल हो गए थे जिनमें अधिकतर बाबा रामदेव के समर्थक थे।

www.terapanthinfo.com

लोकतंत्र में तो सरकार झुकने के लिए ही होती है। लेकिन असल सवाल अनशन या आंदोलन से सरकार को झुकाने का नहीं, समाज के हर हिस्से से भ्रष्टाचार को हटाने की दिशा में बढ़ने का है। और यह सफलता किसी को भी रातोरात नहीं मिल सकती।

सवाल है काले धन को खत्म करने का

गिरिराज किशोर

काले धन का विदेशों में जमा होना देश के प्रति गद्दारी है। पर इसका जिम्मेदार कौन है? कम या ज्यादा, यह पैसा तो तब भी विदेशी बैंकों में था, जब नेहरू सरकार थी। उस वक्त भी था, जब जनता सरकार थी और तब भी था, जब इंदिराजी की सरकार थी। अभी कुछ साल पहले जब वाजपेयी सरकार थी, तब भी यह सवाल दबे ढंग से उठा, पर सरकारें इस सबके बावजूद काले धन के प्रति उदासीन थीं। सबको मालूम था कि देश के राजनीतिज्ञ, धनपति, नौकरशाह और व्यवसायियों की धन चोरी के प्रति सरकारें चुप हैं। कभी किसी ने नहीं सोचा कि अब धन के इस निर्यात को बंद किया जाए। कोई बात तो जरूर रही होगी, वरना सरकारें चुप क्यों रहीं? सरकारें ही क्यों, राजनीतिक पार्टियां तक इसके बारे में चुनाव के समय सिर्फ अपनी जुबान हिलातीं और फिर सन्नाटा। कई घोटाले हुए, जांच का अभिनय हुआ और फिर पटाक्षेप हो गया।

सबसे बड़ा प्रमाण तो अन्ना हजारे समूह का है, जो बिना किसी तैयारी या प्रचार के जंतर-मंतर पर आ बैठा और जन सैलाब उमड़ आया। क्यों? अन्ना के पास भ्रष्टाचार हटाने के लिए एक निश्चित प्रस्ताव था, जन-लोकपाल की नियुक्ति के रूप में। फिर उनकी अपनी साख थी। सरकार ने उन्हें हल्के में लिया, लेकिन उनके पलड़े में जनता बैठ गई, तो सरकार की आंखें खुलीं। लेकिन अन्ना हजारे ने सरकार को झुकाकर अपना गौरव बढ़ाने

की चाल नहीं चली। भले एक बार सिब्बल उनसे बात करने आए हों, लेकिन अगली बार उनके दल के साथी सरकार से बात करने गए। इससे पता चलता है कि गवर्नेंस के प्रति उनका कितना सम्मान था। यह सरकार और सामाजिक पक्ष का साझा दायित्व है कि दोनों एक-दूसरे का स्थिति के अनुसार सम्मान बनाए रखें।

जब देश के बंटवारे की बात चल रही थी और गांधीजी उसके लिए तैयार नहीं थे, तो माउंटबेटन ने नेहरूजी से कहा कि मैं स्वयं उनसे मिलकर बात करूंगा। नेहरूजी ने जब गांधीजी को बताया, तो उन्होंने कहा कि यह पद की गरिमा का सवाल है, यदि आवश्यकता हुई, तो मैं स्वयं जाऊंगा। लेकिन इसी बीच नेहरू व पटेल कांग्रेस की तरफ से बंटवारे के लिए हामी भर आए, तो गांधीजी को पार्टी की बात रखने के लिए बंटवारा न होने देने वाले अपने प्रण को छोड़ना पड़ा।

लेकिन दो जून को जो हुआ, उससे तो सरकार और गवर्नेंस के सम्मान को बट्टा लगा है। उसके लिए सरकार खुद भी जिम्मेदार है। बावजूद इसके कि बाबा रामदेव जो कर रहे हैं, वह देशहित की बात है। अब जबकि यह लगभग साफ हो गया कि सरकार उनके सामने झुकने को तैयार है, तब भी यह कोई बड़ी बात नहीं है, लोकतंत्र में तो सरकार झुकने के लिए ही होती है। लेकिन असल सवाल अनशन या आंदोलन से सरकार को झुकाने का नहीं, समाज के हर हिस्से से भ्रष्टाचार को हटाने की दिशा में बढ़ने का है। और यह सफलता किसी को भी रातोंरात नहीं मिल सकती।

हिन्दुस्तान दैनिक, 4 जून 2011 से साभार

www.terapanthinfo.com

सबके लिए सबक

रामदेव के आंदोलन और सरकार के तरीकों ने कुछ ऐसे सवाल उठाए हैं, जिनका जवाब सरकार के कर्त्ताधर्ताओं और आंदोलनकारी, दोनों को देना होगा।

बाबा रामदेव की राजनीति से कोई सहमत हो या असहमत, यह बात माननी होगी कि देर रात जिस तरह उनके खिलाफ कार्रवाही की गई, वह गलत थी।

एक लोकतांत्रिक समाज में ऐसे किसी आंदोलन पर आधी रात को गुपचुप छापा मारना कतई जायज नहीं है, जो आंदोलन अब तक शांतिपूर्ण था और उसके हिंसक होने का कोई अंदेशा नहीं था। बाबा रामदेव के आंदोलन के साथ सरकार ने जैसा सुलूक किया है, उससे स्थिति सुधरने की बजाय बिगड़ी ही है। पहले तो सरकार ने यही गलत किया कि कई वरिष्ठ मंत्रियों को बाबा की अगवानी करने और उन्हें समझाने-बुझाने के लिए भेज दिया। अगर सरकार यह सोचती थी कि बाबा को अतिरिक्त महत्व देकर वह अन्ना हजारे के आंदोलन के लिए एक प्रतिद्वंद्वी खड़ा कर देगी, तो यह गलत रणनीति थी। यह सच हो सकता है कि अन्ना हजारे के साथ उदारवादी और कुछ वामपंथी लोगों का जमघट देखकर दक्षिणपंथी ताकतों ने बाबा रामदेव के नेतृत्व में समानांतर आंदोलन खड़ा करने की सोची होगी। जिस तरह के लोग बाबा रामदेव के साथ हैं, उन्हें देखकर यह शक पुख्ता होता है। लेकिन बाबा को प्रोत्साहन देकर सरकार ज्यादा बड़ा खतरा मोल ले रही थी। जिस तरह बाबा को मनाने के लिए सरकार का झुकना गलत था, उतना ही गलत रातोंरात पुलिस द्वारा कार्रवाई करना था।

सरकार को यह सोचना चाहिए कि लोकतंत्र में ऐसे आंदोलनों से सरकारों का साबका पड़ता ही रहता है और उनसे निपटने का सबसे अच्छा तरीका एक संतुलित और ईमानदार रवैया अपनाना है, किसी किस्म की चतुराई अंततः महंगी पड़ सकती है। दूसरी बात, सरकार को ऐसे मामलों में जनता को विश्वास में लेना चाहिए। जनता से लगातार संवाद बनाए रखना गलतफहमियां नहीं पनपने देता। यूं भी आचार्य बालकृष्ण की लिखी चिट्ठी के सार्वजनिक हो जाने के बाद बाबा रामदेव के अनशन में कोई दम बचा नहीं था, वह वैसे ही खत्म हो जाता । सरकार के दमन ने उसे फिर नई ताकत दे दी।

सरकार ने इसमें जो गलतियां कीं, वे किसी सुलझी हुई और लोकतांत्रिक मूल्यों में रची-बसी सरकार को नहीं करनी चाहिए, लेकिन भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे नागरिकों के प्रतिनिधियों के लिए भी इसमें सबक है। सत्याग्रह एक बड़ा हथियार है और उसका मुख्य अंश 'सत्य' है। चुपचाप समझौते करके अपने सहयोगियों को अंधेरे में रखना किसी सत्याग्रह का हिस्सा नहीं हो सकता। सत्याग्रह में पूरी पारदर्शिता और दिए गए वचनों को निभाना शामिल है। अगर सत्याग्रह में सत्य नहीं है, तो उसकी नैतिक शक्ति खत्म हो जाती है। इसके अलावा सत्याग्रह पर इस तरह पैसा खर्च नहीं होता, जैसा बाबा रामदेव के कार्यक्रम में हुआ, खासकर सत्याग्रह करने कोई चार्टर्ड हवाई जहाज से नहीं आता। अगर हम समाज में ईमानदारी और शुचिता स्थापित करने के लिए लड़ रहे हैं, तो वह हमारे आचरण में भी दिखनी चाहिए। बाबा रामदेव के आंदोलन में न पारदर्शिता थी, न निर्भीकता, जो आजादी के आंदोलन में ऐसे कार्यक्रमों का आधार थी। आंदोलन को लेकर कई सरकारी दावों पर जहां विश्वास नहीं होता, वहीं बाबा रामदेव जो नए-नए आरोप टीवी के सामने लगा रहे हैं, वे भी संदेह से परे नहीं हैं। देश में जिस हद तक भ्रष्टाचार है, वह हमारे लिए वाकई कलंक है, इसलिए आम जनता में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वाले हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और समर्थन मौजूद है। यह हकीकत सरकार को समझनी चाहिए और इसे सिर्फ एक अन्ना हजारे या बाबा रामदेव से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। इसलिए सरकार को चतुराई करके पीछा छुड़ाने की बजाय कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए और जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का दावा करते हैं, उन्हें कुछ सवाल अपने बारे में भी करने चाहिए।

हिन्दुस्तान दैनिक, 7 जून 2011 से साभार

www.terapanthinfo.com

पानी की बूंद मांगेगी पैसा

नरेन्द्र देवांगन

देश का एक तिहाई से ज्यादा हिस्सा भू-गर्भ जलसंकट की चपेट में है। देश के कुल 5,723 खंडों में से 839 अत्यधिक भूगर्भ जल के दोहन के कारण निराशाजनक भू-कटिबंधों में चले गए हैं। जबकि 226 की स्थिति संकटपूर्ण और 550 अर्ध संकटपूर्ण है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु गंभीर रूप से इस संकट का सामना कर रहे हैं। जबकि उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, गुजरात और केरल भी इस समस्या से अछूते नहीं हैं। दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्रों की स्थिति और गंभीर है। दिल्ली के कुल 9 खंडों में से 7 भूगर्भ जल के अत्यधिक दोहन के कारण निराशाजनक भू-कटिबंधों में चले गए हैं। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में भी यह समस्या शुरू हो गई है। आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार राज्यों में पंजाब की स्थिति भयावह है, जहां 137 खंडों में से 103 निराशाजनक भू-कटिबंधों में, 5 संकटपूर्ण और 4 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। हरियाणा के 113 खंडों में से 55 निराशाजनक, 11 संकटपूर्ण और 5 अर्ध संकटपूर्ण हैं। रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के 237 खंडों में से 140 निराशाजनक भू-कटिबंधों में हैं, जबकि 50 संकटपूर्ण और 14 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। आंध्रप्रदेश में 219 खंड निराशाजनक भू-कटिबंधों, 77 संकटपूर्ण और 175 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। तमिलनाडु के 385 खंडों में से 142 निराशाजनक, 33 संकटपूर्ण और 57 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। उत्तरप्रदेश में भी भूगर्भ जल संकट की समस्या हो गई है। इस राज्य के 803 खंडों में से 37 निराशाजनक, 13 संकटपूर्ण और 88 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में आ गए हैं। उत्तराखंड की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है। यहां दो खंड निराशाजनक तथा तीन अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। पश्चिम बंगाल में यह समस्या शुरू हुई है। यहां के 269 खंडों में से एक संकटपूर्ण और 37 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। गुजरात के 223 खंडों में से 31 निराशाजनक भू-कटिबंधों में आ गए हैं, जबकि 12 संकटपूर्ण और 69 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं। केरल के 151 खंडों में से पांच निराशाजनक भू-कटिबंधों में हैं। जबकि 15 संकटपूर्ण और 30 अर्ध संकटपूर्ण स्थिति में हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र के असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा और बिहार में भूगर्भ जल संकट की समस्या नहीं है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर तथा झारखंड में भी भूगर्भ जल का संकट नहीं है। मध्यप्रदेश के 312 खंडों में से 24 निराशाजनक भू-कटिबंधों में 5 संकटपूर्ण और 19 अर्ध संकटपूर्ण क्षेत्र में हैं। महाराष्ट्र के 318 खंडों में से 7 निराशाजनक, 1 संकटपूर्ण और 23 अर्ध संकटपूर्ण भू-कटिबंधों में हैं।

अपना पानी खोती नदियां: वैश्विक धारा के प्रवाह को लेकर हुए एक व्यापक अध्ययन के अनुसार दुनिया के सर्वाधिक आबादी वाले कुछ क्षेत्रों में नदियां अपना पानी खो रही हैं। अमेरिका के 'नेशनल सेंटर फॉर एटमॉस्फेयरिक रिसर्च' के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में हुए इस अध्ययन के मुताबिक कई मामलों में प्रवाह के कम होने की वजह जलवायु परिवर्तन से जुड़ी हुई है। 1948 से 2004 के बीच धाराओं के प्रवाह की जांच के बाद वैज्ञानिकों ने पाया कि दुनिया की एक तिहाई सबसे बड़ी नदियों के जल प्रवाह में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इस दौरान अगर किसी एक नदी का प्रवाह बढ़ा है तो उसके अनुपात में 2.5 नदियों के प्रवाह में कमी आई है। संस्था के वैज्ञानिक और प्रमुख लेखक अगुई दाई कहते हैं कि नदियों के प्रवाह के घटने से शुद्ध जल के संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है। खासतौर पर उन इलाकों में जहां जनसंख्या बढ़ने के कारण पानी की अधिक मांग है। स्वच्छ जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है, लिहाजा इसमें कमी एक बड़ी चिंता का विषय है।

दुनिया की प्रमुख नदियों पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के बारे में वैज्ञानिकों का रूख अस्पष्ट है। कंप्यूटर मॉडल के साथ किए गए शोध के अनुसार आर्कटिक के बाहर नदियों के प्रवाह में कमी की वजह मध्य और निम्न अक्षांशों का असर और उच्च तापमान के कारण में वाष्पीकरण का होना है। इससे पहले, प्रमुख नदियों के कम व्यापक विश्लेषण से संकेत मिले थे कि वैश्विक धारा प्रवाह में वृद्धि हो रही है। दाई और उनके सह लेखकों ने दुनिया की 925 बड़ी नदियों के प्रवाह का विश्लेषण किया। इस दौरान उन्होंने कंप्यूटर के साथ-साथ धारा प्रवाह की वास्तविक माप का भी सहारा लिया है। कुल मिलाकर, इस अध्ययन से यह नतीजा निकला कि 1948 से 2004 के बीच प्रशांत महासागर में गिरने वाले नदियों के जल की वार्षिक मात्रा में 6 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई है। यानी 526 क्यूबिक किलोमीटर जो मिसिसिपी नदी से हर साल मिलने वाले पानी की मात्रा के बराबर है। हिंद महासागर के वार्षिक निक्षेप में 3 प्रतिशत या 140 क्यूबिक किलोमीटर की गिरावट है। इसके विपरीत आर्कटिक महासागर के वार्षिक निक्षेप में 10 प्रतिशत या 460 क्यूबिक किलोमीटर की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। संयुक्त राज्य अमेरिका की कोलंबिया नदी के प्रवाह में 1948-2004 के अध्ययन अवधि के दौरान 14 प्रतिशत की गिरावट आई। ऐसा मुख्यतः पानी के अत्यधिक उपयोग की वजह से हुआ।

केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय ने भूगर्भ जल के प्रबंधन, विकास और नियंत्रण को लेकर राज्यों को एक आदर्श विधेयक का मसौदा भेजा था। इस आधार पर आंध्र, बिहार, छत्तीसगढ़, चंडीगढ़, दादर-नगर हवेली, गोआ, हिमाचल प्रदेश, केरल लक्षद्वीप, पुदुच्चेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल ने कानून भी बनाए हैं। देश में वर्षा जल के संरक्षण और भूगर्भ जल के पुनर्भरण करने की नई तकनीक को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

नरेन्द्र फोटो कॉपी पोस्ट - खरोरा
जिला-रायपुर (छ.ग.) 493225

www.terapanthinfo.com

हमारी विधायिका और कार्यपालिका

आशीष वशिष्ठ

सही मायनों में सन 2010 ने लोकतंत्र के चारों खंभों को पूरी तरह से हिलाकर रख दिया है और देश की जनता के सामने ऐसे अनेक अनुतरित प्रश्न छोड़ दिये है जिनका उत्तर शायद किसी के पास नहीं है। बरसों-बरस से विधायिका और कार्यपालिका की मिलीभगत और भ्रष्टाचार से त्रस्त जनता न्यायपालिका और प्रेस की छांव में शरण पाती थी लेकिन हालिया उजागर हुए कई मामलों में न्यायपालिका और प्रेस की काली भूमिका के उपरांत लोकतंत्र के इन दोनों पाक-साफ खंभों पर से भी देश की जनता का विश्वास लगभग उठ-सा गया है।

वर्ष 2010-2011 में सिलेसिलेवार जितने घोटालों का पर्दाफाश हुआ है उसने पिछले बाकी सभी घोटालों का रिकार्ड ही तोड़ दिया है। कामनवेल्थ गेम्स घोटाला, आदर्श हाउसिंग सोसायटी घोटाला और 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले ने मिलकर देश के खजाने को इतनी भारी-भरकम चोट पहुंचाई है कि देश का विकास एक दशक सीधे पीछे खिसक गया है। सरकार और विपक्ष अपनी राजनीति बचाने और चमकाने में व्यस्त है लेकिन देश के आम आदमी के कल्याण और विकास के लिए खर्च होने वाले पैसे की जिस बेशर्मी से लूट हुई है उसे देखकर बड़े-बड़े डकैत भी शरमा जाएं। विधायिका और कार्यपालिका के चाल और चरित्र पर तो पिछले कई दशकों से अंगुलियां उठती रहीं है और दर्जनों मामले देश की जनता के सामने आ चुके हैं जिसमें सीधे तौर पर विधायिका और कार्यपालिका गुनाहगार थी। लेकिन सन 2010 में लोकतंत्र के बाकी बचे दोनों खंभों अर्थात न्यायपालिका और प्रेस पर भी भ्रष्टाचार, मिलीभगत, और भाई-भतीजावाद का कीचड़ उछला है। सही मायनों में सन 2010 ने लोकतंत्र के चारों खंभों को पूरी तरह से हिलाकर रख दिया है और देश की जनता के सामने ऐसे अनेक अनुतरित प्रश्न छोड़ दिये है जिनका उत्तर शायद किसी के पास नहीं है। बरसों-बरस से विधायिका और कार्यपालिका की मिलीभगत और भ्रष्टाचार से त्रस्त जनता न्यायपालिका और प्रेस की छांव में शरण पाती थी लेकिन हालिया उजागर हुए कई मामलों में न्यायपालिका और प्रेस की काली भूमिका के उपरांत लोकतंत्र के इन दोनों पाक-साफ खंभों पर से भी देश की जनता का विश्वास लगभग उठ-सा गया है। 2010 से पहले किसी साल में ऐसा नहीं हुआ कि एकसाथ लोकतंत्र के चारों खंभों पर कीचड़ उछला हो। ऐसे में एक बार देश की जनता ये सोचने को विवश हो गई है कि लोकतंत्र में आखिकर 'लोक' का क्या महत्त्व और स्थान है? ऐसे माहौल में जनता किसे अपना रहनुमा, सरपरस्त और हितेषी समझे और न्याय के लिए किसकी चौखट जाए और न्याय के किस मंदिर का दरवाजा बेखौफ होकर खटखटाए।

विधायिका और कार्यपालिका तो एक सिक्के के दो पहलू हैं। लोकतंत्र में ये दोनों मजबूत आधार मिलकर बरसों-बरस से देश की भोली-भाली जनता को नए-नए तरीकों से बेवकूफ बनाते रहे हैं। आजादी के बाद से अब तक हुए छोटे-बड़े घोटालों का लेखा-जोखा किया जाए तो लोकतंत्र की इन दो महत्वपूर्ण संस्थाओं ने देश की जनता के साथ कदम-कदम पर धोखा किया है। और उसके हक पर खुलेआम डाका भी डाला है। कार्यपालिका तो दूसरी भाषा में स्थायी सरकार की संज्ञा दी जाती है। विधायिका तो आती-जाती रहती है लेकिन कार्यपालिका तो लगातार शासन व्यवस्था और देश का काम-काज देखती रहती है। संविधान की व्यवस्थानुसार सारी शक्तियां विधायिका में ही निहित हैं लेकिन विधायिका को दशा और दिशा आरंभ से ही कार्यपालिका ही देती आई है। निजी और तुच्छ स्वार्थों को साधने के लिए कार्यपालिका विधायिका के काले कारनामों में खुलकर शामिल हो जाती है। अभी हाल ही में ऐसे कई मामले प्रकाश में आये हैं जिसमें वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के नाम घोटालों और धोखाधड़ी में संलिप्त पाए गए हैं। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्य सचिव नीरा यादव को नोएडा भूमि घोटाले में सजा सुनाया जाना इसका ताजातरीन मामला है। नीरा यादव की भांति दर्जनों सीनियर आईएएस अफसर विधायिका के गुनाहों के राजदार और भागीदार हैं। असल में कार्यपालिका ही विधायिका को कानूनों को धता बताने और नित नए तरीकों से चोरी करने और देश की जनता के हक की कमाई को खा जाने की तरकीबें बताने जैसे घिनौने काम करने को अपनी डयूटी का ही हिस्सा मानते हैं। चंद ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ अफसरों को महत्वपूर्ण पोस्टिंग के स्थान पर गैरजरूरी या फिर निम्न स्तर के काम में लगा दिया जाता है। विधायिका के काले कारनामों और घटिया हरकतों से तंग आकर कई वरिष्ठ आईएएस अफसर नौकरी छोड़ चुके हैं। ऐसा भी नहीं है कि विधायिका बहुत साफ-सुथरी है। क्षेत्रीय

www.terapanthinfo.com

राजनीतिक दलों का केन्द्र की राजनीति में बढ़ता वर्चस्व, गठबंधन सरकारों का गठन, धर्म, भाषा, जात-पात की ओछी और घटिया राजनीति के बोलेबाले के कारण देश में राजनीति और राजनेताओं का कद बहुत बौना हो गया है। आज राजनीति व्यवसाय बन चुकी है गिने-चुने लोगों का अगर गिनती से बाहर कर दिया जाए तो आज राजनीति में ऐसे लोगों की भारी जमात शामिल हो चुकी है जिन्हें देश की जनता के दुःख-दर्दों को दूर करने या फिर कोई भला करने के स्थान पर अपने को और मजबूत बनाने या लाखों-करोड़ों कमाने की चाहत दिल में समाई रहती है। अपराधियों, अशिक्षतों, और अनुशासनहीन लोगों की भरमार ने संसद का चरित्र, चेहरा और चाल ही बदल कर रख दी है। आज कोई व्यक्ति देश या जनसेवा के लिए नहीं बल्कि काले कारनामों को ढकने के लिए खद्दर धारण करते हैं और इस अनपढ़, अशिक्षित और अपराधी जमात की चाहतों को पूरा करने के लिए कार्यपालिका **'हम प्याला और हम निवाला'** हो जाते हैं।

आजादी के बाद देश की राजनीति में देशसेवा और जनकल्याण की भावना से आने वाले लोगों की बड़ी संख्या थी। शिक्षक, वकील, पत्रकार, डॉक्टर और समाज का अन्य बुद्धिजीवी वर्ग देश की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाते थे। विधायिका की देखा-देखी कार्यपालिका भी अपनी दशा और दिशा तय करती थी। लेकिन वक्त के साथ जैसे-जैसे राजनीति के स्तर में गिरावट आई उसी के अनुसार कार्यपालिका ने विधायिका की स्थिति का लाभ उठाया और खुलकर विधायिका की नंगई में साथ दिया। लेकिन आज से पहले इन दोनों पर अंकुश लगाने और इन के कर्मों से त्रस्त जनता को राहत देने के लिए न्यायपालिका और प्रेस मुखर होकर आम आदमी के साथ खड़े दिखाई देते थे। ये संभवतः पहला ऐसा मौका है जब लोकतंत्र के इन दोनों खंभों अर्थात न्यायपालिका और प्रेस पर भ्रष्टाचार का कीचड़ उछला है। इससे पहले भी कभी-कभार दबे-छुपे शब्दों में न्यायपालिका और प्रेस के गुनाहों में शामिल होने की बात सामने आती थी लेकिन 2010 में इन दोनों खंभों की सच्चाई भी देश की जनता के सामने आ चुकी है। सर्वोच्च न्यायालय की इलाहबाद उच्च न्यायालय के जजों पर की गई टिप्पणी और 2जी स्प्रेक्ट्रम घोटालें में देश के वरिष्ठ पत्रकारों यथा बरखा दत्त, प्रभु चावला और वीर संघवी और छोटे-मोटे कई अन्य मीडियाकर्मियों के नाम आने से बचा-खुचा विश्वास भी लोकतंत्र के इन मजबूत खंभों से जाता रहा है। सवाल यह है कि जब लोकतंत्र के चारों खंभे ही गुनाहगार हैं अर्थात पूरा तंत्र ही भ्रष्ट हो चुका है तो लोक का क्या होगा। और अगर लोक का तंत्र से विश्वास उठ जाएगा तो लोकतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्था का क्या होगा।

ऐसा नहीं है कि देश की जनता अपने प्रतिनिधियों और उनके गुरगों के काले कारनामों और कारस्तानियों से अन्जान है लेकिन जनता अब तक यही सोचती थी कि शायद देर-सबेर हालात सुधर जाएंगे, लेकिन अब तो पानी सिर से ऊपर बहने लगा है। लोकतंत्र रूपी इमारत के चारों खंभों में जब दीमक लग चुका है ऐसे में इमारत ढहने का खतरा हमेशा बना हुआ है। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और प्रेस के दागदार और अपराधों में लिप्त होने के कारण देश के विकास, आर्थिक मोर्चों और अन्य क्षेत्रों पर इसका व्यापक दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मंहगाई, बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक कुरीतियां, अपराध, भुखमरी आदि ये वो समस्याएं हैं जिनका हमारे देश के साथ मानो चोली-दामन का साथ है। जब नीचे से लेकर ऊपर तक अपराधी, भ्रष्ट और गद्दार भरे हों तो सीमापार से होने वाली गैर-कानूनी घटनाओं और आंतकवाद पर लगाम लगाने वाला कोई नहीं बचता है। देश में पनपता नक्सलवाद और अन्य अपराधिक वारदातों का ग्राफ सीधे तौर पर इस बात का संकेत है कि देश में कानून का डर और राज समाप्त हो चुका है। क्योंकि अपराधियों और गुण्डों के मन में ये बात बैठ चुकी है कि इस देश में पैसे से एक अदने सिपाही से लेकर सांसद तक को खरीदा जा सकता है। ऐसे उनमुक्त और स्वच्छंद सोच और मानसिकता के कारण देश में नियम-कानून की धज्जियां सरे आम उड़ाई जाती हैं और बदमाश खुले आम गुलछर्रे उड़ाते रहते हैं। लोकतंत्र के चारों खंभों को भ्रष्टाचार की बेल ने इतनी मजबूती से अपने शिंकजे में ले रखा है कि कोई चाहकर भी इस तंत्र से निपट नहीं सकता है। संविधान की उद्देशिका स्पष्ट शब्दों में यह घोषित करती है कि--संविधान के अधीन सभी प्राधिकारों का स्त्रोत भारत के लोग होंगे। और लोकतंत्र का सीधा अर्थ भी जनता द्वारा जनता के लिए बनाई गई सरकार ही होता है। लेकिन लोकतंत्र के सिपाही जिस तरह से एक-एक कर के देश के आम आदमी के विश्वास को ठग रहे हैं उससे तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि देश की जनता का इस लोकतांत्रिक व्यवस्था और प्रणाली से विश्वास ही नही उठ जाए और जनता गलत राह पर चल पड़े। समय रहते हमारी विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और प्रेस को अपने चरित्र, व्यवहार, कार्यशैली और चेहरे-मोहरे को बदलना होगा और नये सिरे से लोकतंत्र की स्थापना करते हुए देश की जनता में वही पुराना विश्वास और भरोसा दिलाना होगा कि लोकतंत्र में जनता ही सर्वोपरि है और देश की तकदीर और तदबीर जनता से ही जुड़ी होती है और जिस दिन ऐसा होगा वो दिन लोक और तंत्र दोनों की जीत का दिन होगा।

बी-96, इंदिरा नगर,
लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

www.terapanthinfo.com

मिलावट विरोधी अभियान

मुनि राकेशकुमार

दिल्ली और मुंबई में मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत समिति के अंतर्गत मिलावट विरोधी अभियान का कार्यक्रम सफलता के साथ आगे बढ़ा। जिससे प्रेरित होकर हजारों व्यापारियों ने मिलावट नहीं करने का संकल्प ग्रहण किया। दिल्ली में अणुव्रत व्यापारी मंडल के नाम से व्यापारियों का संगठन बना। जो कई वर्षों तक इस बुराई को मिटाने के लिए सक्रिय प्रयास करता रहा। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की एक विशेष बैठक में तत्कालीन स्वास्थ्य उपमंत्री डॉ. डी.एस. राजू ने इस अभियान की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

--संपादक

किसी वस्तु में अशुद्ध और हल्के स्तर की वस्तु का मिश्रण करना मिलावट है। स्वार्थ के वशीभूत होकर बहुत से व्यापारी इस प्रकार के निम्न और घृणित कार्य करती हैं। खाद्य-पदार्थों और औषधियों में मिलावट कितनी हानिकारक और भयानक है, यह सभी जानते हैं। फिर भी समाज में यह प्रवृत्ति व्यापक रूप से प्रचलित है। व्यापारियों के तीन वर्ग हैं--निर्माता, थोक और खुदरा। तीनों स्तर पर मिलावट होने की संभावना है। जब तक सबका सहयोग प्राप्त नहीं होगा, तब तक इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। किसी एक वर्ग के व्यापारी पर दोषारोपण करना अनुचित है। अणुव्रत की आचार-संहिता में प्रारंभ से ही मिलावट नहीं करने का संकल्प निर्दिष्ट है। समय-समय पर अणुव्रत के मंच से इस दिशा में विशिष्ट प्रयत्न होते रहे हैं। ईस्वी सन् 1962 में मेरा चातुर्मास दिल्ली के नया बाजार में स्थित विरदीचंद जैन स्मृति भवन में था। नया बाजार खाद्यान्न व्यापारियों का प्रमुख केन्द्र है। हमारे निवास स्थान के निकट में अनेक व्यापारी संगठनों के कार्यालय थे, जिनका विविध प्रकार के खाद्यान्नों से संबंध था। अणुव्रत के कार्य की दृष्टि से उन संगठनों के पदाधिकारियों से सहज संपर्क हो गया।

उसी वर्ष भारत और चीन के मध्य युद्ध की दुःखद और अप्रत्याशित घटना घटी। युद्ध विराम के बाद सारे राष्ट्र में एकता और नव जागरण की लहर उत्पन्न हुई। उससे प्रेरित होकर व्यापारी संगठनों ने भी एकता और नैतिकता के स्वर को सबल बनाने का संकल्प किया। उस प्रेरणा से अणुव्रत के कार्यक्रमों के साथ उनका विशेष संबंध स्थापित हुआ। उस समय दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति बहुत सक्रिय थी। पूर्व विकास मंत्री गोपीनाथ अमन समिति के अध्यक्ष थे। अमन साहब अणुव्रत से संबंधित कार्यक्रमों और संगोष्ठियों में हार्दिक रुचि से सम्मिलित होते थे। अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने व्यापारिक क्षेत्र में अणुव्रत अभियान को आगे बढ़ाने में बहुत रुचि दिखाई। सर्वप्रथम खाद्यान्न से संबंधित प्रमुख व्यापारी संगठनों के प्रतिनिधियों की संगोष्ठी आयोजित हुई। जिसमें पच्चीस-तीस संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उपस्थित लोगों ने अणुव्रत समिति के इस अभियान को आगे बढ़ाने में सहयोग देने का आश्वासन दिया। व्यापारी समाज में अणुव्रत का यह पहला व्यापक संपर्क था। प्रतिनिधियों की संगोष्ठी में अनेक संगठनों की ओर से कार्यक्रम निर्धारित किए गए। पहला विशाल आयोजन नया बाजार में ही फूड ग्रेन डीलर्स एसोसिएशन की ओर से आयोजित किया गया। उसमें हजार से भी अधिक व्यापारी सम्मिलित हुए। भारत सरकार के तत्कालीन वित्त मंत्री मोरारजी देसाई ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। मेरे भाषण के बाद अणुव्रत आचार संहिता का भी वाचन हुआ। सैकड़ों व्यापारियों ने खड़े होकर अणुव्रत की प्रतिज्ञाएं ग्रहण की तथा संकल्प पत्र भी भरे। उसके बाद अन्य संगठनों की ओर से भी कार्यक्रम संपन्न हुए। जिसमें सरकार और नगर निगम के विशिष्ट प्रतिनिधियों की भी उपस्थिति रहती थी। उन दिनों नगर निगम के अधिकारियों की ओर से मिलावट की बुराई रोकने का सक्रिय अभियान चालू था। इसलिए जब भी व्यापारियों में अणुव्रत का कोई कार्यक्रम होता तो वह मिलावट की समस्या पर केन्द्रित हो जाता। जब सरकारी कानून अव्यावहारिक होते हैं या कानून को क्रियान्वित करने वाले सरकारी अधिकारी स्वयं अनैतिक आचरण करते हैं तब बुराई तो नहीं मिटती है, उसके साथ नई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। व्यापारियों के विविधमुखी विचार सुनने से इस संबंध में कई नए अनुभव मिले। मिलावट की समस्या के लिए व्यापारी तो जिम्मेदार हैं ही, उसके साथ सरकारी तंत्र भी कुछ सीमा तक जिम्मेवार हैं, उनका सुधार होने से ही इस बुराई का निराकरण हो सकता है। इस आधार पर चारों ही क्षेत्रों के प्रमुख लोगों से संपर्क बनाया गया। केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमंत्री डी.एस. राजू उसी संदर्भ में विशेष संपर्क में आए। अणुव्रत समिति द्वारा इस प्रकार का प्रयत्न देखकर वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अणुव्रत की अनेक गोष्ठियों में भाग लिया। नगर निगम की स्वास्थ्य समिति के पदाधिकारी भी निकट संपर्क में आए। जिस क्षेत्र में अणुव्रत व्यापारी सम्मेलन का आयोजन होता वहां के जन-प्रतिनिधि भी आयोजन में सम्मिलित होते। इस प्रकार दिल्ली के अनेक स्थानों पर अणुव्रत के समर्थक और सहयोगी व्यापारियों और जन-प्रतिनिधियों का समूह तैयार हुआ।

मिलावट विरोधी अभियान को आगे बढ़ाने में सब्जी मंडी क्षेत्र के व्यापारियों ने सबसे अधिक रुचि ली। वहां व्यापारी संगठन के अध्यक्ष ज्ञानचंद और मंत्री

www.terapanthinfo.com

प्रह्लाद राय ने अपने प्रयत्नों से सैकड़ों व्यापारियों को अणुव्रत के साथ जोड़ा और मिलावट नहीं करने का संकल्प कराया। वहां अणुव्रत व्यापारी मंडल की भी स्थापना हुई। उन्होंने उस मंडल के सदस्य को एक प्रतीक चिह्न देने का निर्णय किया। उस प्रतीक चिह्न का दुकानों पर उपयोग भी हुआ। मंडल के सदस्यों के लिए विशेष वेश-भूषा का निर्धारण भी उन्होंने किया। जब अणुव्रत के कार्यक्रमों और यात्रा-आयोजनों में वे सम्मिलित होते तो उस वेश-भूषा का उपयोग भी करते। नगर निगम की स्वास्थ्य समिति की मीटिंग में मिलावट की समस्या पर जब चर्चा हुई तो समिति के अध्यक्ष ने अणुव्रत समिति द्वारा संचालित मिलावट विरोधी अभियान को बहुत उपयोगी बताया।

दो वर्षों के दिल्ली प्रवास में अणुव्रत से संबंधित व्यापारियों का संगठन बहुत व्यवस्थित बन गया था। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. डी.एस. राजू इससे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने स्वास्थ्य समिति की मीटिंग में इस कार्य की मुक्त कंठ से सराहना की। मेरे विहार के बाद गुरुदेव तुलसी का दिल्ली पधारना हुआ। गुरुदेव के सान्निध्य में जब व्यापारियों का सम्मेलन आयोजित हुआ, तो स्वास्थ्य उपमंत्री डी.एस. राजू ने भी उसमें भाग लिया तथा अणुव्रत समिति द्वारा संचालित मिलावट विरोधी अभियान को देश के लिए अनुकरणीय आदर्श बताया। गुरुदेव के पदार्पण के अवसर पर आयोजित स्वागत यात्रा में अणुव्रती व्यापारियों ने अपनी निर्धारित वेशभूषा में उत्साहपूर्वक भाग लिया। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में इस अभियान को आशीर्वाद प्रदान किया।

दिल्ली के बाद सन् 1964 में मेरा मुंबई चातुर्मास हुआ। पिछले अनुभवों के आधार पर वहां भी मिलावट विरोधी अभियान का आरंभ किया गया। मुंबई में अणुव्रत समिति का नया संगठन बना था। कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह था। राज्य के शिक्षा उपमंत्री डॉ. कैलाश एन. एन. समिति के अध्यक्ष थे। दिल्ली के व्यापारी वर्ग से संपर्क बनाना जितना आसान था उतना मुंबई में नहीं था। चातुर्मास स्थल से खाद्यान्न से संबंधित व्यापारियों के केन्द्र बहुत दूर थे। इसलिए शुरुआत में समय और श्रम काफी लगा। दोपहर की गर्मी से तपी हुई भीड़ भरी सड़कों पर नंगे पांव गुजरते हुए विशेष तपस्या का अनुभव हुआ। संपर्क और परिचय होने के बाद संबंधित संगठनों के पदाधिकारियों ने बहुत अधिक रुचि दिखाई। उनके सहयोग से मरीन ड्राइव स्थित चातुर्मास स्थल में छोटी-छोटी कई अणुव्रत गोष्ठियों का आयोजन हुआ। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बी.पी. नाईक से अणुव्रत और मिलावट विरोधी अभियान के संबंध में कई परिचर्चाएं हुईं। दीपावली के कुछ दिन पूर्व बाम्बे ग्रेन डीलर्स एसोसिएशन की ओर से मिलावट विरोधी अणुव्रत सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यमंत्री नाईक, विधान सभाध्यक्ष टी.एस. भारदे, स्वास्थ्य उपमंत्री एच.जी. वर्तक व उप शिक्षा मंत्री डॉ. कैलाश एन.एन. ने भी भाग लिया। तीस से अधिक व्यापारी संगठनों के प्रतिनिधि सम्मेलन में उपस्थित थे। व्यापारियों ने मिलावट की बुराई को रोकने के लिए कई व्यावहारिक सुझाव दिए। मुख्यमंत्री व अन्य उपस्थित राजनेताओं ने उन सुझावों को उचित बताया। स्वास्थ्य मंत्री एच.जी. वर्तक ने व्यापारियों की समस्या को केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री के पास लिखित रूप से भेजने का आश्वासन दिया। सम्मेलन का सारा कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर साढ़े चार सौ से अधिक व्यापारियों ने खड़े होकर मिलावट नहीं करने का संकल्प ग्रहण किया। स्थानीय हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती और मराठी भाषा के समाचार पत्रों ने मिलावट विरोधी सम्मेलन के समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया।

कुछ समय पश्चात् मिलावट की समस्या पर एक उच्च स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. सुशीला नैय्यर इस संगांष्ठी के लिए दिल्ली से मुम्बई आई। मुंबई नगर निगम के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। निगम की स्वास्थ्य समिति ने इस कार्यक्रम का सारा दायित्व निभाया। सूचना परिपत्र का प्रसारण स्वास्थ्य समिति और अणुव्रत समिति द्वारा संयुक्त रूप से हुआ। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री ने संगोंष्ठी की अध्यक्षता की। सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। स्वास्थ्य मंत्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि व्यापारी संगठनों के पदाधिकारी अधिकतर अपने हित और अधिकार की बात सरकार के समक्ष प्रस्तुत करते हैं पर आज अधिकार से अधिक कर्त्तव्यनिष्ठा के स्वर सुनकर मुझे विशेष प्रसन्नता का अनुभव हुआ है। नगर निगम की स्वास्थ्य समिति के पदाधिकारियों और कर्मचारियों ने भी इस अभियान को आगे बढ़ाने में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

अहमदाबाद चातुर्मास संपन्न कर गुरुदेव मद्रास चातुर्मास से पूर्व मर्यादा महोत्सव हेतु मुंबई महानगर में पधारे। उस समय उपनगर और नगर में जहां भी पदार्पण हुआ वहां मिलावट विरोधी अभियान के माध्यम से जो लोग संपर्क में आए थे, उन्होंने गुरुदेव के सान्निध्य का श्रद्धा भावना से लाभ प्राप्त किया। मुंबई में खाद्यान्न से संबंधित व्यापारी वर्ग में कच्छ (गुजराती) जैन समाज के हजारों सदस्य हैं। उन्होंने तेरापंथ से संपर्क का प्रथम बार अवसर प्राप्त किया। जिनमें मन में आचार्य भिक्षु के विचारों के प्रति भ्रांतियां थीं उनका निराकरण हुआ। विधानसभा के मानसून अधिवेशन में नैतिक शिक्षा से संबंधित चर्चा में शिक्षा उपमंत्री डॉ. कैलाश एन.एन. ने मुंबई में अणुव्रत के द्वारा शिक्षा और व्यापार जगत में जो कार्य हुआ उसकी प्रभावक प्रस्तुति दी। जब मुंबई से रायपुर (छत्तीसगढ़) की ओर हमारा विहार हुआ तब वहां के प्रमुख हिन्दी पत्र नवभारत टाइम्स तथा गुजराती पत्र जनशक्ति ने मिलावट विरोधी अभियान का अनुमोदन करते हुए जनता को अणुव्रत के कार्यों में सहयोगी बनने का आह्वान किया।

www.terapanthinfo.com

नैतिक अवमूल्यन की ओर भारत

सुषमा जैन

महावीर ने जिस देश में करुणा, दया, प्रेम और सह-अस्तित्व की गंगा प्रवाहित कर समस्त विश्व को शान्ति का मार्ग सुझाया हो, उसी युग पुरुष महावीर की जप-तप मोक्ष स्थली भारत में यदि राष्ट्र को पीड़ा देने वाली अद्यम और पतित स्थिति के चिंतन करने का अवसर आ जाये तो यह उस राष्ट्रवासियों के लिए कितने शर्म और अमंगल की बात है? भगवान महावीर सच्चे अर्थों में वर्गोदय के विरुद्ध और सर्वोदय के प्रबल समर्थक थे। परन्तु आज यह देखकर कलेजा मुंह को आ जाता है कि सभी राजनीतिक दल राजनीतिक महत्वाकांक्षा और स्वार्थपूर्ति के लिए देश को जाति, वर्ग और संप्रदाय में बांटने का घिनौना कार्य कर राष्ट्रहित की बलि देने पर तुल गये हैं। राजनीति के धंधेबाजों की कुटिल चालों के चलते राष्ट्र में अलगाववादी विचारधारा विध्वंसक रूप से फलफूल रही है। पिछले दिनों कभी गुर्जर आंदोलन के नाम पर तो कभी जाट आरक्षण को लेकर राष्ट्रीय संपत्ति एवं जन-व्यवस्थाओं को अस्त-व्यस्त कर आम आदमी को बुरी तरह पीस कर रख दिया गया। कितने हैरत की बात है कि एक बड़ा तबका आरक्षण की मांग लेकर पानी, दूध, सब्जी तक की आपूर्ति बंद करने की धमकी दे दे और राजनेता खड़े- खड़े तमाशा देखते रहें। आंदोलनकारियों की बढ़ती संख्या उसमें महिलाओं की भागीदारी तथा खान-पान का पूरा इन्तजाम यह स्पष्ट करने के लिए काफी है कि आंदोलनकारियों ने पूरी सक्रियता के साथ अन्दर ही अन्दर आसपास के क्षेत्रों तक में होमवर्क किया था और उनके इस आंदोलन को पूरी तरह हवा दी वोटों के सौदागरों ने।

राजनेता राष्ट्रहित में कठोर निर्णय तो क्या लेंगे बल्कि तुष्टीकरण की राजनीति करते हुए हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच गहरी खाई खोदने के प्रयास किये जा रहे हैं। क्या इससे भी अधिक कुछ शर्मनाक, आपत्तिजनक और दुर्भाग्यपूर्ण हो सकता है कि एक लम्बे समय तक देश का वित्तमंत्री रह चुका और अब गृह मंत्रालय की महत्वपूर्ण कमान संभालने वाला व्यक्ति यह कहकर शूल चुभो दे कि यदि देश में केवल दक्षिणी और पश्चिमी हिस्से होते तो भारत कहीं अधिक खुशहाल होता? क्षेत्रवाद के सहारे सत्ता की सीढ़ियां नापने वाले आखिर यह क्यों भूल जाते हैं कि यदि उत्तर भारत पिछड़ा है तो इसके लिए उत्तर भारत के नेताओं के साथ-साथ वे भी बराबर के जिम्मेवार हैं? क्षेत्र विशेष के प्रति दुराव रखने वाले ये ही वे लोग हैं जो संकीर्ण राजनीति के चलते या तो राज्य विशेष पर अपनी कृपा लुटा रहे हैं या उन्हें अपेक्षित कर विकास के लिए तरसने को मजबूर कर रहे हैं। जब राज्यों को अनुदान और रियायतें देने में भेदभाव किया जायेगा तो उनका समान रूप से विकसित होना कैसे संभव है?

जिस प्रकार अन्ना हजारे ने सड़ी गली व्यवस्था के विरुद्ध, जन लोकपाल विधेयक के लिए शान्तिपूर्ण आमरण अनशन किया और इस अहिंसक आंदोलन में पूरे देश ने एक होकर सरकार को झुकने पर विवश कर दिया, उसके मद्देनजर राष्ट्र के भविष्य के निर्णय और निर्माण में लगे लोग यह पुनः पूरी तरह महसूस करते हैं कि राष्ट्र के सुख-समृद्धि और शान्ति का मार्ग भगवान महावीर के संदेशों में ही निहित है।

महावीर ने जिस भारत में अपरिग्रह की संकल्पना को न केवल साकार रूप प्रदान किया बल्कि उसे व्यवहार में उतारने का भी सरल मार्ग सुझाया, आज उसी भारत के रक्षक कहे जाने वाले लोग न्याय, नैतिकता, मित्रता तथा राष्ट्रीयता सभी कुछ ताक पर रखकर जनता की गाढ़ी कमाई के पैसों को बेरहमी से लूट, संग्रह में संलिप्त हैं। धन-तंत्र और लूट तंत्र में तबदील होते लोकतंत्र में कोई राजनीतिक दल ऐसा नहीं है जिसके मुंह पर भ्रष्टाचार की कालिख न पुती हो। निकट अतीत और वर्तमान में जिस प्रकार ताबड़तोड़ नये-नये घोटालों का पर्दाफाशत हो रहा है, उसे देखकर तो यही लगता है कि घोटाले राजनीतिक संस्कृति का अंग बन चुके हैं। आखिर देश को दीमक की तरह चाट कर खोखला कर रहे घोटालेबाजों की गर्दन कौन दबोचेगा? 121 करोड़ जनता पर मात्र 543 लोगों का भारी पड़ना क्या हैरतअंगेज नहीं है? सुप्रीम कोर्ट की तरह आम आदमी भी इस गहन उलझन में है कि आखिर केन्द्र सरकार काले धन की जांच के लिए विशेष जांच दल गठित करने से इंकार कर क्यों इस पर पर्दा डालने पर तुली हुई है? भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने और विशेष रूप से जन-लोकपाल बिल को स्वीकार करने के मामले में कैन्द्र का उदासीन और अड़ियल रवैया क्या यह स्पष्ट करने के लिए काफी नहीं था कि यह सरकार भ्रष्टाचार से

www.terapanthinfo.com

लड़ने के नाम पर सिर्फ खोखले वायदे कर जनता को मूर्ख बना रही थी, उसके धैर्य की परीक्षा लेने में लगी थी? नख-शिख-दंत विहीन लोकपाल बनाना चाहने वाली सरकार को यह मालूम होना चाहिए था कि जनता के सब्र का पैमाना अब पूरी तरह छलक चुका है। और भ्रष्टाचार के जिन्न के सामने गांधीवादी, समाजसेवी अन्ना हजारे सीना तानकर आ खड़ा हुआ है। और उनको मिलता पूरे देश का व्यापक समर्थन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जनता को सरकार पर नहीं बल्कि जनशक्ति पर विश्वास है।

सिर्फ सत्तापक्ष ने ही नहीं बल्कि प्रधानमंत्रीजी ने भी विकिलीक्स के खुलासे को कपोल कल्पित माना था। उनका दृष्टिकोण सही हो सकता है परन्तु वह दृश्य कैसे भुलाया जा सकता है जिसमें पूरे देश ने टीवी पर संसद में नोटों की गड्डियां लहराते देखी थीं। संसद में नोट ले जाने वाले और लहराने वाले दोनों मौजूद हैं। यदि नोट कांड में भाजपा का हाथ था तो उस पर कार्यवाही न करके सत्तापक्ष ने विपक्ष पर मेहरबानी क्यों दिखाई? असलियत यह है कि केन्द्रीय सत्ता किन्हीं अज्ञात कारणों से इस मामले की सच्चाई को दफन कर भ्रष्ट तत्वों पर कार्यवाही करने से जान-बूझकर बच रही है। अब यह कहने में कोई संशय नहीं कि चाहे नोट देकर सांसद खरीदने का मामला हो या राष्ट्रमंडल खेलों में खेला गया पैसे का खेल, चाहे सीवीसी पद पर थॉमस जैसे अयोग्य व्यक्ति को बनाये रखने का प्रकरण हो या फिर विदेशों में काला धन जमा करने वालों के नाम उजागर करने की बात, सरकार ने एक के बाद एक लापरवाही प्रदर्शित कर यही साबित किया है कि वह भ्रष्टाचार के विरुद्ध नहीं बल्कि भ्रष्टाचारियों के साथ है।

राजनीति में यदि नोट के बदले वोट की परंपरा न पड़ती तो गरीब योग्य व्यक्ति भी चुनाव जीत सकता था। अब तो केवल वही उम्मीदवार चुनाव जीतने में सक्षम है, जो गुपचुप तरीकों से बड़े पैमाने पर धन खर्च करने का जुगाड़ कर लेते हैं। इसीलिए चुनावों में पैसे वाले भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, राष्ट्रद्रोही सभी आसानी से जीत रहे हैं। चुनाव संबंधी आचार संहिता को ताक पर रखकर राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है। चुनावों में वोट खरीदने के लिए तमिलनाडु के अलावा पश्चिम बंगाल और केरल में जब 42 करोड़ से अधिक की नकदी और साढ़े पांच करोड़ का सोना पकड़ा जा चुका है तो जाहिर है कि इससे कई गुणा अधिक पैसा वोटरों तक पहुंचाया जा चुका होगा। पद, पैसा प्रतिष्ठा पाने के लिए राजनीतिक दल बहेलिए की तरह प्रपंच का जाल बिछाकर भोले-भाले वोटरों को फंसा रहे हैं।

तमिलनाडु चुनावों में तो द्रमुक और अन्नाद्रमुक के बीच मतदाताओं को रिझाने के लिए लोकलुभावन घोषणाओं की ऐसी दिलचस्प होड़ लगी कि दोनों एक-दूसरे को पूरी तरह मात देने में लग गये। द्रमुक ने अपने घोषणा पत्र में वायदा किया है कि उनकी सरकार महिलाओं को मुफ्त ग्राइंडर, प्रोफेशनल कॉलेज के विद्यार्थियों को मुफ्त लैपटाप, बीपीएल परिवारों को 35 किलो मुफ्त अनाज व अन्य कर्ज सुविधाएं देगी। ऐसे में अन्नाद्रमुक ने दो कदम आगे बढ़कर सभी राशन कार्ड धारकों को 20 किलो मुफ्त अनाज, 11वीं कक्षा तथा इससे ऊपर के विद्यार्थियों को मुफ्त लैपटाप, बीपीएल परिवारों को मुफ्त पंखे, मिक्सर ग्राइंडर, मिनरल वाटर और महिलाओं के मंगलसूत्र के लिए चार ग्राम सोना देने तक का वायदा कर लिया। भोली-भाली जनता इनके जाल में फंसकर यह भूल जाती है कि आखिर चुनाव के बाद इससे कई गुणा उनसे ही वसूला जाने वाला है। जीत के बाद ये सीना ठोककर भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं। पकड़े जाने का इन्हें भय नहीं। यदि पकड़े भी गये तो इनके लिए नामी-गिरामी, तेज-तर्रार वकीलों की भारी-भरकम फौज परन्तु अभियोजन पक्ष के लिए एक साधारण से वकील का भी टोटा।

परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि जिस प्रकार अन्ना हजारे ने सड़ी गली व्यवस्था के विरुद्ध, जन लोकपाल विधेयक के लिए शान्तिपूर्ण आमरण अनशन किया और इस अहिंसक आंदोलन में पूरे देश ने एक होकर सरकार को झुकने पर विवश कर दिया, उसके मद्देनजर राष्ट्र के भविष्य के निर्णय और निर्माण में लगे लोग यह पुनः पूरी तरह महसूस करते हैं कि राष्ट्र के सुख-समृद्धि और शान्ति का मार्ग भगवान महावीर के संदेशों में ही निहित है।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार
न्यू कृष्णा नगर, जैन बाग,
वीरनगर, सहारनपुर--247001 (उ.प्र.)

जिस प्रकार भौतिक जीवन के लिए भोजन की आवश्यकता होती है,
उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन के लिए अध्ययन ही खुराक है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

www.terapanthinfo.com

श्रद्धा-सुमन

कर्मयोगी डालचंद चिंडालिया

प्रो. डॉ. छगनलाल शास्त्री

सात्विक महत्त्वाकांक्षा, लगन एवं अपरिश्रान्त उद्यम के बल पर व्यक्ति कहां से कहां पहुंच जाता है, श्री डालचंद चिंडालिया का जीवन वृत्त इसका ज्वलंत उदाहरण है। आज वे हमारे बीच नहीं रहे, उसकी पीड़ा हम भुलाये नहीं भूलते किन्तु विधि-विधान के आगे किसका बल चलता है। मेरे सार्वजनिक क्षेत्र के वे निकटतम विनीत साथी थे तथा अपने जीवन की घटनाएं मुझे समय-समय पर आद्योपांत सुनाया करते थे।

बहुत छोटे रूप में अल्पतम पूँजी के साथ व्यापार का शुभारंभ कर वे किस प्रकार उत्तरोत्तर आगे बढ़ते गए, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। आज तो उनका भवन एक व्यापारिक कॉम्पलैक्स का रूप ले चुका है। उनकी एक विलक्षण बात थी, वह लाखों में नहीं मिलती। वे व्यापार में प्राप्त सफलताओं द्वारा जीवनपथ में कभी गुमराह नहीं हुए। धन, सांसारिक योग-सुख को उन्होंने कभी जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं माना। यही कारण था कि उनके जीवन में सामाजिकता-धार्मिकता का विवेकपूर्ण सामंजस्य था। वे धार्मिक क्षेत्र में जितने जागरूक थे, वैसी धर्मनिष्ठा वर्तमान में दुर्लभप्रायः है। तेरापंथ की इस राजधानी में श्रावक समाज में जैसी जागरूकता होनी चाहिए, खेद है, वैसी दृष्टिगोचर नहीं होती है।

मैं अपने युवाकाल से ही इस धर्मसंघ की विद्या, साहित्य एवं प्रचार-प्रसारमूलक प्रवृत्तियों का न केवल प्रत्यक्ष द्रष्टा ही रहा हूं अपितु सर्वात्मना समर्पण भावपूर्वक इनमें सक्रिय भी रहा हूं। अतीत में श्रावक समाज में जो धर्म के प्रति ललक थी, वह बढ़ी नहीं अपितु कम होती जा रही है।

''कीर्तिर्यस्य स जीवति''-- अर्थात् जिसकी प्रशस्ति विद्यमान रहती है, वही वस्तुतः जीवित है। डालचंद चिंडालिया अपने भौतिक शरीर से तो हमारे साथ नहीं हैं किन्तु अपने उज्जवल-निर्मल कार्यों द्वारा सदैव हमारे बीच विद्यमान रहेंगे तथा भावी कार्यकर्ताओं के लिए उनकी पुण्य स्मृति सदैव प्रेरणास्पद रहेगी।

श्री चिण्डालिया इसे अनुभव करते थे, अतः इसे अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु वे सदैव तत्पर रहे।

उनके जीवन में दिव्य संतुलन था। उन्होंने अपने पुत्रों को सुयोग्य, व्यवहार-कुशल और कार्यक्षम बनाया। ज्यों-ज्यों उत्तराधिकारी सक्षम होते गए, वे व्यापार से धीरे-धीरे विरति लेते हुए अपने जीवन का अधिकतम समय धार्मिक क्षेत्र में देने लगे।

धर्म केवल शुष्क चर्चा या प्रचारात्मक बातें करने में नहीं है, स्वयं के जीवन में उसकी अवतारणा होनी चाहिए। वे संत-सतियों के प्रवचनों में नियमित रूप से उपस्थित होते थे। श्रावक के बारह व्रतों को उन्होंने स्वीकार किया था, जो अणुव्रत, शिक्षाव्रत, दिग्व्रत, उपभोग-परिभोग-परिमाणव्रत के रूप में शास्त्रों में वर्णित है। रात्रि भोजन का उन्होंने परित्याग किया था।

जाति, वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय भेद से दूर, सर्वथा लोककल्याणकारी, धार्मिक जगत् के महान् संत, विश्ववंद्य आचार्य तुलसी द्वारा संप्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार के साथ उन्होंने अपने जीवन को विशेष रूप से जोड़ा, यह उनके जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निर्णय रहा। वे अणुव्रत महासमिति एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति की कार्यकारिणी के सदस्य रहे तथा चुरू जिला अणुव्रत समिति के प्रभारी के रूप में वे इस क्षेत्र में दीर्घकाल से अपनी सक्रिय सेवा देते आ रहे थे।

इस जुझारु कार्यकर्ता ने सदैव यह प्रयास किया कि यह आंदोलन श्रावक समाज के बाहर भी फैले। एतदर्थ वे सबसे संपर्क साधते, संस्थाओं से संपर्क करते एवं गणमान्य जनों को सोत्साह प्रेरित करते। सरदारशहर में अणुव्रत समिति का गठन उनके ऐसे ही प्रयासों का मूर्त्त रूप था।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा उद्बोधित जीवन विज्ञान विषय के संदर्भ में उन्होंने अद्भुत एवं सराहनीय प्रयास किया। सरदारशहर स्थित सेठ बुद्धमल दूगड़ महाविद्यालय में जीवन विज्ञान विभाग की स्थापना, मान्यता तथा भवन निर्माण

www.terapanthinfo.com

आदि व्यवस्थाओं के मूल में उन्हीं का श्रम था। उम्मेदमल दूगड़ (जौहरी) को विशेष रूप से प्रेरित करने के अलावा पत्राचार आदि हेतु मेरा भी सहयोग लिया।

वे बड़े गुणग्राही थे। महत्वपूर्ण अभिनंदन-पत्रों आदि एवं अन्य आवश्यक लेखन हेतु समयपूर्व सूचना देते एवं जिस भावपूर्वक अनुरोध करते, मुझे वह कार्य सुंदर रूप में संपादित करने में आत्मपरितोष का अनुभव होता। इन सबमें उनका सर्वतोभावेन समर्पण, लगन और निष्ठा ही मुख्य हेतु बनते।

दिल्ली, भिवानी, उदयपुर, लाडनूं, श्रीडूंगरगढ़, मोमासर आदि अनेक स्थानों पर अणुव्रत विषयक गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में उनके साथ भाग लेने का अवसर मिला। वे बड़े विनीत एवं सेवाभावी थे, उनके साथ की गई यात्राएं किसी संस्मरण से कम नहीं हैं।

सरदारशहर के इस सपूत का जन्म 31 अगस्त 1940 को पिताश्री सम्पत रामजी एवं माता श्रीमती छगनीदेवी के यहां हुआ। वे बाबाजी श्री रायचंदजी एवं श्रीमती भंवरीदेवी के दत्तक पुत्र थे, बड़ी लगन से इनकी सेवासुश्रूषा की। बाबाजी द्वारा किराये पर दिए गए भवन को किसी तरह खाली करवाकर उन्होंने अपना व्यापार शुरू किया और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

श्री चिण्डालिया के श्री सिद्धार्थ, सुभाष और संजय--तीन पुत्र तथा सरला, सोमलता दो पुत्रियां हैं। पुत्री सरला आचार्यश्री तुलसी के कर-कमलों से संचित्तयशाजी के रूप में दीक्षित हैं। सभी पुत्र पिता के चरणचिह्नों पर चलते हुए उत्तरोत्तर प्रगतिशील हैं। यह सब उन दिवंगत सत्पुरुष का ही पुण्य-प्रताप है।

धर्मसंघ में उनकी अप्रतिम सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए परमाराध्य आचार्य महाप्रज्ञ ने सन् 2006 में उन्हें श्रद्धानिष्ठ श्रावक एवं सन् 2010 में ''अणुव्रत सेवी'' के संबोधन से अलंकृत किया।

1 जून 2011 को वे हृदयाघात के चलते असमय ही हमारे बीच से विदा हो गए। यह न केवल उनके परिवार के लिए ही अपूरणीय क्षति है वरन् समस्त धर्मसंघ और अणुव्रत कार्यक्षेत्र में इससे जो रिक्तता आई है, उसकी निकट समय में पूर्ति दृष्टिगोचर नहीं होती।

''कीर्तिर्यस्य स जीवति''-- अर्थात् जिसकी प्रशस्ति विद्यमान रहती है, वही वस्तुतः जीवित है। आचार्यश्री द्वारा दिए गए अलंकरण उनके व्यक्तित्व का वस्तुतः सही अंकन था। डालचंद चिंडालिया अपने भौतिक शरीर से तो हमारे साथ नहीं हैं किन्तु अपने उज्जवल-निर्मल कार्यों द्वारा सदैव हमारे बीच विद्यमान रहेंगे तथा भावी कार्यकर्ताओं के लिए उनकी पुण्य स्मृति सदैव प्रेरणास्पद रहेगी।

कैवल्य धाम
शारदा पुस्तक मंदिर,
सरदारशहर, चुरू (राजस्थान) 331403

आम का पेड़

आज वह आम का पेड़
कट गया।
बहुत चीखा है वह
उसने सारे गाँव को आवाज़ें लगाई,
पर कोई नहीं आया
उसके बचाव को,
बच्चे घेरा बाँध कर उसके
पार्थिव शरीर के इर्द–गिर्द
खड़े हो गये कि सत्तो ताई
भी लाठी टेकती आ गई।
फफ़क–फफ़क कर रो पड़ी,
आम के पेड़ से बोली,
तू भी मेरी तरह बूढ़ा हो गया था
तुझे भी बूढ़ा आम कहते थे
इसीलिए तुझे काट दिया।
भूल गये सब तेरी घनी छाँव,
तेरी मीठी अम्बियाँ,
बच्चों का तेरे आँचल में छुपना
और चटकारे लगाकर तेरे फल खाना,
''मेरा प्रणाम है तुझे,
तू रखवाला था, मतवाला था,
शान था इस गाँव की।''
यह कहकर सत्तो ताई, अपने झुर्रियों
वाले हाथ–पैर निहारने लगी,
आम की निष्प्राण देह देखकर अपना
भविष्य देखने लगी।

■ **शबनम शर्मा**
नवाब गली, नाहन, जिला सिरमौर, हि.प्र. -173001

धर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं--अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है और तपस्या धर्म है। जिस आदमी के जीवन में धर्म होता है या धर्म जिसके मन में रम जाता है अथवा जिसका मन धर्म में रम जाता है, उसे मनुष्य ही क्या, देवता भी नमस्कार करते हैं।

-- आचार्य महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

पर

शत-शत अभिवन्दन

श्रद्धावनतः

श्री सुभाषचन्द्र जैन, श्रीमती राममणी जैन

3395, कान्तिपुरा, जेल गार्डन रोड

रायबरेली (उत्तर प्रदेश) 229001

दूरभाष : 9415034059

अनिवार्य हो धूम्रपान शब्द का त्याग

सीताराम गुप्ता

हमें अपने जीवन में पग-पग पर नसीहतें देखने-सुनने को मिलती हैं। ये मत करो वो मत करो। ये मत खाओ वो मत खाओ। यहाँ मत आओ वहाँ मत जाओ। माता-पिता, अध्यापक, आस-पड़ौस के बुज़ुर्ग, धर्मोपदेशक, तांत्रिक-ज्योतिषी, पुलिस-प्रशासन और अन्य सभी शुभचिंतक इसी नेक काम को अंजाम तक पहुँचाने में लगे रहते हैं। लेकिन असर वही ढाक के तीन पात। कभी-कभी तो मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की वाली स्थिति पैदा हो जाती है।

आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से भी स्पष्ट होता है कि इस प्रकार की नसीहतें अथवा चेतावनी उल्टा असर डालती है। जहाँ लिखा होता है यहाँ गंदगी फैलाना मना है वहीं सबसे ज़्यादा गंदगी देखने को मिलती है। धूम्रपान भी इसका अपवाद नहीं है। जहाँ लिखा होता है धूम्रपान वर्जित क्षेत्र अथवा यहाँ धूम्रपान करना मना है या धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वहाँ लोग ज़रूर धूम्रपान करते हैं इसके लिए चाहे उन्हें बिना वजह के ही यूरिनल अथवा वॉशरूम क्यों न जाना पड़े। यही स्थिति मद्यपान के साथ भी है।

सरकार ने हर सड़क, हर गली के मोड़ पर बड़े-बड़े होर्डिंस लगवा रखे हैं जिन पर लिखा है कि शराब पीना सेहत के लिए नुक़सानदायक है अथवा मद्यपान एक सामाजिक बुराई है। इसके बावजूद शराब की बिक्री के रिकॉर्ड टूट रहे हैं। सिगरेट की डिब्बियों पर लिखी चेतावनी के बावजूद न तो सिगरेट की मांग में ही कमी आ रही है और न इसके दुष्प्रभाव से मरने वालों की संख्या में। तो क्या इस निषेध अथवा चेतावनी का असर है जो उन्हें धूम्रपान अथवा मद्यपान करने के लिए उकसाता है?

अनेक विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं ने अपने शोधों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि धूम्रपान निषेध के संकेतों का धूम्रपान करने वालों पर उल्टा ही असर होता है। ये धूम्रपान शब्द का ही असर है जो उन्हें धूम्रपान करने के विषय में सोचने के लिए उकसाता है। हमारी सोच अथवा विचारों का हमारे जीवन पर गहरा असर होता है क्योंकि हम जो भी कार्य करते हैं वो किसी विचार के वशीभूत होकर ही करते हैं। धूम्रपान करने वाले भी जब ये शब्द देखते, सुनते अथवा पढ़ते हैं तो ये शब्द उनकी विचार प्रक्रिया में प्रभावी होकर उन्हें धूम्रपान के लिए प्रेरित अथवा विवश कर देता है।

जब भी हमसे कहा जाता है कि अमुक काम करिए तो संभव है हम वो काम करें लेकिन यदि हमसे कहा जाता है कि अमुक काम मत करिए तो अधिक संभव है हम मना करने के बाद भी वो काम ज़रूर करें। यदि हमसे कहा जाता है कि लंबी पूँछ वाले लंगूर बंदर के बारे में सोचिए तो संभव है हम लंबी पूँछ वाले लंगूर बंदर के बारे में सोचें लेकिन यदि हमसे कहा जाता है कि लंबी पूँछ वाले लंगूर बंदर के बारे में मत सोचिए तो यह निश्चित है कि लंबी पूँछ वाला लंगूर बंदर हमारे मन-मस्तिष्क पर पूरी तरह से क़ब्ज़ा कर लेगा।

जिस प्रकार मना करने के बावजूद हम लंबी पूँछ वाले लंगूर बंदर के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकते उसी प्रकार मना करने के बावजूद हम धूम्रपान, मद्यपान अथवा अन्य किसी व्यसन से बच नहीं सकते। जब हमें किसी चीज़ की आवश्यकता होती है तब हम उसी चीज़ की अपेक्षा और मांग करते हैं किसी दूसरी चीज़ की नहीं। यदि हमें चाय पीनी है तो हम ये नहीं कहते कि मुझे कॉफ़ी नहीं पीनी है या शर्बत नहीं पीना है अथवा रसगुल्ला नहीं खाना है। हम सिर्फ चाय पीने की इच्छा व्यक्त करते हैं कि 'मुझे चाय पीनी है' या 'मुझे चाय चाहिये'।

जो व्यक्ति हमें अच्छा नहीं लगता अथवा जिससे हमारी शत्रुता होती है हम उस व्यक्ति का नाम लेना भी पसंद नहीं करते। जब भी आप अपने विरोधी अथवा शत्रु के बारे में सोचते हैं तो आपको क्रोध आता है और आप उसे नीचा दिखाने या पराजित करने के विषय में सोचने लगते हैं। मानसिक रूप से ही सही वह आपके सामने आकर खड़ा हो जाता है। आप उससे बच नहीं सकते। आपकी मानसिक संरचना बदल जाती है तथा इस बदली हुई मानसिक संरचना से शारीरिक संरचना प्रभावित होने लगती है। ऐसा ही एक शत्रु धूम्रपान, मद्यपान अथवा अन्य कोई भी व्यसन है।

क्रोध, ईर्ष्या, बदले की भावना अथवा भय की अवस्था में हमारे रक्त प्रवाह में हानिकारक हार्मोंस अथवा रसायनों का उत्सर्जन बढ़ कर हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगता है। इससे बचने का यही तरीक़ा है कि हम अपने शत्रु के बारे में न सोच कर अपने किसी मित्र या परिचित के बारे में सोचें जिसे हम बहुत चाहते हैं या जिससे हमारा भावनात्मक लगाव है और उस भावना की ऊष्णता से सराबोर हो जाएँ। इस प्रकार का चिंतन हमारे रक्त प्रवाह में लाभदायक हार्मोंस अथवा रसायनों का उत्सर्जन बढ़ा कर हमें रोगमुक्त करने में सहायक होता है। बुरी आदतों और व्यसनों को छोड़ने के लिए भी यही तरीक़ा अपनाना श्रेयस्कर है।

जिस चीज़ या आदत से मुक्ति पानी है उसका चिंतन ही मन से निकालना होगा और उसका पूरक अथवा विपरीत

शेष पृष्ठ 29 पर...

मीडिया में भी भ्रष्टाचार

कुसुम जैन

आज मीडिया सूचना और मनोरंजन का माध्यम रह गया है। लोक शिक्षण, चरित्र निर्माण आदि कार्यों का स्थान ग्लैमर और व्यापार ने ले लिया है। सार्वजनिक महत्व के अभियान नहीं के बराबर रह गए। मीडिया सत्ता में भागीदारी को उतावला होता दिख रहा है। भोग संस्कृति का आकर्षण देखना है तो देश के किसी प्रेस-क्लब में जाकर देखा जा सकता है। सम्प्रेषण का लक्ष्य देशहित न रहकर निजी अर्थशास्त्र में बदल गया है।

आज मीडिया को साख की चिन्ता नहीं रह गई है। एक काल्पनिक युद्ध का वातावरण बना रहता है। इसमें उद्देश्य जीतना नहीं, मारना होता है। चाहे मेरी भी एक आँख फूट जाए, किन्तु सामने वाले की दोनों फूटनी चाहिए। प्रतिस्पर्द्धा की यही अवधारणा है। यह प्रतिस्पर्द्धा उस दिन तक चल पाएगी, जब तक पाठक प्रतिक्रिया नहीं दिखाता। जिस दिन उसने घटिया अखबारों को घर में आने से रोक दिया, घटिया टी.वी. चैनल को देखना बंद कर दिया, उस दिन सब ठीक हो जाएगा।

आज चारों ओर जितने भी परिवर्तन हो रहे हैं, उनसे मीडिया भी अछूता नहीं। आज सारी भूमिकाएं सिर्फ अर्थोपार्जन की भेंट चढ़ गई है। स्वयं मीडिया भी इस परिवर्तन को नहीं पचा पा रहा है। आज मीडिया स्वयं भी वैश्वीकरण की चपेट में है। देखते-देखते मीडिया आज अनेक तरह की नकारात्मक भूमिकाओं से भी जुड़ने लगा है। जैसे-जैसे धनबल बढ़ता है, सत्ता-बल बढ़ता है, तब व्यक्ति अहंकार का पर्याय बन जाता है। मीडिया आज सबको अपने से छोटा समझने लगा है।

जो लोग जनता के साथ धोखा करते हैं, मीडिया या तो उनको ढँक देता है या अपनी कीमत लेकर उनको मीडिया मण्डित करने से भी नहीं चूकता। इनसे बड़े विषधर नाग क्या होंगे, इस लोकतंत्र में? विदेशी धन के सहारे चलते हैं। विदेशियों को तो केवल अपना लाभ देखना होता है, जनता से तो उनका दूर-दूर का नाता ही नहीं। उनके दिल में दर्द क्यों उठेगा? सरकारें भी प्रसन्न हैं कि मीडिया का मुंह आज आसानी से बन्द किया जा सकता है। बड़े-बड़े पहाड़ मारने वाले मीडिया के दिग्गज बिकाऊ माल बनकर फूले नहीं समाते। माया की माया ही ऐसी होती है।

देश के समाचार-पत्र संस्थानों पर औद्योगीकरण का प्रभाव तेजी से पड़ा है। प्रबन्धकों की अर्थनीतियां भारी पड़ने लगीं। पत्रकारों ने भी स्वयं को श्रमजीवी कहकर मजदूर परम्परा से जोड़ दिया। समाचार-पत्रों का स्वरूप जीवन के बजाय उत्पादकता से जुड़ गया। आज पत्रकार अपने संस्थान का अवयव नहीं रह गया है। पहले पत्रकार का अपना हित, फिर संस्थान का हित और अन्त में समाज और देश का हित। इसीलिए खबर छपवाने के लिए रिश्वत मांगता है। छापने और छपवाने वाले दोनों ही खुश हो जाएं, पाठकों के लिए तो ऐसी खबर कचरा है।

पिछले लोकसभा चुनाव और कुछ विधानसभा चुनावों में मीडिया के रवैये पर हाल ही में देश के प्रिण्ट मीडिया ने अनेक तथ्य प्रकाशित किए हैं। बड़े-बड़े राजनेताओं के हवाले से लिखा है कौन-कौन से बड़े समाचार-पत्रों ने चुनाव प्रचार के बदले धन की मांग की अथवा धन प्राप्त किया। यह इस बात का प्रमाण तो है ही कि वे न लोकतंत्र का अंग है और न उनके मन में लोकतंत्र के प्रति सम्मान है। उनका लक्ष्य शुद्ध व्यापार है। धन के स्वार्थ में मीडिया देश के भाग्य को धनबल के हाथों गिरवी रख देता है। लोकतंत्र का इससे बड़ा अपमान क्या हो सकता है?

जो अपने स्वार्थ के लिए लोकतंत्र को, मर्यादाओं को, मूल्यों को ताक पर रख दें, वह किसी का भी भला नहीं कर सकता। धन लेकर किसी का भी हो सकता है। ऐसे मीडिया का पोषण समाज को विषाक्त करना ही है।

इस देश में पत्रकारिता मिशन रहा है, जो अब प्रोफेशन हो गया है। व्यक्तिगत प्रतिबद्धता का लोप हो गया है। यह सही है कि आज यह एक व्यवसाय बनता जा रहा है, लेकिन दोनों में अंतर है। मिशन आदमी का खुद का संकल्प होता है। वह उसका खुद से संकल्प होता है, दूसरों के लिए नहीं होता। जबकि व्यवसाय पेट भरने के लिए भी हो सकता है और देश-काल की परिस्थितियों का सामना करने के लिए भी हो सकता है। मिशन मीडिया का धर्मरूप है और व्यवसाय कर्म रूप।

मीडिया को हमने लोकतंत्र में चौथे पाए का दर्जा दिया है। यह दर्जा संविधान ने नहीं दिया, हमने दिया है कि यह लोकतंत्र के तीनों अंगों पर नजर रखेगा, जनता के नाम पर। यह हमारा दायित्व है कि हम इस बात को समझें, प्रहरी ही हमें भ्रमित करेगा तो कैसे चलेगा। अपने छोटे से स्वार्थ के लिए पूरे देश को गिरवी कैसे रखा जा सकता है? लोकतंत्र जनता के लिए ही नहीं है, जनता से भी है।

स्व. प्रभाष जोशी के अनुसार मीडिया का काम जनता की चौकीदारी करना है। लेकिन चौकीदार की अगर चोर से ही मिली भगत हो तो जनता का क्या होगा? यह देखकर आशा होती है कि मीडिया के भ्रष्टाचार को अगर मीडिया का एक जागरूक तबका उजागर करने को कटिबद्ध है तो भ्रष्ट मीडिया को जनता अवश्य सबक सिखायेगी।

श्री गुलाब कोठारीजी के शब्दों में--

''आज न मां-बाप प्रभावी है, न शिक्षक और न ही धर्मगुरु। राजनेताओं ने जाति, धर्म और भाषा के नाम पर इतने टुकड़े कर दिए हैं कि कोई दुश्मन भी नहीं

कर सकता। ऐसी कोई ताकत नहीं है, जो देश को एक कर सके। यह काम मीडिया ही कर सकता है, क्योंकि यही सब तक पहुंच सकता है। यदि लोकतंत्र को बचाना है, स्वस्थ करना है तो मीडिया को बचाना होगा, इसका इलाज करना होगा, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

जनता को जागरूक करने की मीडिया के उस वर्ग की चिन्ता जायज है जो 'पेड न्यूज' या 'पैकेज जर्नलिज्म' को अनैतिक मानता है। ध्यान रहे 'पेड न्यूज' और विज्ञापन में अन्तर स्पष्ट है। जाने-माने पत्रकार राजदीप सर देसाई के अनुसार--'अगर एक राजनेता या औद्योगिक घराना अखबार में संपादकीय जगह या टी.वी. पर एयर टाइम खरीदना चाहता है तो वह ऐसा कर सकता है। लेकिन उसे नियमानुसार इसकी घोषणा करनी होगी। राजदीप आगे लिखते हैं--''जब राजनीतिक, व्यावसायिक ब्राण्ड गैर पारदर्शी ढंग से घुसा दिया जाता है, जब विज्ञापन फार्म या कन्टेन्ट में साफ फर्क के बगैर खबर के रूप में पाठक या दर्शक के सामने आता है तब वह पाठकों की 'शुचिता का उल्लंघन है।' मीडिया जनता की आवाज है। जनता उसे अपना दोस्त और संरक्षक मानती है। ऐसे में अगर मीडिया खुद भ्रष्टाचार में लिप्त होगा तो वह अन्याय के खिलाफ कैसे लड़ेगा।''

सूचना-क्रांति के दौर में मीडिया की भूमिका लगातार व्यापक और महत्वपूर्ण होती जा रही है। संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार और सरकार की उदार-नीति के फलस्वरूप भारत में हर भाषा में टी.वी. चैनलों की बाढ़ सी आ गयी है और प्रत्येक नगर में स्थानीय स्तर पर टी.वी. प्रसारण करने वाले केबल चैनलों की संख्या भी बढ़ रही है। चैनलों की पारस्परिक होड़ कभी-कभी घातक और ऊबाऊ भी लगने लगती है।

कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के आचरण को लेकर टीका-टिप्पणियों और एक्सक्लूसिव समाचारों और चित्रों का प्रसारण कभी-कभी मर्यादा की सीमाएं भी लांघ जाता है और कभी-कभी अंत में यह रहस्योद्घाटन होता है कि जिस बात को लेकर हर चैनल ने अपने घंटों लगा दिये, वह आधारहीन थी।

इस देश के अनेक टी.वी. प्रेषक इस बात को लम्बे समय से अनुभव कर रहे हैं कि चैनल टी.वी. प्रसारण कभी-कभी अपने प्रसारणों के दूरगामी परिणामों पर विचार किये बिना अपनी रिपोर्टें प्रसारित करते रहते हैं। किसी भी घटना या दृश्य के लाइव प्रसारण को संपादन करने का अवसर ही नहीं होता। फोटोग्राफर उस समय अपनी समझ से जिसे सनसनीखेज, एक्सक्लूसिव और महत्वपूर्ण समझकर चित्र खींचता रहता है, उसका सीधा-प्रसारण प्रेक्षकों के मन पर कितनी घातक प्रतिक्रिया कर सकता है, यह उसे भान तक नहीं रहता। प्रिंट मीडिया में ऐसे प्रसंगों या घटनाओं के प्रकाशन का, संपादन का समय रहता है। संपादक उसके प्रकाशन के भले-बुरे प्रभावों का आंकलन कर उसका समुचित संपादन कर सकता है। 'विजुअल मीडिया' शायद न तो इसे महत्वपूर्ण मानता है और न इसे महत्वपूर्ण मानने की जरूरत ही समझता है।

अनेकों बार 'विजुअल मीडिया' के प्रसारण को लेकर काफी बबाल मचा, आलोचना भी हुई। कुछ टी.वी. चैनलों ने क्षमा भी मांगी, पर जो हानि होनी थी, उनकी यह क्षमायाचना भरपाई नहीं कर सकती। इस विषय पर काफी कुछ कहा और लिखा जा सकता है, लेकिन दिक्कत यह है कि टी.वी. चैनल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की तलवार लहराकर एक तरह से अपनी शक्ति के प्रभाव से 'मदमस्त' हैं। पर वे नहीं जानते कि उनका यह आचरण, उनकी विश्वसनीयता को खोखला ही कर रहा है। शायद वह दिन भी आये कि लोग उन पर विश्वास करना छोड़ दें।

संपादिका : 'प्राणसायर' बी-5/263, यमुना विहार, दिल्ली-110053

.... पृष्ठ 27 का शेष

अनिवार्य हो धूम्रपान शब्द का त्याग

सकारात्मक चिंतन प्रभावी बनाना होगा। अब धूम्रपान को ही लीजिये। धूम्रपान करने की बजाय हम ताज़ा फलों का रस अथवा कोई अन्य पौष्टिक पेय ले सकते हैं। धूम्रपान से बचने के लिए अपने विचारों को ताज़ा फलों के रस की ओर परिवर्तित कर दीजिये। ''मैं धूम्रपान नहीं करता'' अथवा ''धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'' ये कहने की बजाय कहिये कि ''मैं फलों का ताज़ा रस पीता हूँ'' अथवा ''फलों का ताज़ा रस मेरे स्वास्थ्य के लिए उत्तम है''। इस प्रकार की कंडीशनिंग अथवा मानसिकता हमें धूम्रपान करने की बजाय फलों का ताज़ा रस पीने के लिए प्रेरित करेगी।

हम सब जानते हैं कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आप अपने अच्छे स्वास्थ्य और प्रभावशाली व्यक्तित्व की कल्पना कीजिये और मन में दोहराइये, ''मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ तथा मेरा व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है।'' इस विचार की कंडीशनिंग अथवा इस विचार के स्थायी हो जाने पर धूम्रपान, मद्यपान अथवा अन्य किसी भी व्यसन का अस्तित्व टिक ही नहीं सकता। हर विचार को एक स्वीकारोक्ति के रूप में लीजिये तथा सकारात्मक स्वीकारोक्ति के रूप में और यह सकारात्मक स्वीकारोक्ति भी वर्तमान में ही करनी अनिवार्य है।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

जनजागरण एवं पर्यावरण संरक्षण

पूनम कुमारी

पृथ्वी के सामान्य तापमान में धीरे धीरे वृद्धि होने को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। इसको अन्य कई नामों--''वैश्विक ऊष्मन'' एवं ''विश्व तापन'' से भी जाना जाता है। यह बीसवीं सदी के मध्य में शुरू हुआ और तब से लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी के वायुमंडल में हवा का सामान्य तापमान सौ सालों में 0.74 डिग्री सेंटिग्रेड से 0.18 डिग्री सेटिग्रेड तक बढ़ चुका है। यह सच है कि ज्वालामुखी विश्व तापन में बहुत कम हिस्सा डालते हैं जबकि मनुष्य की गतिविधियों का विश्व तापन में बहुत बड़ा हाथ होता है।

विश्व तापन का मुख्य कारण मनुष्य द्वारा पैदा किया गया हरित गृह प्रभाव है जिसके लिए कार्बन डाई-ऑक्साइड व मिथेन जैसी गैसें उत्तरदायी हैं। मनुष्य द्वारा वायु में तीव्रता से कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ने से (लकड़ी और जीवाश्म ईंधन जलाने में) गैस की मात्रा में 15 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि हुई है।

विश्व तापन में वृद्धि होने के प्रमुख कारण हैं--

हरित गृह प्रभाव--हमारे वायुमंडल में कार्बन डाई-ऑक्साइड की प्रतिशत मात्रा 0.03 है जो अति आवश्यक है। कार्बन डाई-आक्साइड की इस मात्रा को विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा बनाए रखा जाता है क्योंकि इसका उपयोग हरे पौधे तथा महासागर करते हैं। कार्बन डाई-ऑक्साइड के अणुओं में पृथ्वी की सतह में परावर्तित उवरक्त विकिरणों को अवशोषित करने की क्षमता है जिससे वायुमंडल गर्म हो जाता है। इस प्रग्रहित विकिरणों के कारण वायुमंडल के गर्म होने को ''ग्रीन हाउस प्रभाव'' या ''पौधा घर प्रभाव'' कहते हैं। अतः वायुमंडल में कार्बन डाई-ऑक्साइड की अधिकता वातवरण को प्रभावित करती है। जलवाष्प तथा ओजोन में भी अवरक्त विकिरणों को प्रग्रहित करने की क्षमता होती है, इसीलिए उनको भी प्रायः ग्रीन हाउस गैसों के रूप में माना जाता है। क्योंकि सी. ओ.2 वायुमंडल में एक समान रूप से वितरित है, अतः यह ग्रीन हाउस को जल वाष्पों या ओजोन से अधिक प्रभावित करती है।

अम्लीय वर्षा--वह वर्षा या पानी है जो आमतौर पर अम्लीय होता है। उद्योगों तथा वाहनों से वातावरण में अम्लीय ऑक्साइड जैसे सल्फर डाई-ऑक्साइड नाइट्रोजन डाई-ऑक्साइड मुक्त होते रहते हैं। ये जल की सूक्ष्म बूंदों में घुलकर अनुरूप अम्ल बनाते हैं। सल्फर डाई-ऑक्साइड सल्फ्यूरिक अम्ल तथा नाइट्रोजन डाइ ऑक्साइड बनाती हैं। ये अम्ल वर्षा के जल में घुलकर अम्लीय वृष्टि के रूप में पृथ्वी पर गिरते हैं। इसे ''अम्लीय वर्षा'' या ''तेजाबी वर्षा'' कहते हैं।

ओजोन परत--ओजोन परत सूर्य के द्वारा उत्सर्जित हानिकारक ''पराबैंगनी विकिरणों'' को अवशोषित करती है, जिससे वे विकिरण पृथ्वी पर नहीं पहुंच पाती। इसी कारण यह आवरण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें भयंकर पराबैंगनी विकिरणों के उद्भासन से बचाता है। इसलिए यदि वायुमंडल से ओजोन परत लुप्त हो जाए तो एक रक्षात्मक आवरण समाप्त हो जाएगा। सूर्य की किरणों की ऊष्मा के प्रभाव के कारण ऑक्सीजन ओजोन में परिवर्तित हो जाती है। पृथ्वी की सतह से ''30 किलोमीटर'' की ऊंचाई पर ओजोन की परत है। यह पृथ्वी से ऊंचाई बढ़ने के साथ ही साथ और अधिक मोटी होती जाती है। तापमंडल में ''50 किलोमीटर'' की ऊंचाई पर यह सबसे अधिक मोटी है।

विश्व तापन में वृद्धि का एक अन्य मुख्य कारण ओजोन परत का धीरे धीरे नष्ट होना है। क्लोरो फ्लोरो कार्बन ओजोन परत को पतला कर देती है जिससे पृथ्वी की सतह पर अधिक पराबैंगनी विकिरणें पहुंचती हैं।

पेड़ पौधे वाष्पीकरण करते हैं जिससे वातावरण ठंडा रहता है। इसीलिए हमें नए लगाए गए वृक्षों की देखभाल करनी चाहिए तथा वनारोपण की नयी योजना लागू करनी चाहिए। वृक्षारोपण कार्यक्रम को जन आंदोलन का रूप दिया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जा सके। पेड़ वायुमंडल में स्थित सीओ2 का तेजी से उपयोग कर पर्यावरण का संरक्षण करते हैं तथा विश्व तापन कम होता है।

वनों की अंधाधुंध कटाई--जनसंख्या के लगातार बढ़ने के कारण वनों और पेड़ पौधों की लगातार कटाई की जा रही है जिसमें विश्व तापन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। पेड़ पौधे वायुमंडल में फैली कार्बन डाई-ऑक्साइड को अपने अंदर समा लेते हैं जिससे वायुमंडल में गर्मी कम हो जाती है परंतु वनों की लगातार कटाई के कारण वायुमंडल में कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है।

विश्व तापन बढ़ने के कारण--विश्व तापन के कई भयानक प्रभाव हो सकते हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार हैं--

- विश्व तापन करने वाला वाहनों का धुआं, जिसमें मुख्य कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई-ऑक्साइड आदि विषैली गैसें विद्यमान होती हैं, जो मानव के ''श्वसन तंत्र'' और ''तंत्रिका तंत्र'' को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त इनसे आंखों में जलन, त्वचा के रोग व एलर्जी हो जाती है।
- जीवाश्म ईंधनों जैसे कोयला व पैट्रोलियम के जलने में सीओ-2 और सीएस4 गैसें वायुमंडल में मिलती हैं। ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण इन गैसों में वायुमंडल का तापमान बढ़ रहा है। बढ़ते हुए ताप में पर्वतों

की चोटियों व ध्रुवों पर स्थित बर्फ के विशाल भंडार जल में परिवर्तित हो जाएंगे। पूरी पृथ्वी जलमग्न हो जाएगी, और अचानक बाढ़ों का खतरा तो हमेशा बना ही रहता है।

● वाहनों में प्रयुक्त होने वाले ईंधन के जलने से हानिकारक पदार्थ सीसा लगातार वायुमंडल में मिलकर विश्व तापन बढ़ा रहा है। इससे अरक्तता, मस्तिष्क ह्रास, आक्षेप तथा मृत्यु भी संभावित है।

● परमाणु ऊर्जा से उत्पन्न रेडियो विकिरणें हमारी कोशिकाओं को हानि पहुंचाती हैं।

● अम्लीय दृष्टि से मृदा में अम्लीयता नामक दोष पैदा हो जाता है।

● अम्लीय वर्षा ने बहुत सी झीलों की समस्त आबादी को मार दिया है। अम्लीय वर्षा फसलों को भी नष्ट करती है।

● यदि वायुमंडल का ओजोन आवरण हटा दिया जाए तो पेड़ पौधों में कोशिकाओं का विभाजन रूक जाएगा।

● यदि विश्व के तापमान में थोड़ी सी भी वृद्धि होती है, संपूर्ण विश्व में स्थितियां बदल जाएंगी और प्रत्येक जीव के लिए समस्या उत्पन्न हो जाएगी। कुछ क्षेत्र रेगिस्तान में बदल जाएंगे और अन्य स्थायी रूप से जलमग्न हो जाएंगे।

ग्लोबल वार्मिंग कम करने के कुछ सुझाव निम्न प्रकार हैं--

● ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए हमें जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम करना चाहिए।

● हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। पेड़ भोजन बनाने की प्रक्रिया में सीओ2 का उपयोग करते है। इससे पौधा गृह प्रभाव घट जाएगा और अंततः विश्व तापन कम होगा।

● मोटर गाड़ियों की नियमित जांच की जानी चाहिए ताकि उनके छोड़े जानेवाले धुएं आदि पर नियंत्रण रखा जा सके तथा विश्व तापन को कम किया जा सके।

● शहर के आसपास विश्व तापन पैदा करने वाले कारखानों को लगाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। तथा विश्व तापन को कम करने के लिए कारखानों की चिमनियां ऊंची होनी चाहिए।

● कोयले, पेट्रोलियम, लकड़ी और मिट्टी के तेल को जलाना कम करना चाहिए क्योंकि ये विश्व तापन बढ़ाते हैं

● पेड़ पौधे सूर्य के प्रकाश की तीव्रता को कम करते हैं। इसीलिए हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए।

● पेड़ पौधे वाष्पीकरण करते हैं जिससे वातावरण ठंडा रहता है। इसीलिए हमें नए लगाए गए वृक्षों की देखभाल करनी चाहिए तथा वनारोपण की नयी योजना लागू करनी चाहिए।

वृक्षारोपण कार्यक्रम को जन आंदोलन का रूप दिया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जा सके। पेड़ वायुमंडल में स्थित सीओ2 का तेजी से उपयोग कर पर्यावरण का संरक्षण करते हैं तथा विश्व तापन कम होता है। जन जागरण के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाना चाहिए, ताकि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जागरूकता आए।

72, कैलाश पार्क-अर्थला, मोहननगर (गाजियाबाद-उ.प्र.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

■ बाल श्रम के सहारे काली कमाई के चौंकाने वाले तथ्य--

- 1.20 लाख करोड़ का काल धन सालाना बाल श्रम से।
- 06 करोड़ देशभर में हैं बाल श्रमिकों की संख्या।
- 11.08 लाख करोड़ रुपये हैं देश का कुल बजट।

हमारे देश में बालश्रम से हर साल होने वाली 1. 2 लाख करोड़ रुपये की काली कमाई पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। बाल अधिकार संगठन बचपन बचाओ आंदोलन (बीबीए) की कैपिटल करप्शन : चाइल्ड लेबर इन इंडिया शीर्षक से प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह चौंकाने वाला आंकड़ा सामने आया है। इसकी गणना बाल श्रमिकों की कुल संख्या, उनकी कुल कमाई और वयस्कों की बजाय बच्चों से काम कराकर कंपनियों को होने वाले मुनाफे के आधार पर की गयी है। ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लालच में कई कंपनियां बाल श्रमिकों का जमकर इस्तेमाल करती है, क्योंकि एक वयस्क के मुकाबले इनकी दिहाड़ी बहुत कम होती है।

रिपोर्ट के मुताबिक देश में ही करीब छह करोड़ बाल श्रमिक हैं, जो रोजाना औसतन 15 रुपये के हिसाब से साल में लगभग 200 दिन काम करते हैं। इस तरह एक साल में इन पर कुल 18 हजार करोड़ रुपये की लागत आती है। अगर यही काम वयस्क श्रमिकों से लिया जाए तो 115 रुपये रोजाना के हिसाब से 1.38 लाख करोड़ की लागत आएगी।

■ जरूरी नहीं क्रमानुसार हों सारे नोट : भारतीय रिजर्व बैंक ने कहा है कि वह शीघ्र ही 500 रुपए के नोटों के ऐसे पैकेट जारी करेगा जिनमें सभी नोटों के नंबर क्रमानुसार होना जरूरी नहीं होगा। रिजर्व बैंक का कहना है कि परिचालनगत दक्षता बढ़ाने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। इस तरह के पैकेट में 100 ही नोट होंगे लेकिन जरूरी नहीं है कि ये सभी नंबर के लिहाज से क्रमानुसार हों।

हिन्दुस्तान दैनिक

वायु विकार और प्रेक्षा चिकित्सा :1:

मुनि किशनलाल

शरीर में वायु, पित्त और कफ तीन मुख्य तत्त्व हैं। जब तीनों उचित मात्रा में (सम) होते हैं तब स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इनमें से किसी एक का भी सन्तुलन बिगड़ जाने (विषमता) से विकार पैदा हो जाते हैं। वायु का असन्तुलन वायु विकार पैदा करता है। वायु विकार से अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। शरीर के प्रभावित स्थान पर असहनीय दर्द होने लगता है। रोगग्रस्त व्यक्ति अपने को अस्वस्थ और असहाय महसूस करने लगता है।

आमाशय और आंत में भोजन के पाचन की क्रिया के समय अनेक प्रकार के पाचक रस उसमें मिलते हैं। इन रसों के मिलने से भोजन के तत्त्वों में अनेक प्रकार की प्रतिक्रिया होती है। इन प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप एक निश्चित मात्रा में वायु अथवा गैस बनती है, जिसे आन्त्रवायु गैस कहते हैं। यदि कब्ज हो तो यह गैस छोटी और बड़ी आंतों में जमा हो जाती है और आंत की दीवार पर दबाव डालती है। वैसे सामान्य रूप से मल के उत्सर्जन के लिए गुदा में 2–3 मि.मी. पारा का दबाव पर्याप्त होता है, परन्तु कब्ज के कारण, जब मल के साथ वायु बाहर नहीं निकल पाती, तब वृहदान्त्र में मल और गैस, दोनों का ही दबाव बढ़ जाता है। जब यह दबाव 20–26 मि.मी. पारा तक बढ़ जाता है तो रोगी बहुत कठिनाई का अनुभव करता है। यह गैस्ट्रिक ट्रबल कहलाती है।

जब मनुष्य वायुकारक खाद्य–पदार्थों जैसे–दालें, राजमा, चना, मैदे की बनी वस्तुएं, सेव, गोभी, दूध और दूध से बनी वस्तुएं जैसे–पनीर, तले व भारी पदार्थों का सेवन अधिक करता है तथा भोजन में फाइबर जैसे ताजा फल, सब्जी, सलाद इत्यादि कम लेता है। तो वायु अधिक मात्रा में बनती है। इस कारण मल के उत्सर्जन में रूकावट आ जाती है और व्यक्ति पूरी तरह से मल त्याग नहीं कर पाता।

कभी–कभी ऐसा होता है कि यह गैस मल के दो समूहों के बीच में कोष्टरिका के रूप में रूक जाती है। मल त्याग की क्रिया के समय मल का एक समूह ही बाहर निकल पाता है। शेष मल गुदा में ही रह जाता है, इस प्रकार कब्ज हो जाता है। जो गैस गुदा में होती है वह भी जलीय अंश को सुखा देती है और मल को कठोर बना देती है। इस कठोर मल के बाहर निकलने में बहुत कठिनाई होती है तथा गुदा की दीवारों के साथ यह रगड़ खाती है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति बवासीर, और गुद–विदर अथवा गुद–फिशर का शिकार हो जाता है।

वायु विकार के लक्षण

वायु विकार से पेट में गुड़गुड़ाहट होना, पेट भारी होना, पेट फूलना, डकारें आना, घबराहट होना, श्वास फूलना, नींद न आना, शरीर के जोड़ों में दर्द होना, कब्ज रहना, कभी–कभी पतले दस्त होना, पेट दर्द करना, सिरदर्द रहना और श्वास में बदबू होना आदि अनेक लक्षण पैदा हो जाते हैं।

वायु विकार के कारण

1. भोजन समय पर नहीं लेना। बार–बार कुछ न कुछ खाते रहना।
2. भोजन को ठीक ढंग से न चबाया जाना।
3. असन्तुलित और गरिष्ठ भोजन करना।
4. अनियमित दिनचर्या और चिन्ताग्रस्त रहना।
5. भोजन करने के बाद पाचन ठीक से करने के लिए उसे 4 घन्टा का समय देना चाहिए, वह नहीं देने से पाचन क्रिया ठीक नहीं रह पाती।
6. शारीरिक श्रम नहीं करना।

वायु विकार के कारणों का निवारण करने के बाद प्रेक्षाध्यान में अपने आपको वायु विकार से मुक्त रखने के लिए निम्न उपाय भी सुझाए गए हैं–

निवारण

1. **आसन :** वज्रासन, पवन मुक्तासन, पेट और श्वास की 6,7,8 व 9वीं क्रियाएं।
2. **प्राणायाम** : अनुलोम–विलोम 9–9 आवृत्तियां दो बार। भोजन के समय सूर्य स्वर का प्रयोग।
3. **प्रेक्षा** : तेजस् केन्द्र पर ध्यान। (10 मिनट)
4. **अनुप्रेक्षा** : पेट को मृदुता से सम्यक् क्रिया का सुझाव। (15 मिनट)
5. **जप** : रं के जप को––सर्दी के दिनों में 10 मिनट पढ़ें। गर्मी के मौसम में गर्मी अधिक न बढ़े उस हिसाब से समय का निर्धारण करें।
6. **तप** : परिमित भोजन। गरिष्ठ भोजन का वर्जन।
7. **मुद्रा** : वायु मुद्रा, अपान मुद्रा।

उपरोक्त बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करें जिससे विधि और लाभ को जानकर उन क्रियाओं को किया जा सके। जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षक भी इनको अच्छी तरह जरूरतमन्द व्यक्ति को करा सके।

1. पेट और श्वास की क्रियाएं

छठी क्रिया : हाथों को कमर पर रखें, अगुलियां पीछे और अंगूठा आगे की ओर रहे। दृष्टि सम्मुख रखते हुए

30^0 का कोण बनाकर शरीर को स्थिर करें तथा दस बार श्वास–प्रश्वास करें।

सातवीं क्रिया : छठी क्रिया की तरह ही हाथ कमर पर रख कर 90^0 तक झुकें और तेजी से दस बार श्वास–प्रश्वास करें।

आठवी क्रिया : छठी क्रिया की तरह शरीर आगे की ओर 30^0 कोण मे झुका कर प्रश्वास करके बाह्य कुम्भक करें, पेट को भीतर–बाहर पांच से दस बार संचालित करें।

नवीं क्रिया : 90^0 में शरीर को झुका कर हाथों को कमर पर स्थापित करें। बाह्य कुम्भक की स्थिति में पेट को तेजी से दस से बीस बार संचालित करें। दृष्टि सम्मुख रहेगी।

पेट और श्वास की क्रिया नं. 6 से 9

वज्रासन

जिस प्रकार इन्द्र का वज्र अचूक, शक्तिशाली तथा सुदृढ़ माना जाता है, उसी प्रकार वज्रासन के नियमित अभ्यास से मानव शरीर वज्र की भाँति बन सकता है, उर्जा व शक्ति का भण्डार हो सकता है। इस आसन की यह विशेषता है कि यह भोजन के बाद भी किया जा सकता है। अन्य सभी आसन खाली पेट ही करने का नियम है। यह आसन खाना पचाने में सहायक बनता है। भोजन के बाद 10 मिनट इस आसन में बैठना चाहिए।

विधि : वज्रासन का अभ्यास बैठकर व लेटकर दोनों तरीकों से किया जाता है। लेट कर किये जाने वाले आसन को सुप्त वज्रासन कहा जाता है। बैठकर किये जाने वाले वज्रासन को तीन तरह से किया जाता है। पूर्ण जानकारी के लिए सभी की विधि दी जा रही हैं।

वज्रासन

पहली विधि : भूमि पर दोनों घुटने मोड़कर ठहरें। मेरुदण्ड सीधा रहे। दोनों पैरों के अंगुठे एक–दूसरे के ऊपर रहेंगे। पांव की एड़ियों पर नितम्ब टिकाएं। आराम से बैठें। हथेलियां घुटनों पर रखें।

दूसरी विधि

दोनों पैरों को घुटनों से मोड़कर बैठें। इस विधि में बैठते समय एड़ियां परस्पर मिली रहें। दोनों एड़ियों के ऊपर कुल्हों के बीच का स्थान रहे। एड़ियों के बीच के रिक्त स्थान पर बैठ जाइए। ध्यान रखें कि एड़ियां भी परस्पर जुड़ी रहें। पूरे शरीर का भार एड़ियों पर ही केन्द्रित होने से शुरु में कुछ कठिनाई हो सकती है, लेकिन धीरे–धीरे अभ्यास बढ़ाने से कठिनाई दूर हो जाऐगी। हथेलियां, गर्दन, मेरुदण्ड तथा कमर पूर्ववत् रहेगी। दृष्टि सामने रहेगी।

वज्रासन

तीसरी विधि––

वज्रासन का एक रूप सुप्त वज्रासन भी है। दोनों घुटने मोड़कर आसन पर बैठें। अब हाथों को पीछे कमर के पास स्थापित करें। धीरे–धीरे कोहनियों का सहारा लेकर शरीर को पीछे की तरफ लेटा दीजिये। गर्दन को और सिर के ऊपरी भाग को जमीन से लगाा दें। इस अवस्था में गले के सामने वाला भाग जहां थायराइड और पैरा थायराइड ग्रन्थियां हैं, वह तना रहेगा। हथेलियों को जांघों के ऊपर रखें। यदि आप गर्दन को मोड़कर सिर का ऊपरी भाग जमीन में लगाने में असमर्थता महसूस करते हों तो गर्दन को सामान्य अवस्था में रखकर भी कर सकते हैं।

सुप्त वज्रासन

लाभ : वज्रासन और सुप्त वज्रासन के लाभ–

1. पाचन क्रिया में सहायक होता है।
2. स्नायु तन्त्र को शक्ति प्रदान करता हैं।
3. पेट, छाती, मेरुदड पर प्रभावी असर होता है।
4. गैस विकार को दूर करने में भी यह आसन उपयोगी है।
5. स्मरण शक्ति का विकास होता है।
6. मधुमेह जैसे रोगों में लाभदायक है।
7. नियमित अभ्यास से पेरालिसिस जैसी बीमारी से बचा जा सकता है।
8. व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिये श्वेत रक्त कणिकाओं में वृद्धि होती है।
9. दर्शन केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित होने से अन्तर दृष्टि जगाने में भी सहायक होता है।

(अगले अंक में लगातार.....)

अहिंसा यात्रा का उदयपुर जिले में प्रवेश

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में महत्वपूर्ण कार्यक्रम

२६ मई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने प्रातः देलवाड़ा से चीरवा के लिए प्रस्थान किया। राष्ट्रीय राजमार्ग नं. ८ के दोनों ओर खड़े ऊंचे-ऊंचे पहाड़ सड़क को सूर्य से छिपा रहे थे। छायादार मार्ग में यात्रा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने उदयपुर जिले में प्रवेश किया। राजसमन्द जिले की समाप्ति पर इस जिले में जागरूकता से अपने दायित्व का निर्वाह करने वाले पुलिस विभाग में कार्यरत ए.एस. आई. गोकुलराम आदि जवानों ने आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

मार्गवर्ती कैलाशपुरी में स्थित महाराणा मेवाड़ के इष्टदेव एकलिंगजी के मंदिर का बाहर से अवलोकन कर आचार्यश्री मरियम मार्बल पधारे। यहां उदयपुर जिले की ओर से आयोजित स्वागत समारोह में जिला प्रमुख मधु मेहता और उदयपुर नगर परिषद की सभापति रजनी डांगी ने जिले की ओर से आचार्य महाश्रमण एवं उनकी धवल वाहिनी का भावपूर्ण स्वागत किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'मेवाड़ में परिभ्रमण करते हुए भीलवाड़ा और राजसमन्द जिले की यात्रा के बाद आज हम उदयपुर जिले में प्रविष्ट हुए हैं। इस जिले की जनता में शान्ति, नैतिकता और आध्यात्मिकता की ज्योति प्रज्जवलित होती रहे।' मरियम मार्बल से प्रस्थान कर आचार्यवर चीरवा घाटी स्थित तक्षशिला विद्यापीठ संस्थान बी.एड्. कॉलेज में पधारे। प्रवास यहीं हुआ। मोहनलाल मेनारिया ने अपने कॉलेज में आचार्यश्री का स्वागत किया।

२७ मई। आचार्य महाश्रमण ने प्रातः भुवाणा की ओर विहार किया। घाटी को पार करने के बाद महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा ने साध्वियों के साथ आचार्यवर के दर्शन किए और निवेदन किया--'गुरुदेव ! घाटी पार हो गई।' यह सुनकर आचार्य महाश्रमण ने मुस्कराते हुए कहा--''अभी तो अनेक घाटियां पार करनी हैं।'' मार्गवर्ती अनेक प्रतिष्ठानों को स्पर्श करते हुए लगभग १२.०७ किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण भुवाणा स्थित 'महाप्रज्ञ विहार' में पधारे।

स्वागत समारोह

प्रातःकालीन कार्यक्रम में झीलों की नगरी उदयपुर की जनता ने आचार्य महाश्रमण का श्रद्धासिक्त स्वागत और अभिनंदन किया। महिला मंडल की बहनों द्वारा स्वागत गीत के संगान के पश्चात शान्तिलाल सिंघवी, उषा चव्हाण, विनोद माण्डोत, अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने आचार्यश्री के स्वागत में भावाभिव्यक्ति की। मुनि जम्बूकुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कनकरेखा ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र में आराध्य का अभिनंदन किया।

राजस्थान के सार्वजनिक निर्माण मंत्री प्रमोद भाया जैन, पूर्व गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने आचार्यश्री का भावपूर्ण स्वागत किया। छगनलाल बोहरा ने नगर परिषद की ओर से प्रस्तुत अभिनंदन पत्र का वाचन किया। मंत्री प्रमोद, गुलाबचन्द कटारिया, जिला प्रमुख मधु मेहता, रजनी डांगी एवं भुवाणा की सरपंच सीमा चोरड़िया आदि ने अभिनंदन पत्र पूज्य चरणों में समर्पित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा एवं मुख्य नियोजिका के अभिभाषण हुए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'आज हम महाप्रज्ञ विहार, भुवाणा आए हैं। आप लोगों ने स्वागत-अभिनंदन किया, यह आप लोगों की सद्भावना है। उदयपुर की जनता में अहिंसा, अनुकंपा और नैतिकता की चेतना पुष्ट होती रहे। लगभग तीन वर्ष पूर्व परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ के साथ यहां चतुर्मास किया था। उस चतुर्मास की अनेक स्मृतियां इस भवन के साथ जुड़ी हुई हैं। यह भवन अपने आप में ऐतिहासिक बन गया। इसमें कल्याणकारी प्रवृत्तियां संचालित होती रहें तो इसकी उपयोगिता और बढ़ सकती है।'

मध्याह्न में महिला मंडल द्वारा संयुक्त परिवार की अवधारणा पर आधारित संगोष्ठी आयोजित हुई। संभागियों को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा का प्रेरक संबोध प्राप्त हुआ। रात्रि में आयोजित कवि सम्मेलन में अनेक कवियों ने विभिन्न विधाओं में सुन्दर प्रस्तुतियां दीं। मुनिवृन्द ने भी काव्यपाठ के द्वारा जनता को आध्यात्मिक प्रेरणा दी।

व्याख्यानमाला का शुभारंभ

२८ मई। आचार्य महाश्रमण भुवाणा से प्रस्थान कर आचार्यश्री मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय पधारे। यहां आचार्य महाश्रमण ने 'आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति व्याख्यानमाला' का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है इस विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती के अवसर पर प्रारंभ इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोज्य व्याख्यानमाला का भी यह प्रथम व्याख्यान था।

विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. संजय लोढ़ा, छात्रसंघ अध्यक्ष दिलीप जोशी ने आचार्यश्री का स्वागत किया। मुनि दिनेशकुमार एवं सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रो. रमेश अरोड़ा ने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। कुलपति इन्द्रवर्द्धन त्रिवेदी ने स्वर्णजयंती वर्ष में आचार्यश्री के पादार्पण और व्याख्यानमाला के प्रारंभ को विश्वविद्यालय का परम सौभाग्य बताया।

आचार्य महाश्रमण ने 'अहिंसक जीवनशैली' विषय पर आधारित इस व्याख्यान में कहा--'शरीर और आत्मा के योग का नाम जीवन है। दोनों का थोड़े समय के लिए अलग होना मृत्यु और सदा के लिए अलग होना मोक्ष है। व्यक्ति का जीवन अहिंसा से ओतप्रोत हो। अहिंसा सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारी और श्रेयस्कर है। यह भगवती है, देवी है। इसे जीवन में उतार कर इसकी पूजा करें। साधु और गृहस्थ के लिए अहिंसक जीवनशैली पृथक होती है। जहां एक साधु ईर्या समिति, अंधेरे में प्रमार्जनपूर्वक गमनागमन, माधुकरी वृत्ति, रात्रि चौविहार प्रत्याख्यान आदि के द्वारा हिंसा से पूर्णतया विरत होने का प्रयास करता है, वहीं एक गृहस्थ के लिए आरंभजा और प्रतिरोधजा हिंसा आवश्यक हो जाती है। किन्तु वह संकल्पजा हिंसा से बचे।'

जीवनशैली को अहिंसक बनाने के लिए यथापेक्षा विस्तार से चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने आठ सूत्र प्रदान किए। वे हैं--अभय, सहिष्णुता, मैत्री, अनुकंपा, हत्या (आत्महत्या, परहत्या, भ्रूणहत्या) न करने का संकल्प, नैतिकता, नशामुक्ति, अहिंसा का निरंतर स्मरण।

इस अवसर पर शान्तिलाल सिंघवी ने विश्वविद्यालय में आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य दीर्घा के लिए लगभग २५० पुस्तकों का सेट कुलपति इन्द्रवर्द्धन त्रिवेदी को भेंट

न्याय और अणुव्रत विषयक सेमिनार

किया। कार्यक्रम का संचालन राजकुमार फत्तावत ने किया।

विश्वविद्यालय से प्रस्थान कर आचार्य महाश्रमण अशोकनगर स्थित विज्ञान समिति भवन में पधारे। अध्यक्ष डॉ. के.एल. कोठारी ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। वहां आयोजित स्वैच्छिक सेवा संस्थाओं की धुरी विषयक संगोष्ठी में आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीप्रमुखा एवं मुख्यनियोजिका के प्रेरक वक्तव्य हुए। आचार्य महाश्रमण ने संभागियों को पावन पाथेय प्रदान किया। लगभग १२.३० बजे महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में पधारे। विश्वविद्यालय परिसर में स्थित 'किसान घर' नामक भवन में आचार्यश्री का द्विदिवसीय प्रवास रहा।

अपराह्न में विश्वविद्यालय के नूतन सभागार में बार एसोसियेशन उदयपुर द्वारा 'न्याय और अणुव्रत' विषय पर सेमिनार की समायोजना की गई। आचार्यश्री की सन्निधि में चले इस सेमिनार में अनेक वकील और न्यायाधीश संभागी बने। कार्यक्रम का प्रारंभ इस सेमिनार की आयोजना में उल्लेखनीय श्रम करने वाले कार्यक्रम के संयोजक कन्हैयालाल चोरड़िया के स्वागत वक्तव्य से हुआ। पूर्व न्यायाधीश पानाचन्द जैन, जिला एवं सत्र न्यायाधीश रामसिंह मीणा ने निर्धारित विषय पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्बोधन में विषय को अत्यन्त प्रभावकता के साथ प्रतिपादित करते हुए उपस्थित संभागियों को निर्भीकता एवं सत्यनिष्ठा को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात जिज्ञासा-समाधान का भी सुन्दर क्रम चला। बार एसोसियेशन के सचिव एडवोकेट मनीष शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन बृजेन्द्र सेठ ने किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा मध्याह्न में केन्द्रीय कारागृह में पधारीं। जेल अधीक्षक ने महाश्रमणी का स्वागत किया। गणेश डागलिया ने अणुव्रत की गतिविधियों से अवगत कराया। साध्वीप्रमुखा का 'नशामुक्त जीवन' विषय पर प्रेरक वक्तव्य हुआ। अनेक कैदियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। साध्वी लक्ष्यप्रभा ने कैदियों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर सर्वधर्म सम्मेलन

२६ मई। आचार्य महाश्रमण प्रातः नाइयों की तलाई में स्थित तेरापंथ भवन (बिजोलिया हाउस) पधारे। यहां से प्रस्थान कर आचार्य महाश्रमण पायोराइट प्रिंट मीडिया का अवलोकन करते हुए स्वल्पकालीन प्रवास हेतु होटल विष्णुप्रिया पधारे। कल्याणमित्र स्वर्गीय कृष्णकान्त कर्णावट के सुपुत्र एवं धर्मपत्नी लता ने अपने होटल में आचार्यश्री का श्रद्धासिक्त स्वागत किया।

फतह सीनियर सेकेंड्री स्कूल के विशाल मैदान में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में सर्वधर्म सम्मेलन के रूप में समायोजित हुआ। गुंबद के आकार में बने एवं खचाखच भरे विशाल पंडाल में चले इस गरिमामय कार्यक्रम में विभिन्न धर्मगुरु उपस्थित थे। 'नैतिकता की प्रतिष्ठा में धर्मगुरुओं का योगदान' विषयक इस सम्मेलन का शुभारंभ आचार्यश्री के मंत्रोच्चारण से हुआ। स्थानीय महिला मंडल ने गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष शान्तिलाल एवं आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के संयोजक ख्यालीलाल तातेड़ ने आगंतुकों का स्वागत किया। अमृत महोत्सव प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमण ने विषय की भूमिका प्रस्तुत की।

ईसाई धर्मगुरु फादर इमैनुअल ने कहा--'दुनिया में नैतिकता की गिरावट बहुत तेजी से हो रही है। इसे रोकने के प्रयास बेअसर सिद्ध हो रहे हैं। ऐसे में धर्मगुरुओं की भूमिका बढ़ जाती है।'

सिख समाज के सरदार जोधसिंह ने कहा--'धर्म के मर्म को हमने ठीक से नहीं समझा। हम कर्मकांडी हो गए। धर्म वह है जो हमें दूसरों के प्रति सहिष्णु और उत्तरदायी बनाए। नैतिकता को व्यापकता देने में धर्मगुरुओं की अहम भूमिका हो सकती है।'

अस्थल आश्रम के स्वामी रासबिहारी शरण ने कहा--'गुरु वही होता है, जो अंधकार को दूर करे और समाज को नैतिक दिशा में अग्रसर करे।'

श्रीश्रीरविशंकर के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित स्वामी आत्मानंद ने कहा--'हमारे नैतिक मूल्य शब्दप्रधान नहीं होने चाहिए। नैतिकता की प्रतिष्ठापना के लिए सभी धर्मगुरुओं को एक मंच पर आना ही होगा। विचारों का आदान-प्रदान होगा। नये विचार निकलेंगे और नैतिकता को व्यापकता मिलेगी।'

फादर एण्ड्रयू रोड्रिग्स ने कहा--'आचार्य महाश्रमण प्रेरणास्रोत हैं। नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए इनके प्रयास उल्लेखनीय और अनुकरणीय हैं। सभी धर्मगुरु जब एक साथ ऐसा प्रयास करेंगे तो बदलाव असंभव नहीं है।'

राजस्थान वक्फ़ बोर्ड के अध्यक्ष लियाकत अली ने कहा--'हर धर्म में नैतिक मूल्यों का महत्त्व है। जहां अनैतिकता बढ़ती है, वहां अशान्ति भी बढ़ती है। ऐसे में धर्मगुरु ही सन्मार्ग दिखा सकते हैं।'

बौद्ध धर्मगुरु डॉ. भदन्त ज्ञानरतन महाथेरा ने कहा--'बौद्ध साहित्य में 'महाश्रमण' शब्द बुद्ध के लिए प्रयुक्त हुआ है और जैन साहित्य में वही शब्द महावीर के लिए उपयोग में आया है। आज बुद्ध और महावीर हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनका सम्मिलित रूप हम आचार्य महाश्रमण में देख सकते हैं। अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं यही मंगलकामना करता हूं कि नैतिकता की प्रतिष्ठा में आचार्यश्री का मार्गदर्शन समाज को सतत मिलता रहे।'

पारसी धर्मगुरु होमी ढल्ला ने कहा--'भ्रष्टाचार, आतंकवाद और अपराधीकरण की समस्या बढ़ रही है। उसके निराकरण के लिए धर्मगरुओं को अपना दायित्व समझना होगा।'

मुस्लिम बोहरा समाज के धर्मगरु सैयदना साहब के प्रतिनिधि जोएबभाई नूरुद्दीन ने सैयदना साहब द्वारा प्रेषित उर्दू भाषा में लिखित संदेश का वाचन किया। संदेश का रूपान्तरित अंश इस प्रकार है--'आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए आचार्य महाश्रमण समाज में जो तरक्की, शांति और नैतिकता का पैगाम फैला रहे हैं, वह काबिले-तारीफ़ है। इसके अनुसरण से व्यक्ति सचाई की राह पर चल सकता है।'

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संत त्याग और संयम के प्रतीक होते हैं। उनमें साधना का बल होता है, इसीलिए जनमानस में धर्मगुरुओं के प्रति सम्मान और आस्था का भाव होता है। हम धर्मगुरु अपने-अपने अनुयायियों को नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने हेतु प्रेरित करें। यदि समाज में नैतिकता, अहिंसा और संयम विकसित हो जाए तो धरती स्वर्ग बन सकती है।'

भारत विभिन्न धर्म-संप्रदायों वाला देश है। सम्प्रदाय और वेशभूषा पृथक-पृथक हैं, किन्तु सभी धर्मों का सार अहिंसा, प्रेम और दया है।' आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा--'इस सम्मेलन में इतने धर्मगुरु पधारे, यह उनका मेरे प्रति सद्भाव है। मैं मंगलकामना करता हूं कि

आचार्यश्री महाश्रमण दया के मूर्तरूप : सोनिया गांधी

सभी अपने और जनता के कल्याण के लिए कार्य करते रहें और कल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें।'

आचार्य महाश्रमण के प्रवचन के पश्चात राजकुमार फत्तावत ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मर्यादा कोठारी ने किया।

'शांतिदूत' अलंकरण

२६ मई। सर्वधर्म सम्मेलन के दौरान पैसिफिक यूनिवर्सिटी उदयपुर द्वारा पूज्य आचार्य महाश्रमण को विभिन्न धर्मगुरुओं की गरिमापूर्ण उपस्थिति में **'शांतिदूत'** अलंकरण समर्पित किया गया। सम्मान समर्पण से पूर्व यूनिवर्सिटी के कुलपति बी. पी. शर्मा ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण की साधना की ऊर्जा के आलोक का अनुभव हम सभी कर रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व हम लोग आचार्यश्री के चरणों में उपस्थित हुए और 'शांतिदूत' सम्मान स्वीकार करने की प्रार्थना की। आचार्यश्री ने कहा--'हम मान-सम्मान से दूर ही रहना चाहते हैं। हमारी इसमें कोई रुचि नहीं है।' किन्तु हमने निवेदन किया कि इस सम्मान से हमारे संस्थान को प्रेरणा मिलेगी और इस सम्मान के द्वारा हम अपने प्रत्येक संकाय, प्रत्येक व्यक्ति और विश्वविद्यालय में अध्ययनरत लगभग ७५०० विद्यार्थियों में नैतिकता के उच्च संस्कारों को निर्मित करने का संकल्प व्यक्त करना चाहते हैं। यह जानकर आचार्यश्री ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। इसकी हमें अत्यन्त प्रसन्नता है। मैं विश्वास दिलाता हूं कि आचार्यश्री को यह सम्मान अर्पित कर हमारा संस्थान अपने संकल्प के प्रति सदैव जागरूक रहेगा। इसके लिए अखिल भारतीय दो कार्यदल गठित किए जाएंगे। पहला प्रबंधन में नैतिकता और दूसरा तकनीकी शिक्षा में मूल्यों की स्थापना का कार्य करेगा।'

पैसिफिक विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भोलाशंकर अग्रवाल, कुलपति बी. पी. शर्मा, रजिस्ट्रार शरद कोठारी, संस्थान के मानद सचिव राहुल अग्रवाल ने जैसे ही यह सम्मान आचार्य महाश्रमण को समर्पित किया शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के जय निनाद से वातावरण गुंजित हो उठा। संस्थान द्वारा सम्मान के प्रतीक रूप में समर्पित स्मृतिचिह्न में अंकित भाषा इस प्रकार है--

''पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एज्युकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी उदयपुर आचार्य महाश्रमण को शांतिदूत के सम्मान से अलंकृत कर समाज में शांति, सौहार्द व सौमनस्य के सद् संस्कारों के उत्तरोत्तर दृढ़ीकरण से देश की चतुर्दिक उन्नति के लिए संकल्पबद्धता व्यक्त करती है।''

इस अवसर पर शांतिदूत अलंकरण के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा--'पैसिफिक युनिवर्सिटी द्वारा मुझे शांतिदूत अलंकरण दिया गया। हालांकि सम्मान-अलंकरण में मेरी व्यक्तिगत रुचि कम अथवा नहीं ज्यों की त्यों रहती है। किन्तु प्रस्ताव आया और सुझाव रहा कि इसे स्वीकार करना चाहिए तो मैंने इसके लिए स्वीकृति प्रदान कर दी। मुझे शांतिदूत कहा गया है, मैं यथार्थ में शांति के लिए यथाशक्ति, यथोचित्य और यथासंभव कार्य करता रहूं। जनता को शान्ति प्रदान करने में योगभूत बन सकूं। मैं पैसिफिक युनिवर्सिटी के प्रति मंगलकामना करता हूं कि वह अच्छा कार्य करती रहे। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लौकिक विद्या के साथ-साथ अलौकिक विद्या (अध्यात्म विद्या) का भी प्रशिक्षण मिले। उनमें अध्यात्म और नैतिकता के संस्कार जागृत हों और वे नैतिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में सामने आ सकें।'

कुटुम्ब नाटिका का मंचन

रात्रि में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अमेच्योर क्रिएटिव थियेटर कोलकाता द्वारा 'कुटुम्ब' नाटिका का मंचन किया गया। सामाजिक विसंगतियों के परिष्कार का संदेश देने वाली और राजेन्द्र भुतोड़िया द्वारा लिखित इस रोचक नाटिका का गरिमापूर्ण मंचन कोलकाता से समागत समाज के ही कलाकारों ने किया। नाटिका की हृदयस्पर्शी और सुन्दर प्रस्तुति ने उपस्थित हजारों दर्शकों को अंत तक बांधे रखा।

उदयपुर प्रवास का चतुर्थ दिन

३० मई। आचार्य महाश्रमण कृषि विश्वविद्यालय से प्रस्थान कर अल्पकालिक प्रवास हेतु जी.बी.एच. अमेरिकन हास्पिटल पधारे। अमेरिका प्रवासी कीर्ति जैन के इस विशाल और अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हास्पिटल परिसर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में प्रबन्ध निदेशक डॉ. देव कोठारी ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। आचार्यश्री का अध्यात्म और स्वास्थ्य विषय पर प्रवचन हुआ। आचार्यश्री ने प्रवचन के मध्य डॉ. देव कोठारी, फतेहलाल पोरवाल एवं इन्दुबाला जैन द्वारा साधु-साध्वियों के लिए चिकित्सा से संबद्ध की जाने वाली सेवाओं का उल्लेख किया।

अमेरिकन हॉस्पिटल से प्रस्थान कर आचार्यश्री महाराणा भोपाल चिकित्सालय होते हुए पंचवटी स्थित लक्ष्मणसिंह कर्णावट के आवास पर पधारे। कर्णावट परिवार पूज्यवर के इस अनुग्रह से प्रफुल्लित था। आर. के. मॉल में आयोजित रात्रिकालीन कार्यक्रम में कर्णावट परिवार की महिलाओं ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। स्व. भंवरलाल कर्णावट फाउण्डेशन की ओर से सन २००६ और २०१० का बोधि सम्मान क्रमशः तेरापंथ प्रवक्ता डॉ. महावीर राज गेलड़ा और कवि अब्दुल जब्बार को दिया गया। डॉ. महेन्द्र कर्णावट एवं लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने आचार्यश्री का स्वागत करते हुए सम्मान के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। दोनों सम्मान प्राप्तकर्ताओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्बोधन में स्व. भंवरलाल कर्णावट की स्वाभिमानता और उनके अनुज अणुव्रत महारथी स्व. देवेन्द्रकुमार कर्णावट की सेवाओं का उल्लेख किया। आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा--'उदयपुर के चतुर्दिवसीय प्रवास में एक दिन हमने लक्ष्मणजी के मकान में रहना स्वीकार किया। लक्ष्मणजी सेवाभावी श्रावक हैं। हमारी मेवाड़ यात्रा में मार्ग से संबद्ध सुन्दर और सुव्यवस्थित सुझाव देते हैं।

उदयपुर से प्रस्थान

३१ मई। प्रातः पंचवटी से १४ किमी. का विहार कर आचार्यश्री थूर पधारे। मार्ग में अनेक घरों का स्पर्श करते हुए आचार्यश्री साधक अमिताभ के निवास स्थल पर पधारे। थूर में आचार्यश्री का प्रवास राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में रहा। आचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में विनय को आतमगत करने की प्रेरणा प्रदान की तथा विश्व तंबाकू निषेध दिवस के संदर्भ में उपस्थित लोगों को नशे से दूर रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए तम्बाकू सेवन न करने का संकल्प करवाया। स्थानीय सरपंच रमेश पटेल ने संपूर्ण गांव की ओर से आचार्यश्री और उनकी धवल वाहिनी का भावभीना स्वागत किया।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अवसर पर अनेक विशिष्ट व्यक्तियों के शुभकामना संदेश प्राप्त हो रहे हैं। इसी शृंखला में कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी का पत्र प्राप्त हुआ। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं--''आचार्यश्री महाश्रमण दया के मूर्तरूप हैं। वे समाज सुधार व नैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान दे रहे हैं। आचार्यजी सभी धर्मों का आदर तथा साम्प्रदायिक सद्भाव की हिमायत करते रहे हैं। उनका पावन संदेश हमारे समाज के लिए बहुत लाभदायक व प्रभावी है। उनकी शिक्षाओं से हम सबको सदैव प्रेरणा व दिशादर्शन प्राप्त होता रहे।''

प्रदीप जैन की आचार्य महाश्रमण से वार्ता

उदयपुर, 2 जून। केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री प्रदीप जैन ने कडिया ग्राम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण से भेंट की। साथ में उनकी धर्मपत्नी भी थीं। प्रदीप जैन ने कहा कि आचार्यश्री अपनी धवल सेना सहित पदयात्राओं द्वारा मेवाड़ के गांव-दर-गांव विहार करते हुए ग्रामीणजनों में नशामुक्ति, अहिंसा धर्म तथा जीवन शुद्धि के लिए आपकी देन नये भारत का निर्माण कर रही है। इससे ग्रामीणजनों के विकास, उत्थान और जीवनोन्नति का सरकार का जो लक्ष्य है वह भी पूरा होता जा रहा है। आपके इस अभियान में सरकार भी पूर्ण रूप से अपना सक्रिय सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहेगी। इस भेंट के दौरान आचार्यश्री और मंत्रीजी के बीच जो बातचीत हुई उसके मुख्य अंश इस प्रकार हैं--

आचार्यश्री : राजनीति का स्तर कैसा है?

मंत्री : लोगों के लिए राजनीति एक धंधा बन गई है। आचार्य चाणक्य के समय में राजनीति एक साधना थी।

आचार्यश्री : अच्छा हो, इस क्षेत्र में भी लोग त्याग और सेवा का मार्ग अपनाएं।

मंत्री : 95 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति अवैधानिक कार्य करते हैं। लगता है, सारे आदर्श सपना बन गए हैं।

आचार्यश्री : राजनीति मूल्यपरक रहे इसके लिए प्रयास करना होगा। यथासंभव हम भी आम लोगों को नशा आदि से दूर रहने, हिंसक वारदातें नहीं करने, कन्या भ्रूण-हत्या को पाप समझने, ईमानदारी का पालन करने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने की प्रेरणा देते हैं।

मंत्री : पिछले दिनों मैंने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह से भेंट कर जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा मिलने संबंधी चर्चा की थी। मुझे उम्मीद है इस संबंध में शीघ्र ही वे अपना सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे।

उल्लेखनीय है कि प्रदीप जैन न केवल विचारों से अपितु अपने जीवन व्यवहार में भी जैनत्व से अधिक प्रेरित एवं प्रभावित हैं। यही कारण है कि जब उन्होंने होटल ट्राइडेंट में एक साथ शाकाहारी एवं मांसाहारी भोजन परोसते हुए देखा तो वे बिना भोजन किए ही वहां से चल दिए।

प्रदीप जैन की आचार्यश्री से इस भेंटवार्ता के दौरान शांतिलाल सिंघवी, राजकुमार फत्तावत, विनोद मणोत, दीपक सिंघवी तथा दिल्ली के शीतल बरड़िया भी उपस्थित थे।

अहिंसा यात्रा का लक्ष्य
अनुकम्पा की चेतना का विकास

- साम्प्रदायिक सौमनस्य
- भ्रूणहत्या निरोध ● नशामुक्ति
- ईमानदारी का प्रयास

-- आचार्य महाश्रमण

कांकरोली अस्पताल में डायलिसिस सेंटर

कांकरोली, 11 मई। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अवसर पर कांकरोली स्थित राजकीय अस्पताल में जनसेवार्थ एक डायलिसिस सेंटर की स्थापना धानीन निवासी मुंबई प्रवासी सोहनलाल चोरड़िया के आर्थिक सौजन्य से की गयी। इस सेंटर का उद्घाटन आचार्यश्री के पावन सान्निध्य में राजसमंद के जिला कलेक्टर प्रीतम वी. यशवंत द्वारा किया गया।

इस अवसर पर समणी स्थितप्रज्ञा, चैनरूप चिण्डालिया, ख्यालीलाल तातेड़, प्रकाशचन्द बैद, भंवरलाल सिंघी, विजय सिंह चौरड़िया सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सेंटर का उद्घाटन करते हुए जिला कलेक्टर प्रीतम यशवन्त ने कहा--इस डायलिसिस सेंटर की स्थापना से स्थानीय लोगों को चिकित्सा सुविधा में काफी मदद मिलेगी। छोटे-छोटे गांवों के अस्पतालों में अगर इस तरह की सुविधा मिले तो स्थानीय लोगों को चिकित्सा के लिए दूर शहरों में जाने की आवश्यकता नहीं होगी और वे अनावश्यक खर्च से भी बच सकेंगे।

अणुव्रत समिति द्वारा राज्यपाल को ज्ञापन

कानपुर, 27 मई। अणुव्रत समिति कानपुर के अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल को गो-हत्या निषेध संबंधी ज्ञापन दिया, जो इस प्रकार है--

परम श्रद्धेय महामहिम राज्यपालजी
राजभवन, लखनऊ (उ.प्र.)

उत्तर प्रदेश का जैन समाज ही नहीं अपितु पूरा अहिंसक समाज बहुत ही आहत है। जिस देश में दूध, दही, घी की नदियां बहती थी उसी देश में कल-कारखानों में जानवरों के खून की नदियां बहाने का कुचक्र प्रदेश में चल रहा है। इस पुण्य धरा से भगवान महावीर ने जीयो और जीने दो का संदेश विश्व को दिया। भगवान राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध ने सारे विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाया। इसी वंदनीय व पुण्य धरा उत्तर प्रदेश में 15 पशु वधशालाओं के लाइसेंस जारी किये गये हैं, जहां प्रतिदिन 150000 (एक लाख पचास हजार) पशु काटे जायेंगे एवं उनका गोश्त विदेशों को निर्यात होगा। सभी जीवों को जीने का अधिकार है। इसी भावना से सरकार मानवीय परिचय देते हुए लाइसेंस तत्काल निरस्त किये जायें।

मांस निर्यात भारत की ऋषि और कृषि की परंपरा के माथे पर कलंक है। मांस निर्यात कर कोष को बढ़ावा देना असमय में ही देश का पतन निश्चित है। मांसाहार, हत्या, बर्बरता, भ्रष्टाचार, हिंसा कत्ल के घने अंधकार में अहिंसा, करुणा, सत्य व साधना के दीप जलाने भगवान महावीर, राम, कृष्ण को पुनः अवतार लेना पड़ेगा। पशुओं का खून बहाकर मांस निर्यात करने वाले देश का अस्तित्व नहीं बच सकता। भारत की संपन्नता पशुधन के संवर्द्धन और जीवन मूल्यों के संरक्षण में है।

इस प्रकार हमारे देश में पशुधन प्रायः समाप्त हो जायेगा। अहिंसक जैन समाज ने हस्ताक्षर अभियान चलाया है, जिसे प्रतिनिधिमंडल आपको सादर भेंट कर रहा है। करोड़ों-करोड़ों मूक पशुओं को जीने का अधिकार सुरक्षित करावें।

कृपया आप अहिंसक समाज की भावनाओं को देखते हुए अपने अमूल्य विचारों से सरकार को अवगत करायेंगे, ताकि उक्त लाइसेंस निरस्त हो सके।

निवेदक
1. टीकमचंद सेठिया 2. मनिकान्त जैन
3. पद्म कुमार जैन 4. दलपत चंद जैन
5. सुबोध जैन

अणुव्रत समिति को प्रदेश स्तरीय सम्मान

उदयपुर, 13 मई। अणुव्रत समिति उदयपुर को जागरूकता एवं संपादित कार्यों के लिए राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा गांधी सेवा सदन, राजसमंद के द्विवार्षिक अधिवेशन के अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के सान्निध्य में प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ अणुव्रत समिति के सम्मान से नवाजा गया। समिति के प्रचार मंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि 13 मई 2011 को गांधी सेवा सदन राजसमंद में क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए उदयपुर अणुव्रत समिति को प्रदेश अध्यक्ष सम्पत शामसुखा, मनोहरलाल बापना द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया, डॉ. निर्मल कुणावत, राजेन्द्र सेन, एच.एल. कुणावत, मनमोहनराज सिंघवी, डॉ. शंकरलाल इंटोदिया, डॉ. शोभालाल औदिच्य, जमनालाल दशोरा और सुनील खोखावत ने ग्रहण किया।

● **अणुव्रत आचार संहिता का विमोचन :** अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा आचार्य तुलसी द्वारा मानव कल्याण हेतु अणुव्रत आचार संहिता हेतु दिये गये अणुव्रत के 11 नियमों का लेमिनेटेड फ्रेम बनवाकर उसका विमोचन आचार्य महाश्रमण से गांधी सेवा सदन राजसमंद में करवाया गया। इस अवसर पर गणेश डागलिया, डॉ. निर्मल कुणावत, राजेन्द्र सेन, एच. एल. कुणावत, मनमोहनराज सिंघवी, डॉ. शंकरलाल इंटोदिया, डॉ. शोभालाल औदिच्य, जमनालाल दशोरा और सुनील खोखावत उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति गंगापुर का सम्मान

गंगापुर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के गांधी सेवा सदन राजसमंद प्रवास के अंतर्गत अणुव्रत महासमिति एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति की संयुक्त बैठक अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के सान्निध्य में आयोजित हुई। इस दौरान राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा प्रदेश में कार्य करने वाली 'श्रेष्ठ' अणुव्रत समितियों के सम्मान का भी क्रम रहा। इस परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत समिति गंगापुर भी 'श्रेष्ठ' अणुव्रत समिति के रूप में घोषित की गयी।

अणुव्रत समिति गंगापुर की ओर से संयुक्त मंत्री रमेश हिरण एवं अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र अणुव्रत ग्राम मैलोनी के प्रभारी जगदीश बैरवा उपस्थित थे। उन्हें प्रदेश समिति के अध्यक्ष सम्पत शामसुखा ने 'श्रेष्ठ' अणुव्रत समिति सम्मान पत्र द्वारा सम्मानित किया। समिति के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने बताया कि 8 वर्ष पूर्व भी समिति का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान किया गया था।

अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत प्रचार-प्रसार

सायरा। अणुव्रत समिति सायरा द्वारा मुनि जम्बूकुमार के सान्निध्य में गोष्ठी का आयोजन किया गया। 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि समिति द्वारा अणुव्रत आचार संहिता के 30 बोर्ड बस स्टेन्डों पर लगवाए हैं। साथ ही स्कूलों में विद्यार्थी आचार संहिता के लगभग 110 बोर्ड वितरित किये हैं। अणुव्रत विचार के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से क्षेत्र के 110 स्कूलों में अणुव्रत पत्रिका निःशुल्क भिजवाई जा रही है। पिछले 20 वर्षों से क्षेत्र के 5-6 स्कूलों में अणुव्रत व जीवन विज्ञान की परीक्षाएं प्रभारी राजेन्द्र गोरावड़ के निर्देशन में संपन्न करवायी जा रही हैं।

जैन विश्व भारती लाडनूं में पर्यावरण दिवस

लाडनूं, 5 जून। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अहिंसा भवन, जैन विश्व भारती लाडनूं में मुनि महेन्द्रकुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रारंभ मुनि आदित्यकुमार द्वारा मंगलाचरण से हुआ। संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने पर्यावरण को आज के संदर्भ में परिभाषित करते हुए कहा--महावीर ने 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के सिद्धांत में पर्यावरण की सभी समस्याओं के समाधान की बात बताई गयी है। इस अवसर पर वीणा जैन, पुणे से समागत हेमन्त नाहटा, जैन विश्व भारती के निदेशक राजेन्द्र खटेड़ ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता होने एवं सभी समस्याओं का समाधान संयम और अहिंसा के सिद्धांतों में निहित होने की बात कही। मुनि अजीतकुमार ने गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने पर्यावरण के संदर्भ में अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा--आज पूरा विश्व पर्यावरण से होने वाली क्षति के कारण चिंतित है। यदि इसे समय रहते नहीं रोका गया तो प्रकृति की विनाशलीला जीव-जाति-अस्तित्व को ही लील सकती है जिसका किसी भी भयंकर अणु-युद्ध से भी बदतर परिणाम होगा। आज पर्यावरण क्षरण के बाह्य कारणों पर तो ध्यान दिया जा रहा है, पर उसमें मुख्य रूप से जिम्मेदार है मनुष्य के भीतर विद्यमान वे वृत्तियां जिनमें असंयम एवं संवेगों का अतिरेक मुख्य है। जब तक इनका परिशोधन नहीं किया जाएगा तब तक समस्या का समाधान असंभव है। केवल एक दिन के समारोह तक हमें इस अभियान को सीमित नहीं रखना है, वरन् पूरे वर्ष तक व्यक्ति-व्यक्ति को जागृत कर उन प्रतिज्ञाओं का पालन करवाना है जो पर्यावरण को बचाने के लिए आवश्यक है।

इस अवसर पर पर्यावरण जागरूकता के लिए वनस्पति संरक्षण, जल संरक्षण, विद्युत संरक्षण एवं स्वच्छता कार्यक्रम से संबंधित जैन विश्व भारती द्वारा कुछ विशेष निर्देश जारी किये गये। कार्यक्रम का संयोजन मुनि अभिजित कुमार ने किया।

दहेज प्रथा ने दिया कन्या भ्रूणहत्या को जन्म

जीन्द, 30 मई। अणुव्रत जीवन विज्ञान अभियान के तहत मुनि विजयराज ने जाट कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा--दहेज प्रथा ने ही कन्या भ्रूणहत्या जैसी घृणित बुराई को जन्म दिया है। महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए मुनिश्री ने कहा--रूढ़िवाद, अंधविश्वास, दहेज प्रथा आदि कुप्रथाओं का अंत शिक्षा के द्वारा ही संभव है। एक सुशिक्षित सुसंस्कारी कुशल गृहिणी अपने परिवार, समाज व राष्ट्र का स्वस्थ निर्माण करने में सक्षम हो सकती है। नारी समाज का विकास शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है। अतः शिक्षा को सर्वांगीण बनाना अत्यावश्यक है। मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है। अनुशासन एवं विनम्रता से सद्गुणों का विकास संभव है। मुनिश्री ने वर्तमान की ज्वलंत समस्या व्यसन एवं फैशन के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को इन व्यसनों से दूर रहने का संकल्प करवाया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के 12 स्कूलों के 830 छात्र-छात्राओं एवं 186 शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लेकर व्यसनमुक्ति का संकल्प ग्रहण किया।

जी.एल. नाहर द्वारा संगठन यात्रा

जयपुर, 7 मई। अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष द्वारा 4, 5 व 6 मई 2011 को नागपुर की संगठन यात्रा की गयी। यात्रा के दौरान अणुव्रत के विभिन्न आयामों की क्रियान्विति पर गुलाबचंद छाजेड़, प्रेमलता एवं अरूणा नखत के साथ विचार-विमर्श किया गया। विशेष रूप से कन्या भ्रूणहत्या, नशामुक्ति एवं पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की गयी।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह में महिलाओं की विशिष्ट भागीदारी के संदर्भ में विचार गोष्ठी रखी गयी। जिसमें विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। अणुव्रत प्रचार-प्रसार में स्थानीय महिला मंडल की सक्रियता एवं गुलाबचंद छाजेड़ का श्रम सराहनीय है। महिला मंडल की उपस्थित बहनों ने अन्य संघीय संस्थाओं एवं जैन-अजैन संस्थाओं के साथ मिलजुलकर एवं गुलाबचंद छाजेड़ के सक्रिय श्रम एवं सहयोग से आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह को हर दृष्टि से स्मरणीय बनाने की भावना व्यक्त की।

जी.एल. नाहर ने युवक परिषद के अध्यक्ष महेन्द्र दूगड़ व राजेन्द्र नाहर से बातचीत कर अणुव्रत समिति के पुनर्गठन करने हेतु गुलाबचंद छाजेड़ से अपेक्षित कार्यवाही करने का अनुरोध किया। उपस्थित महिलाओं एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने केन्द्रीय अधिकारियों से विशिष्ट मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्ति की बात कही। निर्धारित लक्ष्यों को मद्देनजर रखते हुए जी.एल. नाहर ने राजसमंद में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण से विनम्रः निवेदन किया।

उल्लेखनीय है कि नागपुर में नवनिर्मित तेरापंथ भवन का नाम 'अणुव्रत भवन' रखा गया है। यह भवन नागपुर के अत्यन्त विशिष्ट क्षेत्र में स्थापित है। यहां अणुव्रत आंदोलन के विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

जयपुर में पर्यावरण शुद्धि दिवस

जयपुर, 5 जून। तेयुप जयपुर द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस को 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुविभा जयपुर परिसर के बाहर पौधारोपण के साथ हुआ। अविनाश नाहर, अमृत सांसद पन्नालाल पुगलिया, अशोक बैद, शान्तिलाल हीरावत, प्रदीप डोसी, हिम्मत सिंह छाजेड़, मनोज नाहटा, सुबोध पुगलिया, हर्ष छाजेड़ व परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया, हितेष भांडिया सहित अनेकों सदस्यों ने इसमें भाग लिया।

पौधारोपण के पश्चात इस दिवस को ध्यान में रखते हुए समूह चर्चा का भी क्रम रहा। उपस्थित सदस्यों द्वारा खुली समूह चर्चा में पर्यावरण संरक्षण के बिन्दुओं को रेखांकित करते हुए विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। सभी उपस्थित सदस्यों ने एक स्वर में सहमति जतायी कि अगर हम अभी से पर्यावरण शुद्धि के प्रति जागरूक नहीं होंगे तो भविष्य में इसके बहुत घातक दुष्परिणाम भुगतने होंगे। सभी ने प्रकृति से छेड़छाड़ एवं वनों की अंधाधुंध कटाई को पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण माना।

इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत स्तर के साथ-साथ संगठनात्मक स्तर पर भी लोगों को पर्यावरण शुद्धि के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया गया। आभार व्यक्त हितेष भांडिया ने किया।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव समारोह

कोलकाता, 15 मई। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में पूर्वांचल कोलकाता सभा द्वारा आचार्य महाश्रमण के 50वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव समारोह का भव्य आयोजन किया गया। लेकटाउन बांगुड़ एवेन्यु के मध्यवर्ती तुलसीधाम मधुवन अपार्टमेन्ट के प्रांगण समारोह का शुभारंभ आचार्यश्री की अभिवंदना के साथ हुआ। स्थानीय कला संगम के संगायक अशोक चिंडालिया और उनकी टीम ने अमृत महोत्सव गीत का संगान किया। राजेन्द्र नाहटा ने अमृत पुरुष के अमृत संदेश का वाचन किया। लक्ष्मी बरमेचा ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के संदेश का वाचन किया।

साध्वी कनकश्री ने आचार्य महाश्रमण को एक ऊर्जावान युवा धर्मनायक बताते हुए कहा कि 21वीं सदी और विश्व मानव आपके आत्म तेज और अध्यात्म के आलोक से आलोकित होते रहें।

मुख्य अतिथि राजस्थान पत्रिका कोलकाता के संपादक राजीव हर्ष ने कहा--धर्मसंघ के दो युगपुरुषों ने अपने कर्तृत्व से लोक जीवन को प्रभावित किया। आचार्य तुलसी का अणुव्रत और आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा ये दोनों संपूर्ण मानवीय चेतना को रूपांतरित करने वाले अमर अवदान हैं।

पत्रकार व प्रखर वक्ता प्रकाश चिण्डालिया ने कहा--आचार्य महाश्रमण भारत की ऋषि परम्परा के उज्जवल नक्षत्र हैं। आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा और नशामुक्ति अभियान के तहत जनता को जगा रहे हैं।

कार्यक्रम में नन्हीं-मुन्नी बालिकाओं ने गीत-नृत्य की शानदार झांकी प्रस्तुत की। पूर्वांचल सभा की ओर से भंवर सिंघी व प्रकाश चिण्डालिया ने बच्चों को पुरस्कृत किया। आचार्य महाश्रमण के 50वें जन्माभिषेक पर 50 युवतियों ने वर्धापना गीत की कलात्मक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की सफलता में साध्वी मधुलता का अथक श्रम और मार्गदर्शन तथा सुषमा बैंगानी का सराहनीय सहयोग रहा। इस अवसर पर भंवरलाल बैद, राजकरन सिरोहिया, रतन दूगड़, भंवरलाल सिंघी, जतन देवी बैंगानी, तारा सुराणा, बनेचंद मालू, करनसिंह नाहटा, जंवरीमल नाहटा, विमल बैद, भूपेन्द्र दूगड़, प्रकाश मालू, भूपेन्द्र शामसुखा इत्यादि ने आचार्यश्री की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संचालन संजय सिंघी ने किया एवं आभार ज्ञापन निर्मल दूगड़ ने किया।

नवगठित प्रदेश समिति की प्रथम बैठक

पटना, 11 जून। नवगठित बिहार प्रदेश अणुव्रत समिति की प्रथम बैठक एक्जीबिशन रोड नारायण प्लाजा के ओसवाल पंचायत भवन में आयोजित हुई। बिहार संस्कृति शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन एवं प्रदेश समिति के अध्यक्ष सिद्धेश्वर प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित बैठक का संयोजन 'अणुव्रत सेवी' तनसुखलाल बैद ने किया। मंत्री साधुशरण सिंह 'सुमन' ने स्वागत भाषण में प्रांतीय ईकाई की इस बैठक के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला।

'अणुव्रत सेवी' सिद्धेश्वर प्रसाद ने करणीय कार्यों पर प्रकाश डाला। बैठक में बिहार के प्रत्येक जिले में अणुव्रत समिति के गठन हेतु जिला संयोजकों का चयन, अणुव्रत पाक्षिक की सदस्यता में विस्तार, अणुव्रत संस्कार शोध केन्द्र खोलने तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ रचनात्मक संघर्ष जैसे बिन्दुओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। सिद्धेश्वर प्रसाद ने कार्यकर्ता संख्या विस्तार का भी सुझाव रखा। बैठक में अणुव्रत संस्कार शोध केन्द्र के विचार पर विशेषज्ञ राय देने हेतु प्रदेश उपाध्यक्ष गुलाबचंद धाड़ेवा के संयोजन में एक उपसमिति बनायी गयी। इसमें डॉ. ब्रह्मचारी सुरेन्द्र, डॉ. शान्ति जैन, डॉ. अंजेश कुमार को सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया।

कृति

अणुव्रत से सम्बद्ध ऐतिहासिक दस्तावेज

अशोक सहजानन्द

अणुव्रत प्रवक्ता एवं अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट एक प्रबुद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं। ऐसे कार्यकर्ता बहुत कम होते हैं, जिनमें चिंतन-मनन, वक्तृत्व एवं लेखन की क्षमताएं एक साथ हों। प्रस्तुत समीक्ष्य कृति **'स्मृतियों के वातायन'** के माध्यम से डॉ. कर्णावट ने अपनी यात्राओं का सजीव एवं मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है। इन यात्राओं में उन्होंने आत्मीयता एवं प्रकृति का भरपूर आनन्द लिया है।

पुस्तक के अनुक्रम से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने लगभग पूरे भारत की यात्रा का आनन्द लिया है। प्रस्तुत कृति में अणुव्रत कार्यशालाओं, अणुव्रत लेखक मंच, अहिंसा समवाय इत्यादि के माध्यम से आज की बढ़ती समस्याओं पर बेवाक विवेचन है।

पुस्तक में स्थान-स्थान पर महान् व्यक्तियों के प्रेरक वाक्यांशों को मणिदीपों के समान सजाना एक उच्च कलाकारिता तो है ही पर साथ ही साथ गहन स्वाध्याय का भी परिचायक है।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के शब्दों (30 अक्टूबर 1988) में--'डॉ. महेन्द्र सहज रूप में देवेन्द्रजी का उत्तराधिकारी बनता चला जा रहा है। इसे देवेन्द्रजी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि माननी चाहिए। वह बहुत व्यवस्थित, चिंतनशील, कल्पनाशील और निर्णायक बुद्धिवाला व्यक्ति है।''

आचार्य महाश्रमण के शब्दों में--''उस साहित्य का महत्त्व होता है, जिसमें सच्चाइयां प्रकट होती हैं और जो दूसरों का पथ दर्शन करने वाला होता है।

डॉ. महेन्द्र अणुव्रत से जुड़े हुए एक विशिष्ट कार्यकर्ता हैं, एक प्रबुद्ध व्यक्ति हैं। उनकी कृति 'स्मृतियों के वातायन' पाठकों का पथदर्शन और ज्ञानवृद्धि करने वाली सिद्ध हो। शुभाशंसा।''

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के शब्दों में--''आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ और आचार्य श्री महाश्रमण के प्रेरक मार्गदर्शन और मंगल आशीर्वाद से डॉ. महेन्द्र कर्णावट अणुव्रत आंदोलन एवं अणुव्रत महासमिति के अभिन्न अंग बन गए। वे अणुव्रत के एकनिष्ठ कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहे हैं।''

राजेन्द्र शंकर भट्ट के शब्दों में--''अणुव्रत पाक्षिक में डॉ. कर्णावट के यात्रा विवरण आते हैं, उन्हें पढ़ने पर लगता है कि मैं भी आपके साथ हो गया हूं। स्थानीय व्यक्तित्व और परिस्थितियां साथ-साथ उद्भासित होती रहती हैं। यह भी लगता है कि आप कितना व्यक्तिगत प्रयत्न अपने पद को सार्थक करने के लिए कर रहे हैं। अणुव्रत का संदेश जितना फैलेगा उतना ही सद्चरित्र का विकास होगा।''

अपनी कृति को डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अपने पिताश्री के सपनों को समर्पित करते हुए उनकी मूलभावना उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने की है। और यह ही किसी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होती है। डॉ. कर्णावट के शब्दों में--

''अणुव्रत के जमीनी कार्यकर्ता अणुव्रत महारथी देवेन्द्र कुमार कर्णावट याने मेरे पिताश्री दिवास्वप्नदर्शी थे। वे सपने संजोते और उन्हें आकार देने में प्राणपण से जुट जाते। वे कहते थे--बड़ी कल्पनाएं करो, ऊंचे सपने देखो, तभी तो कुछ को धरती पर उतार पाओगे। दुबला-पतला शरीर पर आकाशीय कल्पनाएं। पिताश्री का यही स्वभाव उन्हें ऊंचाइयों पर ले गया। हमारे लिए भी उन्होंने बहुत से सपने बुने। काका के उम्मीदों के सपनों को समर्पित है मेरी यह कृति--'स्मृतियों के वातायन'।

वस्तुतः 'संस्मरणों के वातायन' अणुव्रत से सम्बद्ध ऐतिहासिक दस्तावेज की एक कड़ी है। इसके अध्ययन से

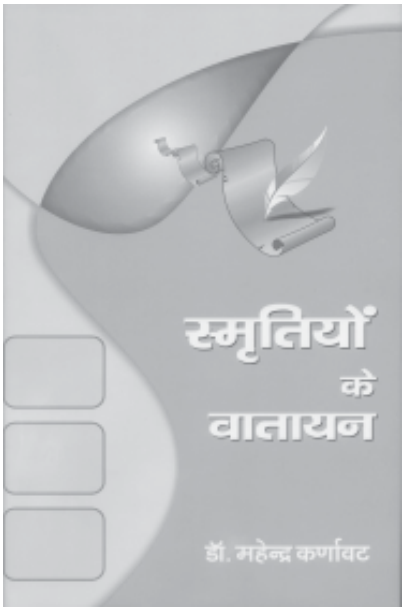

कृति	:	स्मृतियों के वातायन
लेखक	:	डॉ. महेन्द्र कर्णावट
मूल्य	:	200 रुपए पृष्ठ : 400
प्रकाशक	:	अणुव्रत महासमिति अणुव्रत भवन, नई दिल्ली-2

निश्चित रूप से पाठकों को जहां प्रामाणिक जानकारियां मिलेंगी, वहीं आज के युवा वर्ग को सफल मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा। पुस्तक की भाषा सरल एवं पठनीय है तथा संपादन एवं प्रूफ-रीडिंग पर विशेष ध्यान देकर पुस्तक के स्वरूप को निखारा है। डॉ. कर्णावट ने चित्रों के माध्यम से तथ्यों को समझाने का सुयोग्य कार्य किया है। इस कृति के लेखन के लिए डॉ. महेन्द्र कर्णावट एवं इसके प्रकाशक 'अणुव्रत महासमिति' अभिवंदना के पात्र हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि साहित्यिक जगत् में भी यह कृति अपना एक स्थान बनायेगी और 'यात्रा-साहित्य' में श्री राहुल सांकृत्यायन की परम्परा को आगे बढ़ाने वाली सिद्ध होगी।

संपादक : 'सहज-आनन्द' (त्रैमासिक)
239, दरीबाकलां, दिल्ली-110006